ग़ालिब

मुहम्मद मुजीब

भारतीय साहित्य के निर्माता

गालिब

भारतीय साहित्य के निर्माता

ग़ालिब

लेखक
मुहम्मद मुजीब

लिप्यन्तरकार
रमेश गौड़

साहित्य अकादेमी

Ghalib : Davanagari transliteration by Ramesh Gaur of the monograph in Urdu by M. Mujeeb, Sahitya Akademi, New Delhi (2002), Rs. 25.

प्रथम संस्करण : 1975
द्वितीय संस्करण : 1981
तृतीय संस्करण : 1981
चतुर्थ संस्करण : 1982
पंचम संस्करण : 1991
पुनर्मुद्रण : 1995, 1997, 1998
पुनर्मुद्रण : 1999, 2000, 2002

साहित्य अकादेमी

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35, फ़ीरोज़शाह मार्ग, नयी दिल्ली 110 001
विक्रय विभाग : स्वाति, मन्दिर मार्ग, नयी दिल्ली 110 001

क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुम्बई मराठी ग्रन्थ संग्रहालय मार्ग, दादर, मुम्बई 400 014
जीवनतारा बिल्डिंग, चौथी मंज़िल, 23 ए/44 एक्स,
डायमंड हार्बर रोड, कलकत्ता 700 053
सीआईटी कैम्पस, टी.टी.टी.आई. पोस्ट, तरामणि, चेन्नई 600113
सेंट्रल कॉलेज परिसर, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर मार्ग, बंगलौर 560 001

ISBN 81-260-1407-5

मूल्य : पच्चीस रुपये

मुद्रक : नागरी प्रिण्टर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली 110032

क्रम

: १ :

ग़ालिब का ज़माना

मिर्ज़ा असद उल्लाह ख़ाँ 'ग़ालिब' २७ दिसंबर १७९७ को पैदा हुए।

सितंबर, १७९६ में एक फ्रांसीसी—पर्रों—जो अपनी क़िस्मत आज़माने हिन्दुस्तान आया था, दौलत राव सिंधिया की 'शाही फ़ौज' का सिपहसालार बना दिया गया। इस हैसियत से वह हिन्दुस्तान का गवर्नर भी था। उसने देहली का मुहासरा करके[1] उसे फ़तह[2] कर लिया, और अपने एक कमांडर—ले मारशाँ—को शहर का गवर्नर और शाह आलम का मुहाफ़िज[3] मुक़र्रर[4] किया। उसके बाद उसने आगरा पर क़ब्ज़ा किया। अब शुमाली[5] हिन्दुस्तान में उसके मुक़ाबले का कोई नहीं था, और उसकी हुकूमत एक इलाक़े पर थी जिसकी सालाना माल-गुज़ारी[6] दस लाख पाउंड से ज्यादा थी। वह अलीगढ़ के क़रीब एक महल में शाहाना[7] शानो-शौकत[8] से रहता था। यहीं से वह राजाओं और नवाबों के नाम अहकामात[9] जारी करता और बग़ैर किसी मदाख़लत[10] के चंबल से सतलुज तक अपना हुक्म चलाता था।

१५ सितंबर, १८०३ ई० को जनरल लेक सिंधिया के एक सरदार बोर्गी ई को शिकस्त[11] देकर फ़ातेहाना[12] अंदाज़ से देहली में दाख़िल हुआ। बोर्गी ई का कुछ अर्से तक शहर पर कब्ज़ा रह चुका था और उसने इसे अंग्रेजों के लिए खाली करने से पहले बहुत एहतेमाम[13] से लूटा था। जनरल लेक शहंशाह की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उसे बड़े-बड़े ख़िताब[14] दिए गए और शाह आलम और उसके जा-नशीन[15] ईस्ट इंडिया कंपनी के वज़ीफ़ा-ख़्वार[16] हो गए।

---

१. घेर कर २. जीत ३. रक्षक ४. नियुक्त ५. उत्तरी ६. भूमि-कर ७. राजसी ८. ठाट-बाट ९. आदेश १०. रोक-टोक, हस्तक्षेप ११. पराजय १२. विजयी, विजेता १३. आयोजन १४. उपाधियाँ, अलंकरण १५. उत्तराधिकारी १६. वज़ीफ़ा पाने वाले।

अट्ठारहवीं सदी का दूसरा हिस्सा वह ज़माना था जब यूरोप से सिपाही और ताजिर[1] हिन्दुस्तान में अपनी क़िस्मत आज़माने आए और उन्होंने खूब हंग मे किए। इसके मुक़ाबले में वस्त[2] एशिया से मौक़े और मआश[3] की तलाश में आने वालों की तादाद कम थी मगर थोड़े-बहुत आते ही रहे। इन्हीं में से एक मिर्ज़ा क़ोक़ान बेग, मुहम्मद शाही दौर के आख़िर में समरकंद से आए और लाहौर में मुईन-उल-मुल्क के यहाँ मुलाज़िम[4] हुए। उनके बारे में हमें बहुत कम मालूम है। उनके दो लड़के थे, मिर्ज़ा ग़ालिब के वालिद[5] अब्दुल्लाह् बेग और नस्र उल्लाह बेग। अब्दुल्लाह् बेग को सिपगहरी[6] के पेशे में कोई ख़ास कामयाबी नहीं हुई, पहले वह आसिफ़ उद्दौला की फ़ौज में मुलाज़िम हुए, फिर हैदराबाद में और फिर अलवर के राजा बख़्तावर सिंह के यहाँ। बेशतर[7] वक़्त उन्होंने 'ख़ाना दामाद'[8] की हैसियत से गुज़ारा। सन् १८०२ ई० में वह एक लड़ाई में काम आए, जब ग़ालिब को उम्र पाँच साल की थी। उनके सबसे क़रीबी[9] अज़ीज़[10], लोहारू के नवाब, भी तुर्किस्तान से आए हुए ख़ानदान के थे और उनके जद्दे-आला[11] भी उसी ज़माने में हिन्दुस्तान आए थे जबकि मिर्ज़ा क़ोक़ान बेग।

ऐसे हालात, जबकि निज़ामे-ज़िंदगी[12] के क़ायम रहने का ऐतबार[13] न हो और निराज[14] और तसद्दुद[15] का दौर-दौरः हो, जब मालूम होता हो कि सब कुछ चंद[16] जाँबाज़ों[17] के हाथ में है, समाज पर अपना असर डालते हैं और मुस्तक़िल[18] मायूसी[19] की फ़िज़ा[20] पैदा कर देते हैं। वैसे भी हस्सास[21] तबीअतें खुशी से ज्यादा दर्द और ग़म की तरफ़ माइल[22] रहती हैं। ग़ालिब की ज़िन्दगी का पसे-मंज़र[23] मुग़ल सल्तनत का ज़वाल[24], देहाती सरदारों का उभरना और इक़्तिदार[25] हासिल करने के लिए उनके मुसलसल[26] मुक़ाबिले हैं मगर इन्हें कुछ ख़ास अहमियत[27] नहीं दी जा सकती। हिन्दुस्तान में सियासी[28] ज़िन्दगी का दायरा वसीअ[29] नहीं था, नमक-हलाली की क़द्र की जाती थी, लेकिन सियासी वफ़ादारी को आम तौर पर एक अख़लाक़ी[30] उसूल[31] नहीं माना जाता था। रिआया[32] के ख़ैर-ख़्वाह[33] हाकिम[34] अम्न[35] और इत्मीनान[36] क़ायम रखने की अपने बस भर कोशिश करते थे, मगर देहाती आबादी में ऐसे अनासिर[37] थे जो मौक़ा पाते ही रहज़नी[38] शुरू कर देते। हम अगर अंदाज़ा करना चाहें कि शुमाली[39] हिन्दुस्तान की मुश्तरिक[40] शहरी

---

१. व्यापारी २. मध्य ३. जीविका ४. नौकर ५. पिता ६. सिपाहीगीरी ७. अधिकांश ८. घरजवाँई ९. निकट के १०. प्रिय व्यक्ति ११. पूर्वज १२. जीवन व्यवस्था १३. विश्वास १४. व्यवस्था १५. हिंसा १६. कुछ १७ जान पर खेले जाने वाले, लड़ाकू १८. स्थायी १९. निराशा २०. वातावरण २१. संवेदनशील २२. प्रवृत्त २३. पृष्ठभूमि २४. पतन २५. सत्ताधिकार, प्रभुत्व २६. निरंतर २७. महत्त्व २८. राजनैतिक २९. विस्तृत ३०. नैतिक ३१. सिद्धांत ३२. प्रजा ३३. शुभचिंतक ३४. अधिकारी ३५. शांति ३६. संतोष, विश्वास ३७. तत्त्व ३८. डाका डालना ३९. उत्तरी ४०. मिली-जुली, साझे की।

तहज़ीब[1] और उस अदब[2] पर जो उस तहज़ीब का तर्जुमान[3] था, क्या-क्या असरात[4] पड़े, तो हम देखेंगे कि उसकी तशकील[5] में बर्तानवी[6] तसल्लुत[7] से पहले की बदनज़्मी[8] से ज़्यादा दख़्ल[9] उन आदतों और उन तसव्वुरात[10] को था जो सदियों से उस तहज़ीब को एक ख़ास शक्ल[11] दे रहे थे। उस मुश्तरिक शहरी तहज़ीब को शहरी होने और शहरी रहने की ज़िद थी। उसके नज़दीक शहर की वही हैसियत थी जो सहरा[12] में नख़लिस्तान[13] की, शहर की फ़सील[14] गोया[15] तहज़ीब को उस बरबरियत[16] से बचाती थी जो उसे चारों तरफ़ से घेरे हुए थी। ज़िन्दगी सिर्फ़ शहर में मुमकिन[17] थी, और जितना बड़ा शहर उतनी ही मुकम्मल[18] ज़िन्दगी। यह हो सकता था कि इश्क और दीवानगी में कोई शहर से बाहर निकल जाए, क़ुदरत[19] से क़रीब होने के शौक़ में शायद ही कोई ऐसा करता, इसलिए कि यह मानी हुई बात थी कि क़ुदरत की तकमील[20] शहर में होती है और शहर के बाहर क़ुदरत की कोई जानी-पहचानी शक्ल नज़र नहीं आती। शहर में बाग़ हो सकते थे और फूलों के हुजूम,[21] सर्व[22] की क़तारों के दरमियान[23] ख़िरामे-नाज़[24] के लिए रविशें,[25] पत्तियों और पंखुड़ियों पर मोतियों सी शबनम[26] की बूँदें, यहाँ बादे-सबा[27] चल सकती थी, बुलबुलें गुलाबों को अपने नग़में[28] सुना सकती थीं, क़फ़स[29] के गिरफ़्तार आज़ादी से लुत्फ़[30] उठाते हुए परिंदों पर रश्क[31] कर सकते थे, आशियानों[32] पर बिजलियाँ गिर सकती थीं। बे-शक शाइर का तसव्वुर[33] तशबीहों[34] और इस्तआरों[35] की तलाश में शहर से बाहर जाने पर मजबूर था, जिनकी मिसाल[36] क़ाफ़िले और कारवाँ और मंज़िलें, तूफ़ानों से दिलेराना मुक़ाबिले, दश्त[37], सहरा, समंदर और साहिल[38] थे। लेकिन इस्तआरों की इफ़रात[39] भी शहर ही के अंदर थी, मयख़ाना, साक़ी, शराब, ज़ाहिद,[40] वाइज़,[41] कूच-ए-यार,[42] दरबान, दीवार, सहारा लेकर बैठने या सर फोड़ने के लिए, वह बाम[43] जिस पर माशूक़ इत्तफ़ाक़[44] से या जल्वः-गरी[45] के इरादे से नमूदार[46] हो सकता था, वह बाज़ार जहाँ आशिक़ रुस्वाई[47] की तलाश में जा सकता था या जहाँ दार[48] पर चढ़ने के मंज़र[49] उसे दिखा सकते थे कि माशूक़ की संगदिली[50] उसे कहाँ तक पहुँचा सकती है। शहरों

---

१. सभ्यता, संस्कृति २. साहित्य ३. प्रवक्ता ४. प्रभाव (असर का बहुवचन) ५. निरूपण ६. ब्रिटिश ७. सत्ता ८. दुर्व्यवस्था ९. अधिकार, हस्तक्षेप १०. मान्यताओं, विचारों ११. रूप १२. मरुस्थल १३. मरुद्वीप १४. परकोटा १५. मानो, जैसे कि १६. पशुता १७. संभव १८. पूर्ण १९. प्रकृति २०. पूर्णता २१. भीड़ २२. सरो वृक्ष २३. मध्य २४. सैर (प्रेयसी की मन्थर गति) २५. बाड़ २६. ओस २७. प्रातः समीर २८. गीत २९. पिंजरा ३०. आनंद ३१. ईर्ष्या ३२. घोंसलों ३३. कल्पना ३४. उपमानों ३५. रूपकों ३६. उदाहरण ३७. जंगल ३८. किनारा ३९. आधिक्य ४०. धर्मभीरु ४१. उपदेशक ४२. प्रेमिका की गली ४३. मुँडेर ४४. संयोग ४५. रूप-सौन्दर्य दिखाने, दर्शन देने ४६. प्रकट ४७. बदनामी ४८. सूली ४९. दृश्य ५०. कठोर हृदयता।

ही में महफ़िलें हो सकती थीं जिनको शम्मएँ रौशन[१] करतीं और जहाँ परवाने शोले पर फ़िदा होते, जहाँ आशिक़ और माशूक़ की मुलाक़ात होती। हम शहरों पर इसका इल्ज़ाम[२] नहीं रख सकते कि उन्होंने शहर को यह अहमियत दे दी, शहर और देहात की बेगानिगी सदियों से चली आ रही थी, ये गोया हिन्दुस्तान के दो मुतज़ाद[३] हिस्से थे।

मुल्क की तक़सीम[४] इसी एक नहज[५] पर नहीं थी। बादशाह, उमरा[६], सिपहसालार इक़्तिदार[७] की कशमकश[८] में मुब्तिला[९] थे, एक जुए के खेल में जहाँ हर एक हिम्मत, मौक़ा और अपनी मस्लेहत[१०] के लिहाज़ से[११] बाज़ी लगाता, बाक़ी आबादी को बस अपनी सलामती[१२] की फ़िक्र थी। ज़मीर[१३] और अख़्लाकी[१४] उसूल बहस में नहीं आते थे, बाजी हारना और जीतना क़िस्मत की बात थी। आम मफ़ाद[१५]का कोई तसव्वुर था भी तो वह ज़ाती[१६]अग़राज़[१७]की गंजलक[१८] में खो जाता और अगर कोई आम मफ़ाद को महसूस करता और उसे बयान करना चाहता तो उसे दीनी[१९] और फ़िक़ही[२०] इस्तलाहों[२१] का सहारा लेना पड़ता, जिसका लाज़मी[२२] नतीजा यह होता कि एक मज़हबी बहस खड़ी हो जाती। शाह इस्माइल शहीद की तसानीफ़[२३] में जहाँ कहीं सियासी मसाइल[२४] मोज़ू-ए-बहस[२५] हैं वहां हम देखते हैं कि एक नेकनीयत इंसान जिसकी ख़्वाहिश यह थी कि हुकूमत की बुनियाद अदल[२६] पर हो सिर्फ़ अपने ग़म और ग़ुस्से का इज़हार[२७] कर सकता था, कोई वाज़िह[२८] और मुदल्लल[२९] बात कहना मुमकिन ही नहीं था। शाइर को इख़्तियार था कि अहले-दौलतो-सर्वत[३०] की शान में क़सीदे[३१] लिखे या तवक्कुल[३२] पर दरवेशों की सी ज़िन्दगी गुज़ारे। किसी मुरब्बी[३३] पर भरोसा करने से आला[३४] मेयार[३५] की शाइरी करने में रुकावट पैदा नहीं होती थी, मुरब्बी का अहसान मानना एक रस्मी[३६] बात थी, इश्क़ और वफ़ादारी का मुस्तहक़[३७] सिर्फ़ माशूक़ था, और शाइर अपनी तारीफ़ भी जिस अंदाज़ से चाहता कर सकता था। अगर वह किसी हद तक भी नाम पैदा करता तो उसका शुमार मुन्तख़ब[३८] लोगों में होता था और उसकी दुनिया मुन्तख़ब लोगों की दुनिया होती थी।

---

१. प्रकाशित २. आरोप ३. प्रतिकूल, परस्पर विरोधी ४. विभाजन ५. ढंग ६. अमीर का बहुवचन ७. सत्ताधिकारी ८. संघर्ष ९. व्यस्त १०. स्वार्थ, हित ११. दृष्टि से १२. कुशल-क्षेम, सुरक्षा १३. अन्तरात्मा १४. नैतिक १५. लाभ १६. व्यक्तिगत १७. स्वार्थ (ग़र्ज़ का बहुवचन) १८. उलझन १९. धार्मिक २०. धर्मशास्त्रीय २१. पारिभाषिक शब्दावली २२. अनिवार्य २३. ग्रंथों, रचनाओं २४. समस्याएँ २५. विवाद का विषय २६. न्याय २७. अभिव्यक्ति २८. स्पष्ट २९. तर्क-संगत ३०. धनाढ्य और समृद्ध लोग ३१. प्रशंसा-काव्य ३२. अल्लाह के भरोसे ३३. संरक्षक, अभिभावक ३४. ऊंचा, श्रेष्ठ ३५. आदर्श ३६. पारंपरिक ३७. अधिकारी ३८. चुने हुए।

एक और तक़सीम 'आज़ाद' यानी शरीफ़ मर्दों और औरतों की थी। आम तौर पर लोगों को अंदेशा[1] था कि देखने से गुफ़्तगू[2] और गुफ़्तगू से बदन छूने तक बात पहुँचती है, और बदन छूने का नतीजा यह हो सकता था कि दोनों फ़रीक़[3] बेक़ाबू हो जाएँ। इस अंदेशे ने एक रस्म बनकर आज़ाद ना-महरम[4] मर्दों-औरतों को सख़्ती के साथ एक-दूसरे से अलग कर दिया। इसी वजह से आज़ाद औरतों के बारे में लिखना उन्हें ज़बान और अदब की आखों से देखने के बराबर और इसलिए ना-मुनासिब[5] क़रार दिया गया।[6] इश्क़ से मुराद[7] मर्द-औरत की वह मुब्बत नहीं थी जिसका मक़सद[8] रफ़ीके-हयात[9] बनना हो, और इस बिना[10] पर शाइर यह ज़ाहिर नहीं कर सकता था कि उसका माशूक़ मर्द है या औरत। माशूक़ के चेहरे और कमर का ज़िक्र किया जा सकता था, इसके अलावा उसके जिस्म के बारे में कुछ कहना बेहूदगी में शुमार होता था, अगरचे[11] ऐसे दौर भी गुज़रे हैं जब बयान में उरयानी[12] वज़:[13] के ख़िलाफ़ नहीं समझी जाती थी। लेकिन क़ायदे की पाबंदी का मतलब यह नहीं था कि औरत के वुजूद[14] को ही नज़रंदाज़[15] किया गया। उन मिसालों को छोड़कर जहाँ ईरानी रिवायत[16] की पैरवी में माशूक़ को अमरद[17] माना गया है, यह साफ़ जाहिर हो जाता है कि उर्दू के शाइर का 'माशूक़' औरत है। अलबत्ता इस बात का पता उसके तौर-तरीक़, नाज़ो अंदाज से चलता है, जिस्मानी[18] तफ़सीलात[19] से नहीं, और पसे-मंज़र घर नहीं है, बल्कि तवाइफ़[20] की बज़्म[21]।

"मुरक़्क़:[22]-ए-देहली" से, जो १७३९ ई० की तसनीफ़[23] है, मालूम होता है कि तवाइफ़ें किस दर्जा[24] शहर की तहज़ीबी[25] और समाजी ज़िन्दगी पर हावी[26] थीं। लखनऊ और दूसरे बड़े शहरों की हालत वही होगी जो देहली की। शाह इस्माईल शहीद के बारे में एक क़िस्सा है कि उन्होंने बहुत-सी औरतों की टोलियों को, जो बहुत आरास्ता-पैरास्ता[27] थीं, रास्ते पर से गुज़रते देखा। दरयाफ़्त[28] करने पर मालूम हुआ कि तवाइफ़ें हैं और किसी मुमताज़[29] तवाइफ़ के यहाँ किसी तक़रीब[30] में शिरकत[31] के लिए जा रही हैं। शाह साहब ने उन्हें राह:-ए-रास्त[32] पर चलने की तरग़ीब[33] दिलाने के लिए इसे एक बहुत अच्छा मौक़ा समझा और फ़क़ीर का भेष बनाकर उस मकान के अंदर पहुँच गए जहाँ तवाइफ़ें जमा हो रही

---

१. आशंका २. वार्तालाप ३. पक्ष ४. अपरिचित, ग़ैर ५. अनुचित ६. ठहरा दिया गया ७. आशय, अर्थ ८. उद्देश्य ९. जीवन-साथी १०. आधार ११. हालाँकि १२. नग्नता १३. रीति, प्रणाली १४. अस्तित्व १५. उपेक्षित, उपेक्षा १६. परंपरा, चलन १७. वह लड़का जिसके अभी दाढ़ी-मूँछ न आई हो १८. शारीरिक १९. विवरण २०. वेश्या २१. महफ़िल २२. वह ग्रंथ जिसमें लेखन कला के सुंदर नमूने या चित्र संग्रहीत हों २३. रचना २४. किस सीमा तक २५. सांस्कृतिक २६. छाई हुई २७. सजी-धजी २८. पूछ-ताछ २९. लोकप्रिय ३०. आयोजन ३१. भाग लेने, सम्मिलित होने ३२. सीधी राह ३३. प्रलोभन, आकर्षण।

थीं। उनकी शख़्सियत[१] में बड़ा वक़ार[२] था और अगरचे उन्हें इस्लाह[३] का काम शुरू किए ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ था, साहिबे-खानः[४] ने उन्हें फ़ौरन पहचान लिया। उसके सवाल के जवाब में कि वह कैसे तशरीफ़ लाए हैं शाह साहब ने क़ुरआन की एक आयत[५] पढ़ी और एक वाज़[६] कहा जिसको सुनकर तवाइफ़ें आबदीदः[७] हो गईं। नदामत[८] से आँसू बहाना तवाइफ़ों की तहज़ीब में शामिल था, अगरचे निजात[९] की ख़ातिर पेशा तर्क कर देना[१०] क़ाबिले-तारीफ़[११] मगर ख़िलाफ़े-मामूल[१२] समझा जाता था। तवाइफ़ें अपने ख़ास क़ायदों और रस्मों के मुताबिक़[१३] ज़िन्दगी बसर करती थीं और अगर एक तरफ़ उनका पेशा बहुत गिरा हुआ माना जाता था तो दूसरी तरफ़ वाज़[१४] ऐतबार से[१५] इस नुक़सान की कुछ तलाफ़ी[१६] भी हो जाती थी।

वह बज़्म, जिसका उर्दू शाइरी में इतना ज़िक्र आता है, दोस्तों की महफ़िल नहीं होती थी, लोग किसी मेज़बान की दावत[१७] पर जमा नहीं होते थे, न तहज़ीबी मशाग़िल[१८] के लिए आम इज्तमा[१९] होता था। ऐसी महफ़िलों में माशूक़ और रक़ीब[२०] और ग़ैर[२१] का क्या काम होता, मगर तवाइफ़ की बज़्म में यह सब मुमकिन था। ग़ालिब ने ये शेर कहे तो ऐसी ही बज़्म उनकी नज़र में होगी—

मैंने कहा कि बज़्मे-नाज़[२२] चाहिए ग़ैर से तही[२३]
सुनकर सितम-ज़रीफ़[२४] ने मुझको उठा दिया कि यूँ

हाँ वो नहीं ख़ुदा-परस्त[२५] जाओ वो बे-वफ़ा सही
जिसको हो दीनो-दिल अज़ीज़[२६] उसकी गली में जाए क्यों

हम जितना उन सूरतों पर ग़ौर करें जिनमें कि माशूक़ एक औरत है और देखें कि वह आशिक़ के साथ क्या बर्ताव करती है उतना ही यह वाज़ह[२७] हो जाता है कि इस शाइराना इस्तआरः[२८] से मुराद क्या है और उतना ही साफ़ बज़्म का नक़्शा हो जाता है। इसका हरगिज़ यह मतलब नहीं है कि वो तमाम शाइर जो माशूक़ की बज़्म का ज़िक्र करते हैं तवाइफ़ों की बज़्म में शरीक[२९] होते थे, जैसे शराब और मयखाना का ज़िक्र करने का यह मतलब नहीं है कि वो शराब की

१. व्यक्तित्व २. वैभव ३. सुधार ४. मेज़बान, आतिथेय, गृह-स्वामी (स्वामिनी) ५. वाक्य ६. प्रवचन ७. आँखें भर लाईं ८. लज्जा, पश्चात्ताप ९. मुक्ति १०. छोड़ देना ११. प्रवचन १२. सामान्य आचरण के प्रतिकूल १३. अनुसार १४. कुछ १५. दृष्टियों से १६. क्षतिपूर्ति १७, आमंत्रण १८. कार्यों १९. सभा, सम्मेलन २०. प्रतिद्वन्द्वी २१. पराया २२ प्रेमिका की महफ़िल २३. खाली २४. विनोद-विनोद में सताने वाला, सितम करने वाला २५. ख़ुदा-भक्त २६. प्यारा, प्रिय २७. स्पष्ट २८. रूपक २९. सम्मिलित।

दुकान पर बैठकर ठर्रा चलाते थे। मगर इसमें शक नहीं कि शहर में लौंडियों और ख़ादिमाओं[1] और मज़दूर-पेशा औरतों के अलावा सिर्फ़ तवाइफ़ें बे-नक़ाब[2] नज़र आती थीं नाज़ो-अदा दिखाने, तल्ख़[3] और शीरीं[4] गुफ़्तगू करने, लुत्फ़ और सितम से पेश आने का मौक़ा उन्हीं को था। उन्हें नाच और गाने के अलावा गुफ़्तगू का फ़न[5] सिखाया जाता था और तवाइफ़ों की बज़्म ही एक ऐसी जगह थी जहाँ मर्द बे-तकल्लुफ़ी[6] और आज़ादी के साथ रंगीन गुफ़्तगू, फ़िक़रेबाज़ी और हाज़िर जवाबी में अपना कमाल दिखा सकते थे। बड़ी खानदानी तक़रीबों[7] में तवाइफ़ों का नाच-गाना कराना खुशहाल घरानों का दस्तूर[8] था और जो लोग 'बज़्म' में शिरकत करना पसंद न करते वे ऐसे मौक़ों पर गुफ़्तगू के फ़न में अपना हुनर[9] दिखा सकते थे। शरीफ़ों और तवाइफ़ों के यक-जा[10] होने के मौक़े उर्स फ़राहम[11] करते थे, जिनमें से अक्सर में तवाइफ़ों को शरीक होने की इजाज़त थी। अब हम खुद ही सोच सकते हैं कि माशूक़ की तस्वीरें किस बुनियादी अक्स[12] को सामने रखकर बनाई गई होंगी और ऐसी औरत कौन हो सकती थी जिसका कोई ख़ानदान न हो, ताल्लुक़ात[13] और ज़िम्मेदारियाँ न हों और जो इस वजह से एक वुजूदे-महज़[14] एक ख़ालिस[15] जमालियाती[16] तसव्वुर[17] में तब्दील की जा सके।

उन्नीसवीं सदी के निस्फ़-आख़िर[18] की ज़हनी क़ैफ़ियत[19] और इस्लाह की मुख्लिसाना[20] कोशिशों ने इस हक़ीक़त[21] पर पर्दा डाल दिया है। दूसरी तरफ़ पारसा मिजाज़[22] और हया-ज़दा[23] लोग इस पर मुसिर[24] रहे हैं कि मयख़ाना और शराब की तरह माशूक़ भी एक अलामत[25], एक इस्तआर: है, जिसे मजाज़ी[26] कसाफ़तों[27] से कोई निस्बत[28] नहीं। उन्हें अपनी जिद पूरी करने में कोई दुश्वारी[29] नहीं होती, इसलिए कि सूफ़ियाना[30] शाइरी की रिवायत[31] ने तमाम कैफ़ियतों[32] को, और ख़ास तौर से आसिक़ो-माशूक़ के रिश्ते को एक रूहानी[33] हक़ीक़त का अक्स माना है। लेकिन इस वजह ने हमारे ज़माने के नक़्क़ाद[34] क्यों समाजी हालात को नज़रंदाज़ करें और क्यों शाइर को इस इल्ज़ाम से न बचाएँ कि उसका माशूक़ बिलकुल फ़र्ज़ी[35], उसका इश्क़ महज़ धोका और एहसासात[36] ख़ालिस तमन्ना[37] है।

अब कुछ और समाजी हालात को देखिए जिनका अदब पर अक्स पड़ा।

---

१. सेविकाओं २. बे-पर्दा ३. कड़वी ४. मीठी ५. कला ६. अनौपचारिक ७. उत्सव-आयोजन ८. चलन ९. कौशल १०. एक स्थान पर ११. उपलब्ध १२. प्रतिबिम्ब १३. संबंध १४. अस्तित्व मात्र १५. शुद्ध १६. सौंदर्यशास्त्रीय १७. कल्पना १८. उत्तरार्ध १९. मानसिक स्थिति मनोदशा २०. सौहार्दपूर्ण २१. वास्तविकता २२. धर्मनिष्ठा २३. लोक-लाज के मारे हुए २४. आग्रही २५. प्रतीक २६. लौकिक २७. विकारों २८. संबंध २९. कठिनाई ३०. सूफ़ियां (सांसारिक मोहों से मुक्त होकर ईश्वर-साधना में लगे लोगों)—जैसी ३१. परंपराओं ३२. स्थिति ३३. आध्यात्मिक ३४. आलोचक ३५. कृत्रिम ३६. अनुभूतियाँ ३७. बनावटी।

शहरों में शरीफ़ों के लिए पैदल चलना दस्तूर न था, किसी क़िस्म की सवारी पर आना-जाना लाज़िमी था। घोड़े-गाड़ी का रिवाज़ अंग्रेज़ों की वजह से हुआ, घोड़े की सवारी लम्बे सफ़र पर की जाती, शहर के अन्दर इसका रिवाज़ न था। आम सवारी किसी क़िस्म की पालकी थी। इसका नतीजा यह था कि कोई हैसियत वाला अकेला टहल नहीं सकता था, रास्ते में खड़े होकर लोगों को अपने काम से आते-जाते नहीं देख सकता था, सेहत[१] की ख़ातिर भी पैदल सैर नहीं कर सकता था, अवाम[२] घुल-मिल नहीं सकता था, अवाम में घुलने-मिलने का और कोई इम्कान[३] नहीं था। शरई[४] क़ानून के मुताबिक़ सब इंसान बराबर थे और इस क़ानून को मानने से किसी ने इन्कार नहीं किया। लेकिन क़ानून ने इसका हुक्म नहीं दिया था कि लोग आला[५] और अदना[६] अमीर और ग़रीब के फ़र्क़ को नज़रंदाज़ करके सबसे बराबर की हैसियत वालों की तरह मिलें, और उस क़ायदों पर, जिनकी वजह से मुख़्तलिफ़[७] तब्क़े[८] अलग रहते थे, सख़्ती से अमल किया जाता था। मुमकिन है कि यह जातों की तक़सीम[९] का असर हो, क्योंकि हिन्दुस्तानी मुसलमानों के तौर-तरीक़ में बाज़ बातें हैं जो इस्लामी मुल्कों में नहीं मिलती हैं बहरहाल, समाजी तक़सीम के इन क़ायदों के वुजूद[१०] से इन्कार नहीं किया जा सकता। इनकी वजह से शाइर अवाम से अलग और शाइरी अवाम के ज़ज़्बात[११] से दूर रही। सिर्फ़ 'नज़ीर अकबराबादी' ने शाइरी को इस करन्तीनः[१२]से निकला, और उनके कलाम का हुस्न[१३] और उसकी रंगीनी इसकी शहादत[१४] देती है कि उर्दू शाइरी ने समाजी पाबंदी का लिहाज़ करके अपने-आपको बहुत सी वारदाते-क़ल्बी[१५] से महरूम[१६] रखा। लेकिन 'नज़ीर अकबराबादी' के तरीके को शाइरों और नक़्क़ादों[१७] ने पसंद नहीं किया, और उनके हम-अस्र[१८] लोगों पर उनके कलाम का असर नहीं हुआ। इस तरह शाइर के एहसासात[१९] का ताल्लुक़[२०] उनकी ज़ात[२१] से ही रहा, उसकी कैफ़ियतें[२२] समाज की ख़ुशी और रंज से अलग और मुख़्तलिफ़[२३] रहीं।

सफ़र का रिवाज़ भी इंसानों को एक-दूसरे के क़रीब लाने का ज़रिया[२४] है, लेकिन यह भी समाज में रब्त[२५] पैदा न कर सका। सफ़र करना मुश्किल था, लोग शहर से बाहर निकलने से घबराते थे। 'ग़ालिब' का एक फ़ारसी का शेर है—

---

१. स्वास्थ्य २. जनता, साधारण लोग ३. संभावना ४. इस्लाम धर्म के ५. उच्च ६. साधारण, तुच्छ ७. विभिन्न ८. वर्ग ९. विभाजन १०. अस्तित्व ११. भावों, भावनाओं १२. दायरा १३. सौन्दर्य १४. साक्षी, गवाही १५. हार्दिक घटनाएं १६. वंचित १७. आलोचकों १८. समकालीन १९. भावनाओं २०. संबंध २१. निज से, शरीर से २२. स्थिति २३. भिन्न २४. माध्यम २५. संपर्क।

अगर ब-दिल[1] न ख़लद[2] हर चे[3] हर नज़र[4] गुज़रद[5]
खुशा[6] रवानी-ए-उम्रे[7] कि दर सफ़र[8] गुज़रद

लेकिन दर-असल वह सफ़र की ज़हमतों[9] से बचना चाहते थे। कलकत्ता जाते हुए उन्हें जो लुत्फ़[10] आया वह मुलाक़ातों और सुहबतों[11] का लुत्फ़ था, या फिर नए शहर देखने का। बनारस और कलकत्ता दोनों की उन्होंने फ़ारसी की मस्नवियों में बहुत तारीफ़ की है।

क़ानून और रस्मो-रिवाज दोनों हर फ़र्द[12] को समाज और उस जमात[13] का, जिसका वह रुक्न[14] होता, मातहत[15] और पाबंद रखते थे। शायद इसीसे रिहाई[16] हासिल करने[17] के लिए हस्सास[18] अफ़राद[19] दिलो-दिमाग़ की तनहाई[20] में अपनी ज़िन्दगी अलग बनाते थे। इसके अलावा उस दौर में अलग-अलग ज़ह्नी[21] खानों में बन्द होकर सोचने और अमल[22] करने की एक अजीबो-ग़रीब कैफ़ियत थी। शाइर को उन सियासी[23] तब्दीलियों[24] से, जिनका शुरू में ज़िक्र किया गया, इस क़द्र कम वास्ता[25] था कि गोया[26] शाइरी और सियासी ज़िन्दगी में कोई लाज़िमी[27] और क़ुदरती[28] ताल्लुक़ नहीं। 'ग़ालिब' ने अपनी एक फ़ारसी की मस्नवी में वुजूदियों[29] और शहूदियों[30] के इख़्तलाफ़ात[31] का ज़िक्र किया है, मगर इसके बावजूद यह कहना ग़लत नहीं है कि उस दौर की इस्लाही[32] तहरीरों[33] का, जिनकी रहनुमाई[34] सैयद अहमद शहीद और शाह इस्माइल शहीद जैसे बुज़ुर्ग कर रहे थे, शाइरी पर कोई ख़ास असर नहीं पड़ा। 'ग़ालिब' ने जहाँ कहीं ज़ाहिद[35] और वाइज़[36] का ज़िक्र किया है उससे मुराद[37] रिवायती[38] ज़ाहिद और वाइज़ हैं, उनके अपने ज़माने के लोग नहीं हैं। ख़ुद ग़ज़ल का तर्ज़[39] खानों में बंद होकर सोचने की एक नुमायाँ[40] मिसाल[41] है कि ग़ज़ल के हर शेर का अलग मौज़ू[42] होता है और उसका पिछले और बाद के शेर से कोई ताल्लुक़ नहीं होता। बेशक ग़ज़लों में भी कभी-कभी ख़याल का तसल्सुल[43] मिलता है और क़त्अ़बंद की भी मुमानियत[44] नहीं थी, लेकिन मुनासिब[45] यह था कि हर शेर का मज़मून[46] अलग हो। मालूम होता है

---

१. दिल में २. न चुभे ३. जो कुछ ४. नज़र में ५. गुज़रे ६. कितना अच्छा है ७. उम्र की रवानी ८. सफ़र में ९. कष्टों १०. आनंद ११. संग-साथ १२. व्यक्ति १३. समुदाय, वर्ग १४. सदस्य १५. अधीन १६. मुक्ति १७. प्राप्त करने १८. संवेदनशील १९. व्यक्ति (फ़र्द का बहुवचन) २०. एकांत २१. मानसिक २२. आचरण २३. राजनैतिक २४. परिवर्तन २५. संबंध २६. मानो २७. अनिवार्य २८. प्राकृतिक, स्वाभाविक २९. अस्तित्ववादी सूफ़ी ३०. साक्ष्यवादी सूफ़ी ३१. मतभेद ३२. सुधारक, सुधारकवादी ३३. आंदोलन ३४. पथ-प्रदर्शन ३५. ईश्वर-भक्त, ख़ुदापरास्त ३६. धर्मोपदेशक ३७. आशय ३८. पारंपरिक ३९. शैली ४०. प्रकट, खुला ४१. उदाहरण ४२. विषय ४३. नैरन्तर्य ४४. वर्जना ४५. उचित ४६. विषय।

कि 'ग़ालिब' के दौर में शाइर के सियासत[1], समाज और मज़हब[2] के मुआमलात[3] से अलग रहने का असल सबब[4] यह था कि ज़िन्दगी का मुख़्तलिफ़[5] ख़ानों में तक़सीम[6] होना आम तौर पर तस्लीम[7] कर लिया गया था। शाइरों में इन्फ़रादियत[8] को फ़रोग़[9] वहदत-उल-वुजूद[10] के नज़रिये[11] की वजह से भी हुआ। इस नज़रिये के मुताबिक़[12] इंसान और उसके खालिक़[13] के दरमियान ब-राहे रास्त[14] ताल्लुक़ हो सकता था, किसी वसीले[15] की ज़रूरत नहीं थी, इस तरह शाइर अक़ांदे[16] और अमल के मुआमलात में खुद फ़ैसला करने का इख़्तियार[17] रखता था, और समाज से अलग होकर वह अपनी इन्फ़रादियत का जो तसव्वुर[18] चाहता क़ायम कर सकता था, अपनी ज़िन्दगी का अलग नस्ब-उल-ऐन[19] मुक़र्रर करके चाहता तो कह सकता था कि इश्क़, आशिक़ और माशूक़ के सिवा जो कुछ है सब हेच[20] है।

---

१. राजनीति २. धर्म ३. मामलों ४. कारण ५. भिन्न-भिन्न ६. विभाजन ७. स्वीकार ८. व्यक्तित्ववाद ९. प्रोत्साहन १०. अद्वैतवाद ११. विचारधारा, दृष्टिकोण १२. अनुसार १३. स्रष्टा १४. सीधा १५. माध्यम १६. दृढ़ विश्वास, आस्था १७. अधिकार १८. विचार, कल्पना १९. उद्देश्य, लक्ष्य २०. तुच्छ।

: २ :

ग़ालिब का उर्दू कलाम

मिर्ज़ा 'ग़ालिब' ने लिखा है कि उन्हें शेरो-शाइरी का शौक़ उसी ज़माने से हुआ जब से कि वह 'लह्-वो-लइब'[1] और 'फ़िस्क़ो-फ़ुजूर'[2] में पड़ गए, गोया यह शौक़ उनकी शख़्सियत[3] के फ़रोग़[4] की अलामतों[5] में से एक अलामत थी। उनके इब्तिदाई[6] कलाम के नमूने हमारे सामने होते और उन्हें वक्ते-तसनीफ़[7] के एतबार से[8] तरतीब[9] दिया जा सकता तो हम अंदाज़ा कर सकते कि उनकी जौलानी[10] उन्हें किन सम्तों[11] मे कितनी दूर तक ले गई, और उन्हें अपनी ख़ास सलाहियतों[12] और असल[13] ज़ौक़[14] का एहसास[15] किस तरह हुआ। बड़े अफ़सोस की बात है कि 'ग़ालिब' ने अपना सारा कलाम, रद्दी को रद्दी समझकर भी पड़ा नहीं रहने दिया, और पहले इन्तख़ाब[16] में जो कुछ उन्होंने शामिल नहीं किया वह हमेशा के लिए जायअ़[17] हो गया है। जो रहा-सहा इम्कान[18] 'ग़ालिब' की अदबी[19] और जमालियाती[20] नश्वो-नुमा[21] का पता लगाने का था, वह ग़ज़लों को रदीफ़वार[22] तरतीब देने के दस्तूर[23] ने बाक़ी न रखा। अब क्या मालूम कि यह शेर पंद्रह, सोलह या बीस-बाईस बरस की उम्र में कहा गया था—

उरूजे-नाउमीदी[24] चश्मे-ज़ख़्मे चर्ख़[25] क्या जाने
बहारे बेख़िज़ाँ[26] अज़्[27] आहे बेतासीर[28] है पैदा

---

१. खेल-कूद २. दुराचार ३. व्यक्तित्व ४. व्यापकता ५. प्रतीकों ६. प्रारंभिक ७. रचना-कला ८. दृष्टि से ९. क्रमबद्ध १०. स्फूर्ति, उमंग ११. दिशाओं १२. योग्यताओं, समझदारी १३. वास्तविक १४. आनंद १५. अनुभव होना १६. चयन १७. नष्ट १८. संभावना १९. साहित्यिक २०. सौन्दर्यशास्त्रीय २१. विकास २२. तुकांत क्रम से २३. नियम २४. नैराश्य का उत्थान २५. आकाश के घाव की आंख २६. बिना पतझड़ की बहार २७. से २८. प्रभावहीन विलाप।

और जब कहा गया था तो 'ग़ालिब' आहे-बेतासीर की रूहानी[1] और फ़ल्सफ़याना[2] गहराइयों से वाकिफ़[3] थे या महज़[4] अल्फ़ाज़[5] जोड़ने की एक तरकीब उनकी समझ में आई थी।

'ग़ालिब' के उर्दू के पहले और दूसरे दौर के कलाम में बाज़[6] ख़ुसूसियतें[7] मुश्तरिक[8] हैं, जिनमें सबसे नुमायाँ यह है कि वह चन्द[9] ख़तूत[10] खींचकर छोड़ देते हैं और तस्वीर का मुकम्मल[11] करना पढ़ने या सुनने वाले पर छोड़ देते हैं जिनसे एक से ज़्यादा तस्वीरें बन सकती हैं, कभी ऐसे कि जिस तरह भी जोड़िए और तोड़िए कोई वाज़ेह[12] तस्वीर बनती ही नहीं। दरबार में रुसूख[13] पैदा होने की वजह से 'ग़ालिब' ने अपनी इन्फ़रादियत[14] तर्क[15] नहीं कर दी, हुस्न[16] की ज़ुल्फ़ों में अक़्ल के पेच डालते रहे, लेकिन सामईन[17] का लिहाज़[18] रखना ज़रूरी था, ख़ास तौर पर बहादुर शाह की रूमानियत का। यही सामईन का लिहाज़ है जिसने 'ग़ालिब' को मुहावरे बरतने और आम मज़ाक़[19] के मुताबिक शेर कहने पर आमादा[20] किया, इसीने उन्हें हर-दिल-अज़ीज[21] बना दिया। उसके इब्तिदाई दौरे के आला[22] कलाम में वह शान है जो पहाड़ की चोटी की चमकती बर्फ में होती है, दूसरे दौरे में यह बर्फ पिघलती, चश्मे बनकर नीचे बहती है, सिर्फ़ चोटी नहीं बल्कि पूरा पहाड़ सामने आ जाता है, जंगल नज़र आते हैं, हवाएँ चलती हैं, चश्मे गीत गाते हुए वादी में उतरते हैं। मगर बुलंदी[23] फिर बुलंदी है, आब्शार[24] और सब्ज़:ज़ार[25] उसके नीचे ही होते हैं।

यह एक क़ुदरती बात थी कि 'ग़ालिब' पर दूसरे शाइरों का असर हो। जहाँ तक मुझे मालूम है, दुनिया के किसी शाइर ने किसी दूसरे शाइर की अज़मत[26] का उस तरह एतराफ़[27] नहीं किया जैसे कि 'ग़ालिब' ने 'बेदिल' का—

जोशे-दिल है मुझसे हुस्ने-फ़ितरते 'बेदिल'[28] न पूछ
क़तर:[29] से मयख़ान:-ए-दरिया-ए-बेसाहिल[30] न पूछ

'बेदिल' के तर्ज़ पर उर्दू में शेर कहने के इरादे ने 'ग़ालिब' को मुश्किल-पसंद बना दिया, कभी इस मुश्किल-पसंदी को ख़याल से कोई निस्बत नहीं होती है। मसलन्[31] एक जगह एक औरत को झुककर सलाम करने की तस्वीर इन अल्फ़ाज़ में खींचते

---

१. आध्यात्मिक २. दार्शनिक ३. परिचित ४. मात्र ५. शब्द (लफ़्ज का बहुवचन) ६. कुछ ७. विशेषताएँ ८. समान ९. कुछ १०. लकीरें, रेखाएँ ११. पूर्ण १२. स्पष्ट १३. मेल-जोल, पहुँच १४. वैयक्तिकता, विशिष्टता १५. छोड़ना १६. सौन्दर्य १७. श्रोताओं १८. ध्यान, सम्मान १९. रुचि, प्रवृत्ति २०. तत्पर, सन्नद्ध २१. सर्वप्रिय २२. श्रेष्ठ २३. ऊँचाई २४. झरना २५. जंगल, झाड़ी २६. महत्ता बड़प्पन २७. स्वीकृति, स्वीकार करना २८. 'बेदिल' की प्रकृति का सौन्दर्य २९. बूंद ३०. तटहीन नदी ३१. उदाहरणार्थ।

हैं, गोया एक ख़ूबसूरत मूसल से ख़त्ताती[1] की मश्क़[2] कर रहे हैं—

> सरोकारे-तवाज़अ[3] ताख़म[4] गेसू रसानीदन[5]
> ब साने-शानः[6] ज़ीनतरेज[7] है दस्ते-सलाम[8] उसका

इस शुरू के दौरे में 'ग़ालिब' का कलाम लोगों को हैरत में डाल देता होगा, शेर सुनकर लुत्फ़ आना चाहिए, इसके बजाय उनके इल्म[9] और अक़्ल[10] का इम्तहान होता था। लेकिन 'ग़ालिब' के कलाम को नज़रंदाज़[11] करना भी मुमकिन[12] न था, इसका मतलब तो यह होता कि अपनी आजिज़ी[13] का एतराफ़[14] किया जाए, कहा जाए कि 'ग़ालिब' की ज़बान में फ़ारसी ज़्यादा है, इतनी फ़ारसी हम नहीं समझते, 'ग़ालिब' आम-फ़हम[15] नहीं हैं, और हमारी समझ बस इतनी है जितनी कि आम तौर पर लोगों में होती है, 'ग़ालिब' नुक्ता-शिनासी[16] का मुतालबा[17] करते हैं, हमारी रसाई[18] सिर्फ़ उन एहसासात[19] तक है जो मामूली इल्म और तजुर्बा[20] पैदा करते हैं, हम उन्हीं कैफ़ियतों को जानते हैं जो सबके दिलों पर गुज़रती हैं, 'ग़ालिब' की मानी-आफ़रीनी[21] हमें मुअम्मा-आफ़रीनी[22] मालूम होती है और मुअम्मे[23] हल करने की हममें क़ाबिलियत[24] नहीं। इस तरह लोग सुनने और समझने की कोशिश करने पर मजबूर हो जाते होंगे। 'ग़ालिब' ने फ़ारसी और उर्दू को एक नए ढंग से मिलाकर अपनी अलग और अनोखी ज़बान बनाई थी जिसमें ईजाज़[25] की हैरत-अंगेज़[26] गुंजाइश थी और जो शेर के मैदान को मानी-आफ़रीनी के लिए वसीअ[27] से वसीअतर कर देती थी।

यह मानी-आफ़रीनी, यह दिलो-दिमाग़ में नई कैफ़ियतें, नए हंगामे पैदा करने वाली ताक़त क्या थी? पहले दौर का एक शेर मिसाल के तौर पर लीजिए—

> कुल्फ़ते[28]-रब्ते[29]-ईनो[30]-आँ[31] ग़फ़लते[32] मुद्दआ[33] समझ
> शौक़[34] करे जो-मर गराँ[35], महमले[36]-ख़्वाबे-पा[37] समझ

कहा जाता है कि इंसान को दुनिया और आक़िबत[38] के दरमियान रब्त[39]

---

१. सुलेख २. अभ्यास ३. आदर, आवभगत ४. बालों के पेचोख़म तक ५. पहुँचाना ६. कंघे की तरह ७. बनाव-शृंगार का प्रदर्शन ८. सलाम करने के लिए उठा हुआ हाथ ९. ज्ञान १०. बुद्धि ११. उपेक्षा करना १२. संभव १३. विवशता १४. स्वीकृति, स्वीकार करना १५. सबकी समझ में आने वाला १६. मर्मज्ञता १७. माँग १८. पहुँच १९. मनोभावों २०. अनुभव २१. अर्थोत्पत्ति २२. पहेलियाँ बनाना २३. पहेलियाँ २४. योग्यता २५. संक्षिप्तता २६. आश्चर्यजनक २७. विस्तृत २८. दुःख २९. संबंध ३०. इस ३१. उस ३२. विस्मरण ३३. उद्देश्य ३४. जिज्ञासा ३५. सिर को भारी ३६. ऊँट पर कसा जाने वाला कजावा ३७. सोए हुए पैर का स्वप्न ३८. दूसरी दुनिया ३९. संबंध।

और हम-आहंगी[१] पैदा करना और क़ाइम[२] रखना चाहिए। लेकिन 'ग़ालिब' के नज़दीक इसकी कोशिश करना इंसानी ज़िन्दगी के मुद्दआ और मक़सद[३] से ग़ाफ़िल[४] हो जाने के बराबर है। ज़िन्दगी का मुद्दआ यह है कि इंसान शौक़ को रहनुमा[५] बनाए, जोशे-इश्क़[६], हुस्न-परस्ती[७], तख़य्युल[८] की जौलानी[९] को अस्ले-हयात[१०] समझे, अगर कभी थकन मालूम हो तो यह न ख़याल करे कि इसका सबब मुसल्सल[११] सर-मर्दानी[१२] है कि जो चलता रहे उसका पैर नहीं सोता, अलबत्ता जो चलते-चलते रुक जाए, बैठ जाए, उसका पैर सो जाएगा। सर-गरानी शौक़ की वजह से नहीं, सुस्ताने के ख़याल से पैदा होती है। यह ख़याल दिल से निकल जाए तो सर-गरानी न हुआ करेगी।

बाज़ लोग कहेंगे कि यहाँ 'ग़ालिब' ने दीन[१३] के एक बुनियादी[१४] उसूल[१५] से इन्कार किया है, अख़्लाक़ी[१६] बे-लगामी[१७] की दावत दी है, बाज़ मुतालिबा[१८] करेंगे कि शौक़ की और उस बे-मंज़िल सफ़र की वज़ाहत[१९] की जाए जो शौक़ का नतीजा होता है, बाज़ इस शेर को शेर न मानेंगे। तीनों क़िस्म के तास्सुरात[२०] का सबब समझ में आ सकता है। जो लोग दीन को इंसान से और इंसान को दीन से अलग करके मंतिक़[२१] का हक़ अदा करना चाहते हैं, जिन लोगों का अक़ीदा[२२] है कि ज़िन्दगी में अख़्लाक़ी[२३] नज़्म[२४] और ज़ब्त[२५] होना चाहिए, वो भूल जाते हैं कि यह नज़्म और ज़ब्त मक़सद[२६] नहीं है, ज़रिया[२७] है आगे की मंज़िलों तक पहुँचने का, जो लोग तसव्वुरात[२८] की वज़ाहत[२९] चाहते हैं, उन्हें तसव्वुरात से ज़्यादा वज़ाहत से मतलब होता है, जिन लोगों को इस शेर में शेरियत नज़र ही नहीं आती वो शेर से लुत्फ़-अंदोज़[३०] होना चाहते हैं, अपने जज़्बात[३१] के लिए एक मुहर्रिक[३२] चाहते हैं, तबीअत को हल्का करना, ग़मे-रोज़गार[३३] को ग़मे-इश्क़[३४] के सहारे से भुलाना चाहते हैं, उन्होंने ज़िन्दगी को, जैसी कि वह है, तस्लीम[३५] कर लिया है, इम्कानात[३६] पर ग़ौर नहीं करते, आदमी जिस हद तक इंसान बन गया है, उसे काफ़ी समझते हैं, उसके आगे उन्हें और कुछ नज़र नहीं आता। 'ग़ालिब' ने आज़ाद इंसानियत की तलाश में क्या कुछ महसूस और मालूम किया यह वो हमें नहीं बताते, शाइर का मन्सब[३७] रहनुमाई[३८] करना नहीं है बल्कि आम इम्कानात की सैर का ऐसा शौक़ पैदा करना है कि आदमी ख़ुद बेचैन होकर निकल खड़ा हो।

---

१. वार्तालाप, साथ मिलकर बोलने की क्रिया २. कायम ३. उद्देश्य ४. असावधान, बेसुध ५. पथ-प्रदर्शक ६. प्रेमोत्कर्ष ७. सौन्दर्य प्रेम ८. कल्पना ९. स्फूर्ति १०. जीवन का मूल ११. निरंतर १२. सिर घूमना १३. धर्म १४. आधारभूत १५. सिद्धांत, नियम १६. नैतिक १७ स्वच्छंदता १८. माँग १९. राष्ट्रीयकरण २०. प्रभावी २१. तर्कशास्त्री २२. विश्वास २३. नैतिक २४. व्यवस्था २५. आत्म-नियंत्रण २६. साध्य २७. साधना २८. कल्पनाओं, विचारों २९. स्पष्टीकरण ३०. रसास्वादन ३१. मनोभावों ३२. प्रेरक ३३. सांसारिक दुःख ३४. प्रेम-पीड़ा ३५. स्वीकार ३६. संभावनाओं ३७. कर्त्तव्य ३८. पथ-प्रदर्शन।

उसी इब्तिदाई दौर की एक ग़ज़ल है जिसके चार शेर कैफ़ियतों का एक सिलसिला पेश करते हैं—

> मिज़ः[1] पहलू-ए-चश्मे[2]-जल्वः-ए-इदराक[3] बाक़ी है
> हुआ वो शोला दाग़ और शोख़ी[4]-ए-ख़ाशाक[5] बाक़ी है
> गुदाज़े[6] सई[7]-ए-बीनश[8] शुस्तो-शू[9] से नक्शे[10] ख़ुदनामी
> सरापा[11] शबनम-आई[12], यक निगाहे-पाक[13] बाक़ी है
> चमन-ज़ारे तमन्ना[14] हो गया सर्फ़े-खिज़ाँ[15] लेकिन
> बहारे-नीम रंगो[16]-आहे हसरतनाक[17] बाक़ी है
> न हैरत[18] चश्मे-साक़ी[19] की, न सुहबत[20] दौरे-साग़र[21] की
> मेरी महफ़िल में 'ग़ालिब' गर्दिशे अफ़लाक़[22] बाक़ी है

(मैंने इन अशआर का इंतख़ाब[23] अंग्रेज़ी में तर्जुमा[24] करने के लिए किया था, इस वजह से कि इनकी ज़बान में कशिश[25] थी, इनमें वह "मग़ज़"[26] मालूम होता था जो तर्जुमे को किसी क़द्र आसान कर देता है और उम्मीद थी कि ये समझ में भी आ जाएँगे। यह उम्मीद मेरी अपनी कोशिश से नहीं, बल्कि जनाब 'रविश' सिद्दीक़ी साहब की रहनुमाई से पूरी हुई। आख़िर में मालूम हुआ कि ये अशआर तर्जुमे के लिए निहायत[27] मौज़ूं[28] हैं।)

बज़ाहिर[29] इन अशआर[30] में यासो-हिरमा[31] की कैफ़ियतें बयान की गई हैं। ऐसा बयान और शाइरों ने शायद ज़्यादा साफ़ और सुलझी हुई ज़बान में किया होगा लेकिन इन्हें मुतफ़र्रिक़[32] अशआर के बजाय क़तःबंद समझिए तो इनमें एक मुकम्मल कैफ़ियत का नक़्शा मिलता है। शाइर को हुस्ने कामिल[33] का दीदार[34] नसीब हुआ है बिजली-सी गिरी है, आँखें अंधी हो गई हैं, नज़र जल गई है, बस कुछ पलकें सुलगती रह गई हैं, और जब शोला नहीं रहा तो इन ख़ाशाक का सुलगते रहना महज़ शोख़ी है। मगर आँख देखने के लिए बनी थी वह अपना मन्सब[35] कैसे छोड़ दे, वह देखने की कोशिश में आँसू बहाती रहती है, और

---

१. पलक २. आँख ३. विवेक ४. चंचलता ५. कूड़ा-कर्कट, तिनके ६. मृदुलता ७. प्रयत्न ८. दृष्टि ९. धुलाई-सफ़ाई १०. स्वार्थ का चिह्न ११. संपूर्ण, सिर से पैर तक १२. ओस-जैसा धर्म रखने वाले १३. पवित्र दृष्टि १४. अभिलाषाओं का बाग़ १५. पतझड़ के लिए ख़र्च हो गया १६. आधे रंग वाली बहार १७. हसरतभरी आह १८. आश्चर्य १९. साक़ी की आँख २०. मिलन, संसर्ग २१. शराब के प्याले का दौर २२. आकाश का चक्कर २३. चयन २४. अनुवाद २५. आकर्षण, खिचाव २६. सारतत्त्व, गूदा २७. अत्यधिक २८. उपयुक्त २९. प्रकट रूप में ३०. शेर का बहुवचन ३१. निराशा ३२. विविध ३३. पूर्ण सौन्दर्य ३४. दर्शन ३५. कर्त्तव्य।

आख़िर में घुलते-घुलते एक निगाह पैदा कर लेती है जिसमें शबनम की-सी चमक है। इसी बात को दूसरी तरह कहिए तो गोया चमन की शादाबी[1] ख़िज़ाँ[2] पर निसार[3] हो चुकी है, उसका निसार हो जाना ज़रूरी था, कि ख़िज़ाँ तो लाज़िमी तौर पर आती ही है, और अब तमन्ना भी क्या कर सकती है सिवा इसके कि एक बहार पैदा करे जिसके रंग फीके होंगे, और वैसे ही बेदम जैसे हसर तनाक आहें। या एक और मिसाल लीजिए तो कहा जा सकता है कि साक़ी को हैरत-भरी निगाहों से देखने और ऐसी सुहबतों में बैठने का ज़माना गया जहाँ साग़र का दौर चलता हो। अब जो कुछ है आसमान की गर्दिश है, बे-माना[4] बे-सूद[5]।

'ग़ालिब' को समझने के लिए इसका लिहाज़ रखना ज़रूरी है कि शाइरी उनके लिए इस्बाते-ख़ुदी[6] का ज़रिया थी और उनकी ख़ुदी का भी एक ख़ास रंग था। उनका दिल अपनी जौलाँगाह[7] के लिए वह वुसअत[8], वह शिद्दत[9], निशात[10] की वह कैफ़ियत चाहता था जिसकी मिसाल गर्दबाद यानी बगूला है, ऐसी ही कैफ़ियत से उनकी तबीयत को उक़्दा-कुशाई[11] की लज़्ज़त नसीब हो सकती थी—

> पहन गश्तनहा-ए-दिल[12] बज़्मे-निशाते-गर्दबाद[13]
> लज़्ज़ते अर्ज़े-कुशादे-उक़्दा-ए-मुश्किल[14] न पूछ

बेशक इस्बाते-ख़ुदी की यही एक सूरत नहीं थी, लेकिन 'ग़ालिब के क़लाम में इसका अक्स[15] किसी-न-किसी एतबार[16] से तक़रीबन्[17] तमाम दूसरी कैफ़ियतों में नज़र आता है, ख़ास तौर से उनकी बेचैनी, बेज़ारी[18], दर्द, मायूसी[19] में, जो उन्हें ख़ुद वुजूद[20] से इन्कार पर आमादा करती है, इसलिए कि वुजूद की पाबंदियाँ उन्हें इंसानियत के लिए क़ैदख़ाना मालूम होती हैं, उसी इंसानियत के लिए जिसके सुराग़[21] में वह शोरे-महशर[22] बन गए हैं।

> सुराग़ आवारः-ए-अर्ज़े-दो आलम[23] शोरे-महशर हूं
> पर-अफ़शाँ[24] है ग़ुबार[25] आँ[26] सू-ए-सहरा-ए-अदम[27] मेरा

फिर इस ख़याल से कि शायद लोग इसको एक बहुत बड़ा दावा समझें कि उनके लिए आगाही[28] का मतलब ज़हन[29] का सीधी पटरियों पर चलना है, वह अपनी

---

१. हराभरापन २. पतझड़ ३. न्यौछावर ४. निरर्थक ५. बे-फ़ायदा ६. अहम् की स्वीकृति ७. कार्यक्षेत्र ८. विस्तार ९. तीव्रता १०. आनंद ११. रहस्योद्‌घाटन, समस्या सुलझाना १२. दिल के कार्यक्षेत्र का विस्तार १३. अंधड़ की आनंद सभा १४. कठिन समस्या को हल करने का आनंद १५. प्रतिबिम्ब १६. प्रकार, दृष्टि से १७. लगभग १८. असंतोष, मन का उचाट होना १९. निराशा २०. अस्तित्व २१. तलाश करना, भेद २२. प्रलय का हाहाकार २३. दोनों दुनियाओं का भेद पाने की आतुरता में आवारा २४. पंख फैलाए हुए २५. धूल २६. वह २७. शून्य के मरुस्थल की ओर २८. ज्ञान २९. मस्तिष्क, विवेक।

बेकसी[1] का भी एतराफ़[2] कर लेते हैं—

न हो बह्शतकशे[3] दर्से[4]-सराबे[5]-सत्र[6] आगाही
ग़ुबारे-राह[7] हूँ बे-मुद्आ[8] है पेचो-ख़म[9] मेरा

मगर इसका उन्हें इंतहाई[10] ग़म भी है—

मिली न वुसअते[11]-जौलाने[12] यक जुनूँ[13] हमको
अदम[14] को ले गए दिल में ग़ुबार सहरा का

दश्त[15], सहरा[16], बर्क़[17], ज़ंजीरें, ज़ख्म, सब अलामतें[18] हैं उस जंग की जो माद्दी[19] हक़ीक़त[20] और इंसानियत के दरमियान मुसल्सल[21] जारी रहती है, जिसमें इंसानियत बराबर शिकस्त[22] खाती मगर नए अज़्म[23] के साथ फिर मैदान में आती रहती है। शायद यह सब न होता अगर आगही न होती, दिल न होता।

शिकव:[24]-ओ-शुक्र[25] को समर[26], बीमो[27]-उमीद[28] का समझ
ख़ान:-ए-आगही[29] ख़राब, दिल न समझ बला समझ

ख़ुदाया चश्म-ता-दिल[30] दर्द है अफ़सूने[31] -आगाही
निग:[32] हैरत[33] सवादे[34]-ख़्वाबे[35] बेताबीर[36] बेहतर है

मुसीबत में आदमी ख़ुदा की रहमत[37] में पनाह[38] लेता है। रहमत में सिर्फ़ पनाह नहीं मिलती, दिलो-दिमाग़ को कुशादगी[39] नसीब होती है। 'ग़ालिब' ने कभी-कभी सीधे-सादे मुसलमान की तरह बात कही है—

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़[40] तो ये है कि हक़[41] अदा न हुआ

या वहदत-उल-वजूद[42] का फ़लसफ़ा[43] बयान किया है—

न था कुछ तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने, न होता मैं तो क्या होता

---

१. असहाय होने की स्थिति २. स्वीकृति ३. घबराने वाला ४. पाठ ५. मृगमरीचिका ६. पंक्ति ७. पथ का धूल ८. उद्देश्यहीन ९. बल-पेंच १०. अत्यधिक ११. विस्तार १२. दौड़ का मैदान १३. एक दीवानापन १४. अनस्तित्व, शून्य १५. जंगल १६. मरुस्थल १७. बिजली १८. प्रतीक १९. भौतिक २०. वास्तविकता २१. निरंतर २२. पराजय २३. उत्साह, हौसला २४. शिकायत २५. धन्यवाद २६. फल २७. निराशा २८. आशा २९. ज्ञान का घर ३०. आँख से दिल तक ३१. जादू ३२. दृष्टि ३३. आश्चर्य ३४. कालिमा ३५. स्वप्न ३६. निष्फल ३७. कृपा ३८. शरण ३९. विस्तार ४०. सच ४१. कर्त्तव्य, भूमिका ४२. अद्वैत ४३. दर्शन।

मक़सूदे[1]-मा[2] ज़-दैरो-हरम[3] जुज़[4] हबीब[5] नीस्त[6]
हर जा[7] कुनेम सजदः[8] बुदाँ[9] आस्ताँ[10] रसद[11]

मगर यह बुढ़ापे का ज़माना था। इब्तिदाई[12] दौर[13] में 'ग़ालिब' के लिए सीधे-सादे मुसलमान का अक़ीद[14] 'अज्ज़े-तमन्ना'[15] था—एक बंद गली जो इंसान के लिए रास्ता नहीं बन सकती थी—

किस बात पैं मग़रूर[16] है, ऐ अज्ज़े-तमन्ना
सामाने-दुआ[17] वहशत[18], व तासीरे-दुआ[19] हेच[20]

ख़ुदा तक सही मानों में रसाई[21] उसी की हो सकती है जो अपनी इंसानियत को बेतकल्लुफ़[22] कर दे, शिकायत करे, गुनाहों का मौतरिफ़[23] हो, बंदगी में दोस्ती का लुत्फ़ पैदा करे, मौक़ा मिले तो तंज़[24] से भी परहेज़ न करे। बंदगी में बे-तकल्लुफ़ी की मिसालें देखिए—

हर रंग में जला 'असद'[25]-ए-फ़ित्ना-इंतज़ार[26]
परवानः-ए-तजल्ली[27]-ए-शम्म-ए-ज़हूर[28] था

ख़ुर[29] शबनम-आशना[30] न हुआ वरना मैं 'असद'
सर-ता-क़दम[31] गुज़ारिशे[32] ज़ौक़े-सुजूद[33] था

वुसअते-रहमते-हक़[34] देख कि बख़्शा जावे
मुझ सा काफ़िर कि जो मननूने-मआसी[35] न हुआ

'असद' सौदा-ए-सर सब्ज़ी[36] से है तसलीम[37] रंगी-तर[38]
कि किश्ते-ख़ुश्क[39] उसका अब्रे-ब्रपरवा-ख़िराम[40] उसका

---

१. लक्ष्य २. मेरा ३. मंदिर-मस्जिद से ४. सिवाय ५. प्रिय ६. कुछ नहीं ७. प्रत्येक स्थान पर, जहाँ भी ८. सिर झुकाना ९. उसकी १०. चौखट ११. उपस्थित होना, आ जाना १२. प्रारंभिक १३. युग १४. मान्यता, विश्वास १५. कामना की विनम्रता (विवशता) १६. घमंडी १७. प्रार्थना की सामग्री १८. घबराहट, अशांति १९. दुआ का असर २०. बेकार, तुच्छ २१. पहुँच २२. अनौपचारिक २३. स्वीकार करने वाला २४. व्यंग्य २५. 'ग़ालिब' का पहला उपनाम 'असद' ही था—वैसे यह उनके नाम का पहला भाग भी है २६. फ़ितनों का इंतज़ार करने वाला २७. प्रकाश-प्रेमी परवाना २८. (परम सत्य के) प्रकट होने का दीपक २९. सूरज ३०. ओस का जानवर ३१. सिर से पाँव तक ३२. विनय, प्रस्तुत ३३. सिर झुकाने की आनंदमय अभिरुचि ३४. ईश्वर की कृपा का विस्तार ३५. गुनाहों का कृतज्ञ ३६. हरे-भरे होने का उन्माद ३७. अपनी स्थिति की स्वीकृति, संतोष ३८. अधिक रंगीन ३९. सूखा खेत ४०. बेपरवा चलने वाला बादल।

इस इंतख़ाब[1] के शुरू में एक ग़ज़ल है जिसमें ख़ुदा और बंदः-ए-आज़ाद[2] का ताल्लुक़ ऐसे अंदाज़ में पेश किया गया है जिसका जवाब मुझे और किसी ज़बान में नहीं मिला है, मगर यह समझना चाहिए कि 'ग़ालिब' का दिल जज़्ब-ए-दीनी[3] की कैफ़ियतों से ना-आश्ना[4] था। यह भी कह सकते थे—

पए-नज़्रे-करम[5] तुह्फ़ा[6] है शर्मे-ना-रसाई[7] का
बः ख़ूँ[8] ग़ल्तीदः[9]-ए-सदरंग[10] दावा-पारसाई[11] का

ऐ 'असद' बेजा[12] है नाज़े-सज्दः-ए-अर्ज़े-नियाज़[13]
आलमे-तसलीम[14] में ये दावा-आराई[15] अबस[16]

ख़बर निगः[17] को निगः चश्म[18] को अदू[19] जाने
वो जल्वः कर कि न मैं जानूँ और न तू जाने

नकामी-ए-निगाह[20] है बर्क़े-नज़ारा-सोज़[21]
तू ओ नहीं कि तुझको तमाशा करे कोई

ता-चंद[22] पस्त-हिम्मती[23]-ए-तबए[24]-आरज़ू[25]
या रब मिले बलंदी[26]-ए-दस्ते-दुआ[27] मुझे

अलबत्ता इसी जज़्ब-ए-दीनी ने मज़हबों की शक्ल इख़्तियार[28] करके इंसानों में जो तफ़रीक़[29] पैदा की थी उसे वह हक़-बजानिब[30] मानने पर तैयार न थे, और ज़ाहिदों[31] की सुहबत[32] उन्हें किसी हाल में गवारा न थी। उनका फ़ारसी का एक शेर है—

---

१. चयन २. व्यक्ति ३. धार्मिक मनोभाव ४. अपरिचित ५. मेहरबानियों को समर्पित करने के लिए ६. उपहार, भेंट ७. न पहुँच पाने की शर्म ८. ख़ून में ९. डूबा हुआ १०. शतरंगी ११. पवित्रता १२. अनुचित १३. समर्पण कर के सिर झुकाने पर गर्व करना १४. स्वीकृति-संसार १५. गर्वोक्तियाँ करना (सजाना) १६. बेकार १७. दृष्टि १८. आँख १९. दुश्मन २०. दृष्टि की विफलता २१. दृश्य को जला देने वाली बिजली २२. कब तक २३. साहस की कमी २४. स्वभाव २५. और अधिक माँगना, इच्छा २६. ऊँचाई २७. दुआ के लिए उठे हुए हाथों की २८. ग्रहण करना २९. भेद-भाव ३०. उचित, ठीक ३१. पवित्र आत्मा ३२. सम्पर्क, साथ।

सुख़न कोत:[1] मराहम[2] दिल ब-तक़बा[3] माइलस्त[4] अम्मा[5]
ज़े नंगे-ज़ाहिद[6] उफ़्तादम[7] ब-काफ़िर[8] माजरा-ए-हा[9]

अपनी इंसानियत भी उन्हें अज़ीज़[10] थी। ग़ुस्से में वह कह सकते थे—

ख़ू-ए-आदम[11] दारम[12] आदमज़ाद:[13] अम[14]
आश्कारा[15] दम[16] ज़-इस्याँ[17] मी[18] जनम[19]

लेकिन उन्हें छेड़ा न जाता तो वह इंसान से कह सकते थे कि नग़्म: और नश्श: और नाज़ का परस्तार[20] बनकर रह, ख़ल्क़[21] को पारसाई[22] करने दे—

नग़्म: है महवे-साज़[23] यह, नश्श: है बेनियाज़[24] रह
रिन्दे-तमाम नाज़[25] रह, ख़ल्क़ को पारसा[26] समझ

यही इन्सानियत है जो उन्हें इश्क़ की तरफ़ ले जाती है कि दुनिया एक वह्शत कद:[27] है, और वह रोशनी से महरूम[28] रहती अगर इन्सान शोल:-ए-इश्क़ को अपनी ज़िन्दगी का साज़ो-सामाँ न बनाता—

हमने वहशतकद:-ए-बज़्मे-जहाँ में जूँ शम्म:
शोल:-ए-इश्क़ को अपना सरो-सामाँ समझा

इश्क़ तमन्ना की शक्ल इख़्तियार करता है तो आलमे-इम्काँ[29] इन्सान के लिए तंग[30] हो जाता है—

है कहाँ तमन्ना का दूसरा क़दम या रब
हमने दस्ते-इम्काँ[31] को एक नक़्शे-पा[32] पाया

हसरत[33] बन जाता है तो अंजाम[34] की परवा नहीं करता, उसकी ख़ुदराई[35] की इंतिहा[36] नहीं रहती—

१-९. सक्षेप में, मेरा दिल भी धर्म की ओर अग्रसर था, लेकिन धर्मोपदेशक की दीनदारी या धर्म-प्रदर्शन देखकर मैं काफ़िर हो गया १०. प्रिय ११-१९. आदम का बेटा हूँ, आदम-जैसी आदतें रखता हूँ और इसलिए खुलकर गुनाह करता हूँ २०. पूजा करने वाला २१. दुनिया २२. धर्म का पालन २३. साज (वाद्ययंत्र) में निमग्न २४. निश्चित, लापरवाह २५. पूर्ण सौन्दर्य की शराब पीने वाला शराबी २६. सदाचारी २७. विकलता का घर २८. वंचित २९. संभावनाओं का संसार ३०. छोटा, सीमित ३१. संभावनाओं का जंगल ३२. पाँव का निशान ३३. कामना, अभिलाषा ३४. परिणाम ३५. आत्म-शृंगार ३६. सीमा, अंत।

हज़ार काफ़िलः-ए-आरज़ू बयाबाँ-मर्ग[1]
हनोज़[2] महमिले[3]-हसरत ब-दोशे-ख़ुदराई[4]

यह मसअला[5] बहस-तलब[6] है कि ऐसा इश्क़ सिर्फ़ मजाज़ी[7] हो सकता है या उसमें हक़ीक़ी[8] इश्क बन जाने का भी माद्दः[9] है। ग़ालिबन इस शेर का कि—

मैं दौरगर्दे[10]-अर्ज़े-रसूमे[11]-नियाज़[12] हूँ
दुश्मन समझ वले[13] निगहे-आश्ना[14] न माँग

मतलब यह था कि मैं रसूमे-नियाज़ अदा करने के चक्कर में पड़ गया हूँ इससे ज़्यादा की सलाहियत[15] मुझमें नहीं है, मैं निगाहे-आश्ना पैदा नहीं कर सकता। अब मुझे इख़्तियार है कि मुझे दुश्मन समझ ले। 'ग़ालिब' को अपनी इन्सानियत की वुसअतें[16] नापने की फ़ुरसत न थी—

यक[17] बार इम्तहाने-हवस[18] भी ज़रूर है
ऐ जोशे-इश्क़े[19]-बादः-ए-मर्द[20] आज़मा मुझे

शाइर का मजाज़ी इश्क़[21], चाहे वह इन्सानियत की वादी-ए-ख़याल[22] में मस्तानावार घूम रहा हो, एक मुख़ातिब[23], एक माशूक़ के बग़ैर बेचैन रहता है—

तम्साले[24]-जल्वः[25] अर्ज़ कर, ऐ हुस्न, कब तलक
आईनः-ए-ख़याल[26] को देखा करे कोई

'ग़ालिब' के दूसरे दौर के मजाज़ी माशूक़ की हस्ती जानी-पहचानी है, उसके एक तरफ़ 'ग़ैर' या 'रक़ीब' दूसरी तरफ़ आईना है, उसके दरवाज़े पर दरवान बैठा रहता है, उसे ख़त लिखे जाते हैं, चाहे मतलब कुछ न हो। उसके नाज़ो-अंदाज़ के बहुत से ख़ाके[27] मत्बूआ[28] दीवान में मिलते हैं। यह बताना बहुत मुश्किल है कि पहले और दूसरे दौर के मजाज़ी इश्क़ और माशूक़ में कितना और

---

१. बयाबाँ में मर जाने वाला २. अब तक ३. कजावा ४. आत्म-शृंगार (आत्माभिव्यक्ति) के कंधों पर ५. समस्या, मसला ६. विवादास्पद ७. पार्थिव ८. सात्विक (ईश्वरीय, आध्यात्मिक) ९. (मूल) तत्त्व १०. चक्कर में फंसा हुआ ११. समर्पण के संस्कार १२. पूरा करने का इच्छुक १३. लेकिन १४. मैत्रीपूर्ण दृष्टि १५. योग्यता १६. विस्तार १७. एक १८. लालसा की परीक्षा १९. प्रेमोन्माद २०. मनुष्य की परीक्षा लेने वाली शराब २१. इह-लौकिक प्रेम २२. कल्पना-लोक २३. जिसे संबोधित किया जा सके २४. बिम्ब, प्रतिरूप २५. छवि, लीला, दृश्य २६. विचारों का दर्पण, कल्पना-जगत् २७. रूपरेखा, चित्र २८. प्रकाशित।

कैसा फ़र्क़ है। तग़ाफ़ुल[1] की कैफ़ियत पर पहले दौर का एक शेर है—

> है किस्वते[2]-उरूजे[3]-तग़ाफ़ुल कमाले[4]-हुस्न
> चश्मे-सियः[5]-ब-मर्ग[6] निगह सोगवार-तर[7]

दूसरे दौर का बहुत मारूफ़[8] शेर है—

> बहुत दिनो में तग़ाफ़ुल ने तेरे पैदा की
> वो एक निगह कि बज़ाहिर[9] निगाह से कम है

यहाँ एक जगह तख़य्युल[10] की जवानी, दूसरी जगह उसकी पुख़्तगी[11] बहर[12] के इन्तख़ाब[13] और अल्फ़ाज़ के तरन्नुम[14] से ज़ाहिर हो जाती है। पहले दौर की इसी ग़ज़ल का एक शेर है जो जवानी के जोश को और ज़्यादा नुमायाँ[15] करता है—

> क़ातिल ब-अज़्मे-ताज़[16] व दिल अज़[17] ज़ख़्म दर गुदाज़[18]
> शमशीर आबदार[19] निगह आबदार-तर

और शाइर अपने बारे में कहता भी है—

> सीमाब[20] बेक़रार[21], 'असद' बेक़रार-तर

पहले दौर की एक ग़ज़ल है जिसमें शायद बिला-इरादा मुलाक़ात और गुफ़्तगू[22] का एक नक्शा पेश कर दिया गया है। पहले शाइर अपने-आपसे कहता है कि आहो-फ़रियाद[23] से कुछ हासिल न होगा—

> असर कमन्दी[24]-ए-फ़रियादे-ना रसा[25] मालूम
> ग़ुबारे-[26]नालः[27] कमींगाहे[28]-मुद्दआ[29] मालूम

फिर मुलाक़ात होती है, शाइर कहता है कि दर-असल आपका हुस्न मेरे

---

१. उपेक्षा २. परिधान ३. उत्थान ४. चरमोत्कर्ष ५. काली आँख ६. मृत्यु से ७. शोकाकुल ८. प्रसिद्ध ९. प्रकटतः १०. विचार, कल्पना ११. परिपक्वता १२. छंद १३. चयन १४. संगीतमयता १५. प्रकट १६. क़ातिल (माशूक़) अपने सौन्दर्य के प्रदर्शन का इरादा किये हुए है १७. से १८. शिथिल १९. पानीदार २०. पारा २१. तड़पता हुआ २२. वार्तालाप २३. आर्त्तनाद २४. ऊँची दीवार या मुंडेर पर चढ़ने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रस्सी २५. न पहुँचने वाली २६. धूल २७. आह २८. घात-स्थल २९. उद्देश्य।

इश्क़ की जल्वः-रेज़ी[1] है, जितना मेरे इश्क़ का हौसला, उतना आपका हुस्न, आईने को न देखिए, उसमें क्या धरा है। फिर ज़रा और शोख़ होकर कहता है कि आपके नाज़ का सारा जादू लिबास की तंगी में है—

बक़द्रे[2]-हौसलः[3]-ए-इश्क़ जल्वःरेज़ी है
वगरनः ख़ानः-ए-आईना[4] की फ़ज़ा[5] मालूम

बहार, दर गिरवे[6]-ग़ुंचा[7] शहर जौलाँ[8] है
तिलिस्मे[9]-नाज़ ब-जुज़[10] तंगी-ए-क़बा[11] मालूम

फिर एक क़हर आलूद[12] के निगाह के जवाब में कहता है कि—

तकल्लुफ़[13] आईनः-ए-दो जहाँ[14] मदारा है[15]
सुराग़े[16]-यक निगहे-क़हर-आश्ना[17] मालूम

रुख़्सत होते हुए कहा जाता है—

'असद' फ़रेफ़्तः[18]-ए-इंतख़ाबे[19]-तर्ज़े[20] जफ़ा[21]
वगरनः दिलबरी-[22]ए-वादः-ए-वफ़ा[23] मालूम

कलाम के आख़िरी इन्तख़ाब में 'ग़ालिब' ने ये शेर छोड़ दिए, मिन्जुमला[24] उनके यह शेर भी—

तिलिस्मे[25]-ख़ाके-कमींगाह[26] यह जहाँ सौदा[27]
ब-मर्ग,[28] तकया[29]-ए-आसाइशे[30]-फ़ना[31] मालूम

'ग़ालिब' का इब्तिदाई[32] कलाम मुश्किल समझा जाता है, और उसके मुश्किल होने में शुबह[33] नहीं। उनको उस रास्ते पर चलना गवारा नहीं था जिस पर सब चलते थे, और सबसे अलग बात कहने की कोशिश में वह ऐसे नक़्श[34] बनाने में

---

१. निष्पत्ति २. के मान से ३. साहस ४. दर्पणघर ५. शोभा ६. गिरवी ७. कली ८. बेड़ी ९. जादू १०. सिवाय ११. लिबास की तंगी १२. प्रकोपभरी १३. बनावट, दिखावा १४. दो दुनियाओं का दर्पण १५. विनम्रता १६. रहस्य १७. प्रकोपवाली दृष्टि १८. आसक्त १९. चुनाव, चयन २०. शैली, ढब २१. सितम २२. आकर्षण २३. वफ़ा का वचन २४. के अतिरिक्त २५. मायाजाल, जादू २६. घात-स्थल की धूल २७. उन्माद २८. मृत्यु २९. सहारा ३०. ऐश्वर्य ३१. अंत, मृत्यु, मिट जाना ३२. प्रारंभिक ३३. संदेह ३४. चित्र।

उलझ जाते हैं जिनको अल्फ़ाज़ के कलम से बनाया ही नहीं जा सकता। इब्तिदाई कलाम के उस मजमूए[1] में, जिसे जनाब अरसी साहब ने अपने एडीशन[2] में "गंजीनः-ए-माना"[3] का उनवान[4] दिया है, बहुत से अशआर ऐसे हैं जो सिर्फ़ मुश्किल हैं और माना[5] के एतबार[6] से क़ाबिले कद्र[7] नहीं हैं, लेकिन उसमें ऐसे मतालिब[8] भी हैं जो शायद आसान, आम-फ़हम[9] ज़बान में अदा[10] ही नहीं हो सकते थे—

दूदे[11]-शम्मः-ए-कुश्तः[12]-ए-गुल[13] बज़्म-सामानी[14] अबस[15]
यक शुबः[16] आशुफ़्तः[17]-नाज़े-सुम्बुलुस्तानी[18] अबस

है हवस[19] महमल[20]-बदोशे[21]-शोख़ी-ए-साक़-ए-मस्त
नक्शः-ए-मय[22] के तसव्वुर[23] में निगहबानी[24] अबस

जब कि नक़्शे-मुद्दआ[25] होवे न जुज़[26] मौजे-सराब[27]
वादी-ए-हसरत[28] में फिर आशुफ़्तः[29] जौलानी[30] अबस

बज़्मे मयनोशी[31] का तसव्वुर कीजिए! शाइर का दिल बुझा-बुझा-सा है, गोया एक फूल था, जिसके रंग शम्मः की तरह रौशन थे, मायूसियों[32] और ग़मों ने उसके शोले को गुल कर दिया है, अब शाइर के दिल में इतनी जान नहीं कि महफ़िल में जान डाल सके, फिर इससे क्या फ़ायदा कि वह रात-भर के लिए बिखरे हुए बालों के ख़याल में दीवाना हो जाए। मगर बज़्म है, साक़ी है, साक़ी की मस्त आँखों की शोख़ी ने शाइर की हवस को अपने कंधों पर सवार कर लिया है और यह ख़याल कि साक़ी और उसकी शोख़ी सिर्फ़ नशे का एक तसव्वुर[33] है हवस और शोख़ी की निगरानी न कर सकेगा। लेकिन निगरानी न कर सका तो उससे क्या हासिल होगा? जब मतलब का पूरा होना भी एक धोखा है, सराब की एक मौज, तो फिर हसरत की वादी में बहकते फिरना बेकार है।

---

१. संकलन २. संस्करण ३. अर्थों का ख़ज़ाना ४. शीर्षक ५. अर्थ ६. दृष्टि से ७. सम्मान्य ८. अर्थ (मतलब का बहुवचन) ९. सबकी समझ में आनेवाली १०. वर्णित, चित्रित ११. धुआँ १२. के प्रकार का १३. फूल १४. सभा का चयन १५. बेकार १६. शंका १७. उद्विग्न १८. अलकें १९. वासना, लालसा २०. कजावा, डोली २१. कंधे पर २२. मदहोशी २३. कल्पना २४. चौकीदारी २५. उद्देश्य-चिह्न २६. सिवाय २७. मृग-मरीचिका की लहर २८. लालसा की घाटी २९. विकल ३०. दौड़ते (भटकते) फिरना ३१. वह महफ़िल जहाँ शराब पी जाती है ३२. निराशाओं ३३. अंगारा।

अगर हम समझें कि शाइरी सिर्फ़ ख़याल-आराई[1] है, बल्कि 'ग़ालिब' की आदत और उस ज़माने के हालात को सामने रखें तो मालूम होगा कि ये तीनों शेर हक़ीक़ी[2] तास्सुरात[3] पेश करते हैं जिन्हें बयान करने के लिए बहुत मुनासिब[4] अंदाज़[5] और इस्तआरे[6] इस्तेमाल किए गए हैं। मसलन्[7] जिस किसी ने खिलते हुए गुलाब के फूल देखे हैं और फिर उन्हें मुरझाते, उनके शोलों को बुझते और उनकी अंजुमन[8] को बेरौनक[9] होते हुए देखा है उसे 'दूदे-शम्मः-ए-गस्तः-ए-गुल' एक मुश्किल तरकीब[10] नहीं, बल्कि एक बहुत ही लतीफ़[11] तश्बीह[12] मालूम होगी।

'ग़ालिब' का सबसे आला[13] शाइराना इस्तआरा[14], जो उनके तख़य्युल[15] की तख़लीक़[16] और उनके कलाम का ख़ालिक़[17] भी है, इन्सान है, और वह बेशतर[18] अपनी इन्सानियत की गूनागूँ[19] कैफ़ियतों में मह्‌ब[20] नज़र आते हैं। इन्सान वह मुक़ाम[21] है जहाँ से उनके तसव्वुरात[22] और उनकी आरज़ुओं के क़ाफ़िले रवाना होते हैं और सारी बादियः-पैमाई[23] और 'दरियाकशी'[24] के बाद फिर उसी मुक़ाम पर वापस आ जाते हैं। इन्सान बाग़ है और फूलों का हुजूम है, दश्त[25] और सहरा है, माशूक़ के लिए तड़पता हुआ आशिक़ है, वुजूद[26] और अदम[27] की बाज़ी का मुहरा है, आगही[28] का शिकार है, बाग़ी है, तक़दीर की चक्की में पिसा हुआ दाना है, एक तमाशाई है जो दूर खड़ा दुनिया के कारोबार को देखता है, कभी इस पर तंज़[29] करता है, कभी चुटकियों में उड़ाता है। इन्सान गुनहगारी का एक हसीन मुजस्समा[30] है जो रहमत के दिल को मोह लेता है, एक दीवाना जो किसी भी वक़्त क़यामत[31] बरपा कर सकता है। बेशक़ 'ग़ालिब' ने इन्सान को दरयाफ़्त[32] नहीं किया, शाइर का मन्सब[33] यह होता है कि इन्सान की नज़र में वह क़ुव्वत[34] पैदा करे जिससे वह अपने आपको और अपनी दुनिया को हर पहलू से देख सके। 'ग़ालिब' ने इस मन्सब का हक़ अदा किया, शौक़ को, जो इन्सानियत का जौहर[35] है, आलमे-वुजूद[36] की सैर करना सिखाया और उसे हिम्मत दिलाई कि मुस्करा-कर या ख़फ़ा होकर ज़िन्दगी की ऐसी तमाम शर्तों को नामंज़ूर करे जिनसे उसकी आज़ादी महदूद[37] होती हो या उसके मरतबः-ए-इन्सानी[38] मे कमी पैदा होती हो।

---

१. कल्पना का बनाव-शृंगार करना, काल्पनिक २. वास्तविक ३. अनुभूतियाँ ४. उचित ५. शैली ६. रूपक ७. उदाहरणार्थ ८. महफ़िल ९. शोभाहीन १०. रचना, रचना-प्रणाली ११. सूक्ष्म १२. उपमा १३. श्रेष्ठ १४. काव्य-रूपक १५. कल्पना १६. रचना, कृति १७. स्रष्टा १८. अधिकांश १९. रंगारंग, विभिन्न २०. तल्लीन २१. स्थल २२. कल्पनाओं २३. जंगल २४. नदी पी जाना २५. जंगल २६. अस्तित्व २७. शून्य, अनस्तित्व २८. ज्ञान २९. व्यंग्य ३०. मूर्ति ३१. प्रलय ३२. खोजना, खोजा ३३. काम, कर्तव्य ३४. शक्ति ३५. सार ३६. अस्तित्वलोक ३७. सीमित ३८. मानवीय सम्मान।

: ३ :

चयन

गदा[१]-ए-ताक़ते-तक़रीर[२] है ज़बाँ तुझ से
कि ख़ामुशी को है पैराय:[३]-ए-बयाँ[४] तुझ से

फ़सुर्दगी[५] में है फ़रियादे-बेदिलाँ[६] तुझ से
चिराग़े-सुबह-ओ-गुले-मौसमे ख़िज़ाँ तुझ से

बहारे-हैरते[७]-नज़्ज़ारा[८], सख़्तजानी[९] है
हिना[१०]-ए-पा[११]-ए-अजल[१२], ख़ूने-कुश्तगाँ[१३] तुझ से

परी ब: शीशा[१४]-ओ-अक्से[१५]-रुख़[१६] अन्दर आईना
निगाहे-हैरते-मश्शात:[१७] ख़ूँफ़िशाँ[१८] तुझ से

तरावते[१९]-सहर-ईजादी[२०]-ए-असर[२१] यकसू[२२]
बहारे-नाला[२३] व रंगीनी-ए-फ़ुग़ाँ[२४] तुझ से

चमन-चमन गुले-आईन:[२५] दर कनारे-हवस[२६]
उमीद महवे[२७]-तमाशा-ए-गुलसिताँ[२८] तुझ से

---

१. भिखारी २. वाक्‌शक्ति ३. शैली ४. वर्णन ५. उदासी ६. दुखी दिलों की ७. आश्चर्य ८. दर्शन ९. कठिन १०. मेंहदी ११. पैर १२. मौत १३ कुचले हुओं का ख़ून १४. शीशे में बन्द परी—अर्थात् शराब १५. प्रतिबिम्ब १६. मुख १७. शृंगार करने वाली १८. रक्ताभ १९. शीतलता २०. अनुभूतिपरक २१. प्रभाव २२. एकाग्रचित्तता (१९-२२. अनुभूतिपरक प्रभाव की शीतलता की एकाग्रचित्तता) २३. आर्त्तनाद का बसंत २४. आहों की रंगीनी २५. दर्पण के फूल २६. वासना के आलिंगन में २७. तल्लीन २८. गुलशन का तमाशा।

नियाज़[1], पर्दा-ए-इज़्हारे[2]-ख़ुदपरस्ती[3] है
जबीने[4]-सजद: फ़िशाँ[5] तुझ से, आस्ताँ[6] तुझ से

बहान:-जूई[7]-ए-रहमत[8], कमींगरे[9]-तक़रीब[10]
वफ़ा-ए-हौसला[11] व रंजे-इम्तिहाँ[12] तुझ से

'असद'-तिलिस्मे-क़फ़स[13] में रहे क़मायत है
खिराम[14] तुझ से, सबा[15] तुझ से, गुलसिताँ तुझ से

जज्ब:[16]-ए-बे इख़्तियारे[17] शौक़[18] देखा चाहिए
सीन:-ए-शमशीर से बाहर है दम शमशीर का

जुनूँ[19] गर्म इन्तज़ार[20] व नाल: बेताबी कमन्द[21] आया
सवेदा[22], ता ब-लब[23], जंज़ीरिए[24]-दूदे[25] सपन्द[26] आया

तग़ाफ़ुल[27], बदगुमानी[28], बल्कि मेरी सख़्तजानी[29] से
निगाहे-बेहिजाबे[30]-नाज़ को बीमे गज़न्द[31] आया

जराहत[32]-तुहफ़ा[33], अल्मास[34]-अर्मुग़ाँ[35], दाग़े-जिगर हदिया[36]
मुबारकबाद, 'असद', ग़मख़्वारे[37]-जाने-दर्दमन्द[38] आया

---

१. विनय २. अभिव्यक्ति ३. आत्म-पूजन ४. माथा ५. साष्टांग प्रणाम करने वाला ६. ड्योढ़ी ७. बहाना ढूँढ़ना ८. कृपा ९. घात १०. प्रसंग ११. साहस का साथ १२. परीक्षा का दुख १३. पिंजरे का मायाजाल १४. मस्तानी चाल १५. प्रातः समीर १६. भावातिरेक १७. व्याकुल १८. अभिलाषा १९. उन्माद, धुन २०. प्रतीक्षारत २१. नाल:=आह, बेताबी=व्याकुलता, कमंद=रस्सी २२. दिल का दाग़ २३. होंठों तक २४. शृंखला बनाता हुआ २५. धुआँ २६. आतिशदान २७. उपेक्षा २८. असंतोष, मनोमालिन्य २९. सबल जिजीविषा ३०. निरावरण ३१. कष्ट का डर ३२. चोट ३३. उपहार ३४. हीरा ३५. भेंट ३६. उपहार ३७. सुहृदय मित्र, सहानुभूति रखने वाला ३८. दुखी प्राण।

पूछा था गरचे[1] यार ने अहवाले-दिल[2], मगर
किस को दमाग़े[3]-मिन्नते[4]-गुफ़्तो[5]-शुनूद[6] था

ख़ुर[7] शबनम-आइना[8] न हुआ, वरना मैं 'असद'
सर-ता-क़दम[9] गुज़ारिशे[10]-ज़ौके सजूद[11] था

है कहाँ तमन्ना का दूसरा क़दम, या रब ?
हमने दस्ते-इम्काँ[12] को एक नक़्शे-पा[13] पाया

इश्क़ से तबीअत ने ज़ीस्त[14] का मज़ा पाया
दर्द की दवा पाई, दर्दे-बेदवा[15] पाया

सादगी-ओ-पुरकारी[16], बेख़ुदी[17]-ओ-हुशियारी
हुस्न को तग़ाफ़ुल में जुराइत-आज़मा[18] पाया

ग़ुन्चा[19] फिर लगा खिलने, आज हमने अपना दिल
ख़ूँ किया हुआ देखा, गुम किया हुआ पाया

शौक़, हर रंग[20], रक़ीबे[21]-सरो-सामाँ[22] निकला
क़ैस, तस्वीर के परदे में भी उरियाँ[23] निकला

बू-ए-गुल[24] नालः-ए-दिल[25], दूदे चराग़े-महफ़िल[26]
जो तिरी बज़्म से निकला, सो परीशाँ निकला

---

१. यद्यपि २. दिल का हाल ३. समझ ४. चाटुकारिता ५-६. कहने-सुनने, वार्तालाप ७. सूरज ८. ओस का जानकार ९. सिर से पाँव तक १०. विनय ११. सिर झुकाने की आनंदमय अभिरुचि १२. संभावनाओं का जंगल १३. पाँव का निशान १४. जीवन १५. वह दर्द जिसकी कोई दवा न हो १६. चालाकी १७. ध्यानशून्यता, मस्ती १८. हिम्मत की परीक्षा लेने वाला १९. कली २०. हर तरह, हर स्थिति में २१. प्रतिद्वन्द्वी २२. साज-सामान २३. नग्न २४. फूल की सुगंध २५. दिल की आह २६. महफ़िल के चिराग़ का धुआँ।

सागरे[1]-जल्वः[2]-ए-सरशार[3] है हर ज़र्रः-ए-ख़ाक[4]
शौक़े-दीदारे-बला आईनः-सामाँ[5] निकला

शोरे-रुस्वाई[6]-ए-दिल देख कि यक नालः-ए-शौक़[7]
लाख परदे में छुपा फिर वही उरियाँ[8] निकला

मैं भी माज़रे[9] बुनूँ हूँ, 'असद'-ए-ख़ाना-ख़राब[10]
पेशवा[11] लेने मुझे घर से बयाबाँ[12] निकला

दह्र[13] में नक़्शे-वफ़ा[14] वजहे-तसल्ली[15] न हुआ
है यह वो लफ़्ज कि शर्मिन्दः-ए-मानी[16] न हुआ

मैंने चाहा था कि अन्दोहे-वफ़ा[17] से छूटूँ
वो सितमगर मेरे मरने पे भी राज़ी न हुआ

दिल-गुज़र-गाहे[18] ख़याले मय-ओ-साग़र ही सही
गर नफ़स[19], जाद[20]-ए-सर-मंज़िले तक़वी[21] न हुआ

किस से महरूमी-ए-क़िस्मत[22] की शिकायत कीजे
हम ने चाहा था कि मर जाएँ, सो वो भी न हुआ

वुसअते[23]-रहमते-हक़[24] देख, कि बख़्शा जावे
मुझ सा काफ़िर कि जो ममनूने[25]-मआसी न हुआ[26]

---

१. प्याला २. दर्शन ३. भरपूर ४. धूलिकण ५. दर्पण का प्रबंध करने वाला ६. बदनामी ७. शौक़ की आह ८. नग्न ९. विवश १०. बर्बाद ११. अगवानी करने १२. उजड़े हुए वन में १३. संसार १४. निबाह का चित्र १५. संतुष्टि का कारण १६. सार्थक १७. वफ़ा के दुःख १८. रास्ता १९. साँस २०. रास्ता २१. परलोक की मंज़िल २२. दुर्भाग्य २३. विस्तार २४. ईश-कृपा २५. कृतज्ञ २६. गुनाहों का।

दीद:-ता-दिल[1] है यक आईना चराग़ाँ[2] किस ने
ख़लवते[3]-नाज पे पेराय:[4]-ए-महफ़िल बाँधा

ना-उमीदी[5] ने बतक़रीबे[6]-मज़ामीने[7] ख़ुमार[8]
कूच:[9]-ए मौज[10] को ख़मयाज़:-ए-साहिल[11] बाँधा

मुतरिबे-दिल[12] ने मेरे तारे-नफ़स[13] से, 'ग़ालिब'
साज़ पर रिश्ता, प-ए-नग्म:[14]-ए-'बेदिल'[15] बाँधा

प-ए-नज़्रे-करम[16], तुहफ़ा[17] है शर्मे-ना-रसाई[18] का
ब-ख़ूँ[19] ग़लतीद:[20]-ए-सदरंग[21] दावा पारसाई[22] का

दरेग़[23], ऐ नातवानी[24], वरना हम ज़ब्त-आश्नायाँ[25] ने
तिलिस्मे-रंग[26] में बाँधा था अहदे[27]-उस्तवार[28] अपना

अगर आसूदगी[29] है मुद्दआ[30]-ए-रंजे बेताबी[31]
निसारे[32]-गर्दिशे[33]-पैमान:[34]-ए-मय, रोज़गार[35] अपना

गिल: है शौक़ को दिल में भी तंगी-ए-जा[36] का
गुहर[37] में महव[38] हुआ, इज़्तिराब[39] दरिया का

---

१. दृष्टि से दिल तक २. प्रकाशित, रौशन ३. एकांत ४. ढंग ५. निराशा ६. सिलसिले में ७. विषयों के ८. मस्ती का उतार ९. गली १०. लहर ११. तट का अंत, सीमा, अँगड़ाई १२. दिल का गायक १३. साँस के तार १४. नग़्मे के लिए १५. 'बेदिल' नामक शाइर से सिलसिला मिलाने के लिए १६. उसकी कृपा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए १७. उपहार १८. न पहुंच पाने की शर्म १९. ख़ून में २०. सराबोर २१. शतरंगी २२. पवित्रता, सच्चरित्रता २३. बस कर २४. दुर्बलता २५. सब्र करने वालों २६ रंग के माया जाल में २७. निश्चय २८. दृढ़ २९. संतोष ३०. उद्देश्य ३१. व्याकुलता ३२. न्यौछावर ३३. आवर्त्तन, दौर ३४. मदिरापात्र ३५. जीवन-व्यापार ३६. जगह की कमी ३७. हीरा ३८. डूब गई ३९. व्याकुलता।

सुराग़[1]-आवारः-ए-अर्ज़े-दो-आलम[2] शोरे-महशर[3] हूँ
पर-अफ़शाँ[4] है ग़ुबार[5] आँ[6] सूए-सहरा-ए-अदम[7] मेरा

न हो वहशत-कशे[8]-दर्से[9]-सराबे[10]-सत्तर[11]-आगाही[12]
ग़ुबारे राह[13] हूँ, बेमुद्दआ[14] है पेचो-खम[15] मेरा

सरापा[16] रहने-इश्क़[17]-ओ-नागुज़ीरे[18]-उल्फ़ते-हस्ती[19]
इबादत[20] बर्क़[21] की करता हूँ, और अफ़सोस हासिल[22] का

ब-क़द्रे-ज़र्फ़[23] है, साक़ी, ख़ुमारे-तिश्नः-कामी[24] भी
जो तू दरिया-ए-मय[25] है, तो मैं ख़मयाज़ा[26] हूँ साहिल[27] का

लबे-ख़ुश्क[28] दर-तश्नगी[29] मुर्दगाँ[30] का
ज़ियारतक़दः[31] हूँ दिल आज़ुर्दगाँ[32] का

हमः[33] नाउमीदी[34], हम बदगुमानी[35]
मैं दिल हूँ फ़रेबे-वफ़ा ख़ुर्दगाँ[36] का

शगुफ़्तन[37] कमींगाहे[38]-तक़रीब जूई[39]
तसव्वुर[40] हूँ बेमूजिब[41] आज़ुर्दगाँ[42] का

---

१. तलाश करना, भेद २. दोनों दुनियाओं का भेद पाने की आतुरता में आवरा ३. प्रलय का हाहाकार ४. पंख फैलाए हुए ५. धूल ६. वह ७. शून्य के मरुस्थल की ओर ८. घबराने वाला ९. पाठ १०. मृगमरीचिका ११. पंक्ति १२. ज्ञान १३. पथ की धूल १४. निरुद्देश्य १५. बल-पेच १६. सिर से पाँव तक १७. प्रेम-धरोहर १८. अवश्यभावी १९. जीवन-प्रेम २०. पूजा २१. बिजली २२. खलिहान, उपलब्धि, फ़सल २३. सामर्थ्यानुसार २४. प्यास का ख़ुमार २५. शराब की नदी २६. अंत, सीमा, अँगड़ाई २७. तट २८. सूखे होंठ २९. प्यास ३०. मुर्दों ३१. तीर्थस्थान ३२. परेशान, पीड़ित ३३. पूर्ण ३४. निराशा ३५. पूर्ण संदेश, असंतोष ३६ प्रेम का धोखा खाए हुए ३७. खिलना ३८. घात-स्थल ३९. आयोजन ४०. के लिए ४१. कल्पना ४२. अकारण।

ग़रीबे-सितम[1]-दीदः-ए-बाज़[2] गश्तन[3]
सुख़न[4] हूँ, सुखनबर-लब-आवुर्दगाँ[5] का

सरापा[6] यक आईना-दारे[7]-शिकस्तन[8]
इरादा हूँ, यक आलम-अफ़सुर्दगाँ[9] का

ब-सूरत[10] तकल्लुफ़, ब-मानी तास्सुफ़[11]
'असद', मैं तबस्सुम[12] हूँ पज़मुर्दगाँ[13] का

लताफ़त[14] बे-कसाफ़त[15], जल्वः पैदा कर नहीं सकती
चमन, ज़ंगार[16] है आईनः-ए-बादे-बहारी[17] का

हरीफ़े[18]-जोशिशे[19]-दरिया[20] नहीं, ख़ुद्दारिए-साहिल[21]
जहाँ साक़ी हो तू, बातिल[22] है दावा होशियारी का

हमने वहशतकदः[23]-ए बज़्मे जहाँ में, जूँ शम्मः
शोलः-ए-इश्क़[24] को अपना सरो-सामाँ[25] समझा

मिली न वुसअते[26]-जौलाने[27]-यक जुनूँ हम को
अदम[28] को ले गए दिल में ग़ुबार सहरा[29] का

देखी वफ़ा-ए-फ़ुरसते-रंजो-निशाते[30]-दह्‌र[31]
ख़मयाज़ा[32] यक, दराज़ी-ए-उम्रे-ख़ुमार[33] था

---

१. शोकग्रस्त २. खुली आँख ३. हो जाना ४. कथन ५. होंठों पर लाया हुआ ६. आपादमस्तक ७. प्रकट ८. टूटना ९. बुझा हुआ १०. प्रकटत: ११. अफ़सोस १२. मुस्कराहट १३. मुर्झाए हुए लोग १४. सूक्ष्मता १५. मलिनता के बिना १६. जंग १७. वसंतऋतु की वायु का दर्पण १८. रोकने वाला, प्रतिद्वन्द्वी १९. ज्वार २०. नदी २१. तट का आत्माभिमान २२. मिथ्या २३. जंगली घर, डरावना (डर-) घर २४. प्रेम-अंगार २५. माल-असबाब २६. विस्तार २७. दौड़ का मैदान २८. अनस्तित्त्व २९. रेगिस्तान ३०. ख़ुशी ३१. दुनिया ३२. दो फैले हुए हाथों के बीच की जगह ३३. ख़ुमार (मस्ती) की उम्र लम्बी होना।

ज़र्रः-ज़र्र, साग़रे-मयख़ाना-ए-नैरंग[१] है
गर्दिशे-मजनूँ[२], ब चश्मकहाए-लैला[३] आश्ना[४]

शौक़, है सामाँ तराज़े-नाज़िशे-अरबाबे-इज्ज़[५]
ज़र्रः सहरा दस्तगाह औ क़तरा दरिया आश्ना[६]

मैं और एक आफ़त का टुकड़ा वह दिले-वहशी कि है
आफ़ियत[७] का दुश्मन और आवारगी का आश्ना

सरासर[८] ताख़तन[९] को शशजहत[१०] यह अर्सा जौलाँ[११] था
हुआ वामाँदगी[१२] से रहरवाँ[१३] की, फ़र्क़ मंजिल का

बस कि दुश्वार है हर काम का आसाँ होना
आदमी को भी मयस्सर[१४] नहीं इन्साँ होना

गिरियः[१५] चाहे है ख़राबी[१६] मेरे काशाने[१७] की
दरो-दीवार से टपके है बयाबाँ होना

इश्रते[१८]-क़त्लगहे[१९]-अहले-तमन्ना[२०] मत पूछ
ईदे-नज़्ज़ारा[२१] है, शमशीर का उरियाँ[२२] होना

हर रंग में जला 'असद'-ए-फ़ित्नः इंतजार[२३]
परवानः - ए - तजल्ली[२४] - ए - शम्मे - ज़हूर[२५] था

---

१. दुनिया के शराबघर का प्याला २. मजनूँ की भटकन ३. लैला की आँखों के संकेत ४. परिचित मित्र ५. विनम्र लोगों से गर्व की सामग्री जुटाने वाला ६. प्रत्येक कण मरुस्थल की और प्रत्येक बूँद सागर की विशालता लिए हुए है ७. सुख-चैन, शांति ८. निरंतर ९. दौड़ते रहना १०. छः दिशाएँ (चारों दिशाएँ और ऊपर व नीचे) ११. मैदान १२. थकन १३. पथ-प्रदर्शक १४. भाग्य में १५. रुदन १६. बर्बादी १७. घर १८. सम्पन्नता १९. हत्याघर २०. इच्छा-अभिलाषा करने वाले २१. दृश्य की ईद (प्रसन्नता) २२. नंगा २३. जिसे फ़ित्नों की प्रतीक्षा हो, पतंगा २४. प्रकाश २५. जीवन-दीप।

हर गाम[1] आबले[2] से है, दिल, दर-तहे-क़दम[3]
क्या बीम[4] अहले-दर्द[5] को सख़्ती-ए-राह[6] का

रहमत[7] अगर क़ुबूल[8] करे, क्या बईद[9] है
शर्मिन्दगी से उज़्र[10] न करना गुनाह का

दिल मिरा सोज़े-निहाँ[11] से बे-महाबा[12] जल गया
आतिशे-ख़ामोश[13] के मानिन्द, गोया जल गया

दिल में ज़ौक़े-वस्ल[14]-ओ-यादे यार[15] तक बाक़ी नहीं
आग इस घर में लगी कि जो था जल गया

अर्ज़ कीजे जौहर-अंदेशा[16] की गर्मी कहाँ ?
कुछ ख़याल आया था वहशत[17] का कि सहरा जल गया

दिल नहीं, तुझको दिखाता, वरना, दाग़ों की बहार
इस चराग़ाँ[18] का, करूँ क्या, कार-फ़रमा[19] जल गया

मैं हूँ अफ़सुर्दगी[20] की आरज़ू[21], 'ग़ालिब', कि दिल
देख कर तर्ज़े-तपाके-अहले-दुनिया[22] जल गया

रब्ते[23]-यक शीराज़ः-ए-वहशत[24] है, अज्ज़ा-ए-बहार[25]
सब्ज़ः[26] बेगानः, सबा[27] आवारा, गुल ना-आश्ना[28]

---

१. क़दम २. फफोला ३. क़दमों के नीचे कुचला हुआ ४. निराशा ५. दर्द से पीड़ित लोग ६. मार्ग की कठिनाइयाँ ७. कृपा ८. स्वीकार ९. मुश्किल १०. बहाना, शिकवा ११. आंतरिक जलन १२. एकदम, निर्भयता-पूर्वक १३. मूक अग्नि १४. मिलन की चाह १५. प्रिय की स्मृति १६. चिंतन-तत्त्व १७. जंगलीपन, जंगल १८. दीपमाला १९. दीपक जलाने वाला, कार्यकर्त्ता २०. उदास २१. अभिलाषा २२. दुनिया के लोगों के व्यवहार का ढंग २३. संबंध २४. उन्माद के संग्रह को बाँधने वाला सूत्र (डोरा) २५. वसंत के तत्त्व २६. हरियाली २७. प्रातः समीर २८. अपरिचित ।

दम लिया था न क़यामत ने हनोज़[1]
फिर तेरा वक़्ते-सफ़र याद आया

कोई वीरानी सी वीरानी है
दश्त[2] को देख के घर याद आया

मैंने मजनूं पे लड़कपन में, 'असद'
संग[3] उठाया था कि सर याद आया

तौफ़ीक़[4] ब: अन्दाज़:-ए-हिम्मत[5] है अज़ल[6] से
आँखों में है वो क़तर: कि गुहर[7] न हुआ था

जब तक कि न देखा था क़दे-यार का आलम
मैं मुत्क़िद:[8]-ए-फ़ित्न:-ए-महशर[9] न हुआ था

दरिया-ए-मआसी[10] तुनक-आबी[11] से हुआ खुश्क
मेरा सरे-दामन[12] भी अभी तर न हुआ था

अर्ज़े-नियाज़े-इश्क़[13] के क़ाबिल नहीं रहा
जिस दिल पे नाज़[14] था मुझे वो दिल नहीं रहा

जाता हूँ दाग़े-हसरते-हस्ती लिए हुए
हूँ शम्म:-ए-कुश्त:[15], दरखुरे-महफ़िल[16] नहीं रहा

वा[17] कर दिए हैं शौक़ ने बन्दे-नक़ाबे-हुस्न[18]
ग़ैर-अज़-निगाह[19] अब कोई हाइल[20] नहीं रहा

---

१. अभी तक २. जंगल ३. पत्थर ४. सामर्थ्य ५. साहस के अनुरूप ६. सृष्टि का आरंभ ७. मोती ८. विश्वास करने वाला ९. क़मायत का फ़ित्ना १०. पाप की नदी ११. पानी की कमी १२. दामन का सिरा १३. प्रेम-याचना १४. गर्व १५. बुझी हुई शमा १६. महफ़िल के योग्य १७. खोलना १८. सौन्दर्य के नक़ाब के बंद १९. निगाह के अतिरिक्त २०. बाधक (बाधा)।

गो मैं रहा रहीने[1] सितमहाए-रोज़गार[2]
लेकिन तिरे ख़याल से ग़ाफ़िल[3] नहीं रहा

हासिले-उल्फ़त[4] न देखा जुज़[5] शिकस्ते आरज़ू[6]
दिल-ब-दिल-पैवस्त:[7], गोया[8], यक लबे-अफ़सोस था

कम जानते थे हम भी ग़मे-इश्क़ को पर अब
देखा, तो कम हुए पे, ग़मे-रोज़गार था

अहबाब[9], चार:साज़ी-ए-वहशत[10] न कर सके
जिन्दाँ[11] में भी, ख़याल, बयाबाँ-नवर्द[12] था

महरम[13] नहीं है तू ही, नवाहाए-राज़[14] का
याँ वरना जो हिजाब[15] है, परद: है साज़ का

रंगे - शिकस्त:,[16] सुब्हे - बहारे - नज़ारा है
यह वक़्त है शगुफ़्तने[17] - गुलहाए - नाज़[18] का

दोस्त ग़मख़्वारी में मेरी, सअई[19] फ़रमावेंगे क्या ?
ज़ख़्म के भरने तलक, नाख़ुन न बढ़ जावेंगे क्या ?

बेनियाज़ी[20] हद से गुज़री, बन्द:परवर, कब तलक
हम कहेंगे हाले-दिल,[21] और आप फ़रमावेंगे "क्या ?"

---

१. पीड़ित २. संसार के अत्याचारों से ३. उदासीन ४. प्रेम (मित्रता) की उपलब्धि ५. सिवाय ६. अभिलाषा की पराजय ७. दिल से मिला हुआ दिल ८. मानो ९. मित्र १०. उन्माद का उपचार ११. जेल १२. जंगल में घूमना (भटकना) १३. जानने वाला १४. भेदभरी आवाज़ों १५. पर्दा १६. उड़ा हुआ रंग १७. खिलने १८. नाज़ो-अदा रूपी फूल १९. सहायता, का यत्न २०. उदासीनता, उपेक्षा २१. दिल का हाल ।

हज़रते नासेह[1] गर आवें, दीदः-ओ-दिल फ़र्शे-राह[2]
कोई मुझको यह तो समझा दो कि समझावेंगे क्या ?

गर किया नासेह ने हम को क़ैद, अच्छा यूँ सही
ये जुनूने इश्क[3] के अंदाज़[4] छुट जावेंगे क्या ?

ख़ानः ज़ादे-ज़ुल्फ़[5] हैं, ज़ंजीर से भागेंगे क्यों ?
हैं गिरफ़्तारे-वफ़ा,[6] ज़िन्दाँ[7] से घबरावेंगे क्या ?

है अब इस मामूरे[8] में क़हते-ग़मे उल्फ़त,[9] 'असद'
हम ने यह माना कि दिल्ली में रहे, खावेंगे क्या ?

इशरते क़तरः[10] है, दरिया में फ़ना[11] हो जाना
दर्द का हद से गुज़रना है, दवा हो जाना

अब जफ़ा से भी है महरूम[12] हम, अल्ला अल्ला
इस क़दर - दुश्मने - अरबाबे - वफ़ा[13] हो जाना

हवस[14] को है निशाते कार[15] क्या क्या
न हो मरना, तो जीने का मज़ा क्या ?

निगाहे बेमुहाबा[16] चाहता हूँ
तग़ाफ़ुलहाए-तम्कीं-आज़मा[17] क्या ?

---

१. उपदेशक महोदय २. (उनके स्वागत में) आंखें और दिल बिछे हुए हैं ३. प्रेमोन्माद ४. रंग-ढंग ५. जुल्फ़ों के क़ैदी ६. प्रेम में बंदी ७. कारागार, जेल ८. नगर ९. प्रेम के दुःखों का अकाल १०. बूँद का ऐश्वर्य ११. विलीन १२. वंचित १३. चाहने वालों का शत्रु १४. लालसा १५. काम करने की उमंग १६. निःसंकोच दृष्टि १७. संतोष की परीक्षा लेने वाली उपेक्षा।

नफ़स[1] मौजे[2]-मुहीते[3]-बेख़ुदी[4] है
यग़ाफ़ुलहाए-साक़ी[5] का गिला क्या ?

दिमाग़े-अत्रे-पैराहन[6] नहीं है
ग़मे-आवारगीहाए-सबा[7] क्या ?

सुन, ऐ ग़ारतगरे[8]-जिन्से-वफ़ा[9] सुन
शिकस्ते-क़ीमते-दिल[10] की सदा क्या ?

यह क़ातिल वादा-ए-सब्र-आज़मा[11] क्यों
यह काफ़िर फ़ित्नः-ए-ताक़त रुबा[12] क्या ?

बला-ए-जाँ[13] है, 'ग़ालिब', उसकी हर बात
इबारत[14] क्या, इशारत[15] क्या, अदा क्या ?

'असद' सौदा-ए-सरसब्जी[16] से है तस्लीम[17] रंगीतर[18]
किश्ते-ख़ुश्क[19] उसका, अब्रे-बे परवा ख़िराम[20] उसका

मैं और बज़्मे-मय[21] से यूँ तिश्नःकाम[22] आऊँ
गर[23] मैंने की थी तौबा, साक़ी को क्या हुआ था ?

दरमाँदगी[24] में 'ग़ालिब' कुछ बन पड़े तो जानूँ
जब रिश्तः बेगिरः[25] था, नाख़ुन गिरःकुशा[26] था

---

१. साँस २. तरंग ३. सागर ४. मस्ती ५. साक़ी की उपेक्षा ६. पहनने के वस्त्र के इत्र का ध्यान ७. प्रभात समीर की आवारगी का दुख ८. लुटेरा ९. प्रेम रूपी धन १०. दिल की कीमत का टूटना ११. संतोष की परीक्षा लेने वाला वचन १२. शक्ति चुराने वाला फ़ितना १३. जान के लिए मुसीबत १४. लिखावट १५. संकेत १६. हरे-भरे होने का उन्माद १७. अपनी स्थिति की स्वीकृति, सन्तोष १८. अधिक रंगीन १९. सूखा खेत २०. लापरवाह चलने वाला बादल २१. शराब की महफ़िल २२. प्यासा २३. यदि २४. दुख २५. जिसमें कोई गाँठ-गुत्थी न हो २६. गाँठ खोलने वाला।

घर हमारा, जो न रोते तो भी, वीराँ[1] होता
वहर[2] गर बहर न होता, बो बयाबाँ होता

तुम से बेजा[3] है मुझे अपनी तबाही का गिला
इस में कुछ शाइबः-ए-ख़ूबी-ए तक़दीर[4] भी था

क़ैद में है, तेरे वहशी को, वही ज़ुल्फ़ की याद
हाँ, कुछ एक रंजे-गराँबारी-ए-ज़ंजीर[5] भी था

बिजली इक कौंद गयी आँखों के आगे तो क्या ?
बात करते, कि मैं लब-तिश्नः-ए-तक़रीर[6] भी था

रेख़्ते[7] के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो, 'ग़ालिब'
कहते हैं, "अगले ज़माने में कोई 'मीर' भी था"

तेरे वादे पे जिये हम, तो यह जान झूठ जाना
कि ख़ुशी से मर जाते, अगर एतबार[8] होता

कोई मेरे दिल से पूछे, तीरे-नीमकश[9] को
यह ख़लिश[10] कहाँ से होती, जो जिगर के पार होता

यह कहाँ की दोस्ती है कि बने हैं दोस्त नासेह[11]
कोई चारःसाज़[12] होता, कोई ग़मगुसार[13] होता

---

१. बरबाद, उजाड़ २. समुद्र ३. अनुचित ४. क़िस्मत की ख़ूबी का हाथ ५. बेड़ी के बोझ का दुख ६. भाषण सुनने के उत्सुक ७. दिल्ली की ठेठ उर्दू बोली ८. विश्वास ९. आधा खींचा हुआ तीर १०. चुभन, पीड़ा ११. उपदेशक १२. उपचारक १३. सहानुभूति रखने वाला।

रगे़-संग[1] से टपकता वो लहू कि फिर न थमता
जिसे ग़म समझ रहे हो, यह अगर शरार[2] होता

ग़म अगरचे जाँ-गुसल[3] है, पै कहाँ बचें? कि दिल है
ग़मे-इश्क़ गर न होता, ग़मे-रोज़गार होता

कहूँ किससे मैं कि क्या हैं? शबे-ग़म[4] बुरी बला है
मुझे क्या बुरा था मरना, अगर एक बार होता

हुए मर के हम जो रुस्वा[5], हुए क्यों न ग़र्क़े-दरिया[6]
न कभी जनाज़ा उठता, न कहीं मज़ार होता

ये मसाइले-तसव्वुफ़[7], यह तेरा बयान 'ग़ालिब'
तुझे हम वली[8] समझते, जो न बादःख़्वार[9] होता

न था कुछ, तो ख़ुदा था, कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझ को होने ने, न होता मैं, तो क्या होता

हुई मुद्दत कि 'ग़ालिब' मर गया, पर यार आता है
वो हर बात पर कहना कि "यूँ होता, तो क्या होता?"

दर्द, मिन्नत-कशे-दवा[10] न हुआ
मैं न अच्छा हुआ, बुरा न हुआ

---

१. पत्थर की नस २. चिनगारी ३. प्राणघातक ४. विषाद-रात्रि ५. बदनाम ६. नदी में डूबे ७. आध्यात्मिकता की समस्याएँ ८. औलिया ९. शराबी १०. दवा का आभारी।

है ख़बर गर्म उनके आने की
आज ही घर में बोरिया न हुआ

क्या वो नमरूद[1] की ख़ुदाई थी
बंदगी[2] में मेरा भला न हुआ

जान दी, दी हुई उसी की थी
हक़[3] तो यह है कि हक़[4] अदा न हुआ

बंदगी में भी वुह आज़ादः-ओ ख़ुदबी[5] हैं कि हम
उलटे फिर आए, दरे-काबा[6] अगर वा[7] न हुआ

सीने का दाग़ है वो नालः[8] कि लब तक न गया
ख़ाक का रिज़्क़[9] है, वो क़तरा कि दरिया न हुआ

क़तरे में दजला[10] दिखाई न दे, और जुज़्व[11] में कुल[12]
खेल लड़कों का हुआ, दीदः-ए-बीना[13] न हुआ

थी ख़बर गर्म कि 'ग़ालिब' के उड़ेंगे पुरज़े
देखने हम भी गए थे, पै तमाशा न हुआ

उरूजे-नाउमीदी[14] चश्मे-ज़ख़्मे-चर्ख़[15] क्या जाने
बहारे बेख़िज़ाँ[16] अज़[17] आहे-बेतासीर[18] है पैदा

---

१. एक प्राचीन बादशाह जो अपने आपको ख़ुदा कहता था २. पूजा, आराधना ३. सच ४. कर्त्तव्य, भूमिका ५. स्वच्छंद और अभिमानी ६. काबे का दरवाज़ा ७. खुला ८. आह, रुदन ९. खुराक १०. एक प्रख्यात नदी ११. अंश १२. पूर्ण १३. देखने वाली आंखें १४. निराशा का उत्थान १५. आकाश के घाव की आँख १६. बिना पतझड़ की बहार १७-१८. प्रभावहीन विलाप (रुदन)।

दूदे[1]-शम्मे-कुश्त:[2]-ए-गुल[3], बज़्म-सामानी[4] अबस[5]
यक शुब:[6] आशुफ़्त:[7]-नाज़े-सुम्बुलस्तानी[8] अबस

है हवस[9], महल[10] बदोशे[11]-शोख़ी-ए-साक़ी-ए-मस्त
नश्श:-ए-मय[12] के तसव्वुर[13] में निगहबानी[14] अबस

जब कि नक़्शे-मुद्दआ[15] होवे न जुज़[16] मौजे-सराब[17]
वादी-ए-हसरत[18] में फिर आशुफ़्त:[19] जौलानी[20] अबस

महमले[21]-पैमान:-ए-फ़ुरसत[22] है बर दोशे[23]-हुबाब[24]
दावा-ए-दरियाकशी[25] व नश्श: पैमाई[26] अबस

यक निगाहे-गर्म[27] है, जूँ शम्म: सर-ता-पा[28] गुदाज़[29]
बहरे[30]-अज़ ख़ुद[31] रफ़्तताँ[32], रंजे-ख़ुदआराई[33] अबस

ऐ 'असद' बेजा[34] है नाज़े-सजद:-ए-अर्ज़े-नियाज़[35]
आलमे-तसलीम[36] में यह दावा आराई[37] अबस

हूँ दाग़े-नीम रंगी-ए-शामे-विसाले-यार[38]
नूरे-चराग़े-बज़्म[39] से जोशे-सहर है आज

---

१. धुआँ २. के प्रकार का ३. फूल ४. सभा का चयन ५. बेकार ६. शंका ७. उद्विग्न ८. अलकें ९. वासना, लालसा १०. कजावा; डोली ११. कंधे पर १२. मदहोशी १३. कल्पना १४. चौकीदारी १५. उद्देश्य चिह्न १६. सिवाय १७. मृगमरीचिका की लहर १८. लालसा की घाटी १९. विकल २०. दौड़ते (भड़कते) फिरना २१. कजावा २२. फ़ुरसत का जाम, प्याला २३. कंधों पर २४. बुलबुला २५. नदी को पार करने (खींचने) का दावा २६. नशे की स्थिति में घूमना २७. सुलगती हुई दृष्टि २८. आपादमस्तक २९. पिघलती हुई ३०-३१. उन लोगों के लिए जो ख़ुद को त्याग चुके हैं ३२. ख़ुद-पसन्दी का दु:ख ३३. अनुचित ३४. झुकना ३५. वास्तविक संसार ३६. दावा करना ३७. मैं महबूब से मिलन न होने के कारण धुँधली शाम के निशान की तरह हूँ ३८. महफ़िल के चिराग़ का प्रकाश ३९. सुबह के आगमन का जोश (उमीद)।

ता सुब्ह[१] है ब-मंज़िले-मकसद[२] रसीदनी[३]
दूदे-चराग़े-ख़ाना[४], ग़ुबारे-सफ़र है आज

आता है एक पारः-ए-दिल हर फ़ुग़ाँ[५] के साथ
तारे-नफ़स,[६] कमंदे-शिकारे-असर[७] है आज

सैरे-मुल्के-हुस्न[८] को, मयख़ानः हा नज़्रे-ख़ुमार[९]
चश्मे-मस्ते-यार[१०] से, है ग़रदने मीना[११] पै बाज[१२]

क़त[१३]-ए-सफ़रे-हस्ती व आरामे-फ़ना[१४] हेच[१५]
रफ़्तार नहीं बेशतर अज़[१६] लग़्ज़िशे-पा[१७] हेच

हैरत हमः[१८] इसरार पै मजबूरे-ख़ामुशी[१९]
हस्ती नहीं जुज़[२०] बस्तने[२१] - पैमाने-वफ़ा[२२] हेच

तम्साल[२३] गुदाज़[२४] आईनः है इबरते-बीनश[२५]
नज़्ज़ारः तहय्युर[२६], चमन्सिताने-बक़ा[२७] हेच

गुलज़ारे-दमीदन[२८], शररसितान[२९] रमीदन[३०]
फ़ुरसत तपिश व होस्लः-ए-नश्वो-नुमा[३१] हेच

---

१. सुबह तक २. मंज़िल और लक्ष्य तक ३. पहुँच ४. घर के चिराग़ का धुआँ ५. विलाप ६. साँस, साँसों का सिलसिला ७. प्रभाव को जकड़ रखा है ८. सौंदर्य-नगर की सैर के लिए ९. समूचे मयख़ाने को ख़ुमार को समर्पित कर दो १०. प्रेमिका की मस्त नज़र ११. सुराही की गर्दन पर १२. ख़िराज कर १३. तोड़ना १४. मौत का आराम (आसूदगी) १५. तुच्छ १६. से १७. पैर की डगमगाहट १८. पूर्ण १९. मौन रहने को विवश होना २०. सिवाय, अतिरिक्त २१. बाँधना २२. प्रेम का वायदा २३. प्रतिभा २४. नर्म २५. बुद्धिमत्ता का दुःख २६. आश्चर्य २७. जीवन-उपवन २८. खिला हुआ उपवन २९. बुझा हुआ अंगारा ३०. बुझना ३१. बढ़ने, फूलने या विकास करने का हौसला।

आहंगे-अदम[1] नालः वः कुहसार[2] गरो[3] है
हस्ती में नहीं शोखी-ए-ईजादे-सदा[4] हेच

किस बात पै मग़रूर[5] है ऐ इज्ज़-तमन्ना[6]?
सामाने-दुआ वहशत[7] वो तासीरे-दुआ[8] हेच

हुस्न ग़मज़े[9] की कशाकश[10] से छुटा मेरे बाद
बारे[11] आराम से हैं अहले-ज़फ़ा[12] मेरे बाद

मनसबे - शेफ़्तगी[13] के कोई क़ाबिल न रहा
हुई माज़ूली-ए-अन्दाज़ो - अदा[14] मेरे बाद

शम्मः बुझती है, तो उसमें से धुआँ उठता है
शोलः-ए-इश्क[15] सियःपोश[16] हुआ मेरे बाद

दर ख़ुरे-गर्ज़[17] नहीं, जौहरे-बेदाद[18] को जा[19]
निगाहे-नाज़[20] है सुरमः[21] से ख़फ़ा, मेरे बाद

है जुनूँ, अहले - जुनूँ[22] के लिए आगोशे-विदा[23]
चाक होता हैं गरीबाँ से जुदा, मेरे बाद

"कौन होता है हरीफ़े-मय-मर्द अफ़गने-इश्क ?"[24]
हैं मुकर्रर[25] लबे-साक़ी पै सला,[26] मेरे बाद

---

१. अनस्तित्त्व की लय २. पहाड़ ३. पहुँचा हुआ है ४. आवाज़ खोज निकालने की शोख़ी ५. गर्वोन्मत्त ६. अभिलाषा की कमी ७. दीवानगी ८. दुआ का प्रभाव ९. नाज़-नखरों १०. खींचतान ११. पूर्ण १२. ज़फ़ा करने वाले १३. आसक्ति का पद १४. नाज़-नखरे जाते रहे १५. प्रेम का अंगारा १६. राख हो जाना (काले वस्त्र पहने हुए) १७. प्रार्थना के योग्य १८. निष्ठुर तत्त्व १९. जगह २०. सुन्दर आँख २१. सुरमा २२. उन्मत्त व्यक्ति २३. विदा की गोद २४. मनुष्य घातक प्रेम की मदिरा पीने का साहस कौन करता है २५. दुबारा, फिर से २६. आवाज़।

हलाके - बेख़बरी,[१] नग़मः - वजूदो - अदम[२]
जहाँ व अहले - जहाँ[३] से जहाँ - जहाँ फ़रयाद[४]

जवाबे - संगदिलीहाए - दुश्मनाँ[५] हिम्मत
ज़े[६] दस्ते - शीशः दिलीहाए-दोस्ताँ[७] फ़रयाद

है दिलबरी कमींगर[८] ईजादे - यक निगाह[९]
कारे - बहाना जूई[१०] चश्मे - हया[११] बुलंद[१२]

साबित हुआ है गरदने - मीना[१३] पै ख़ूने-ख़ल्क़[१४]
लरज़े है मौज़े-मय[१५], तेरी रफ़्तार देख कर

बिक जाते हैं हम आप मता-ए-सुख़न[१६] के साथ
लेकिन अयारे[१७]-तब:[१८]-ए खरीदार देख कर

इन आब्लों से पाँव के घबरा गया था मैं
जी ख़ुश हुआ है राह को पुरख़ार[१९] देख कर

गिरनी थी हम पै बर्क़े-तजल्ली,[२०] न तूर[२१] पर
देते हैं बाद:[२२], ज़र्फ़े[२३] - क़दहख़्वार[२४] देख कर

मक़सद[२५] है नाज़ो-ग़म्ज़:[२६], वले[२७] गुफ़्तगू में काम
चलता नहीं है दश्नः-ओ-ख़ंजर[२८] कहे बग़ैर

---

१. अज्ञान का शिकार २. अस्तित्व और अनस्तित्व का गीत ३. दुनिया वाले ४. हर जगह फ़रियाद करते घूमते हैं ५. शत्रुओं की कठोर हृदयता का जवाब ६. के ७. दोस्तों की साफ़ दिली ८. वार करने वाला ९. एक नज़र की ईजाद १०. बहाना बनाने का काम ११. शर्मीली आँख १२. ऊँची १३. सुराही की गर्दन १४. दुनिया की हत्या १५. शराब की लहर १६. काव्य रूपी धन १७. कसौटी १८. तबीयत १९. काँटों से भरी हुई, कंटकाकीर्ण २०. ईश्वरीय ज्योति की बिजली २१. वह पहाड़ विशेष जिस पर खुदा ने मूसा को दर्शन दिए थे २२. शराब २३. साहस २४. पीने वाला २५. उद्देश्य २६. प्रेमिका के नाज़-नख़रे व हाव-भाव २७. मगर २८. इल्ज़ाम और खन्जर।

हरचंद[1] हो मुशाहिदः-ए-हक़[2] की गुफ़्तगू
बनती नहीं है, बादः-ओ साग़र[3] कहे बग़ैर

है बस कि हर एक उनके इशारे में निशाँ और
करते हैं मुहब्बत, तो गुज़रता है गुमाँ और

या रब, वो न समझे हैं, न समझेंगे मेरी बात
दे और न दिल उनको, जो न दे मुझको ज़ुबाँ और

हरचंद सुबुक-दस्त[4] हुए बुतशिकनी[5] में
हम तो अभी राह में हैं संगे-गराँ[6] और

पाते नहीं जब राह, तो चढ़ जाते हैं नाले
रुकती है मेरी तब्अः[7], तो होती है रवाँ और

बीनश[8], ब-सई[9]-ए-ज़ब्ते-जूनूँ[10] नौबहारतर[11]
दिल दर गुदाज़-नालः[12] बकाह[13] आबदारतर[14]

क़ातिल ब-अज़्मे-नाज़[15]-ओ-दिल अज़[16] ज़ख़्म दरगुदाज़[17]
शमशीर आबदार वो निगह आबदारतर

है किस्वते[18]-उरूजे-तग़ाफ़ुल[19], कमाले-हुस्न[20]
चश्मे-सियः ब-मर्गे-निगह सोगवारतर[21]

---

१. यद्यपि २. भगवत्-दर्शन ३. शराब और प्याला ४. सिद्धहस्त ५. मूर्तिभंजन ६. भारी पत्थर ७. तबीयत ८. प्रतीत होता है ९. कोशिश से १०. पागलपन का ज़ब्त ११. अधिक १२. विलाप के कारण पिघल जाने वाला १३. चीखो-पुकार १४. अधिक जीवंत है १५. नाज़ दिखाने पर कृतसंकल्प १६. से १७. नर्म कमज़ोर १८. लिबास १९. उपेक्षा २०. सौन्दर्य का कमाल २१. दुखी।

ऐ चर्ख़[1], ख़ाक बरसरे[2] - तामीरे[3] - काइनात[4]
लेकिन बिना[5] - ए - अहदे - वफ़ा[6] उस्तुवारतर[7]

आईनः दाग़े - हैरत वो हैरत शिकंजे - यास[8]
सीमाब[9] बेक़रार वो 'असद' बेक़रारतर

हरीफ़े[10]-मतलबे मुश्किल नहीं फ़ुसूने[11] नियाज़[12]
दुआ क़ुबूल हो, या रब, कि उम्र ख़िज़्[13] दराज़[14]

न हो ब हरज़ः[15], बयाबाँ[16] नकर्दे[17] -वहमे वजूद[18]
हनोज़[19] तेरे तसव्वुर[20] में है नशेबो - फ़राज़[21]

न गुले - नग़मः[22] हूँ, न प रदः - ए साज
मैं हूँ अपनी शिकस्त[23] की आवाज़

तू और आराइशे - ख़मे - काकुल[24]
मैं और अंदेशाहाए - दूर दराज़[25]

लाफ़े[26] - तमकीं[27] फ़रेबे सादः - दिली[28]
हम हैं और राज़हाए[29] - सीनः - गुदाज़[30]

हूँ गिरफ़्तारे - उल्फ़ते - सय्याद[31]
वरना बाक़ी है ताक़ते - परवाज़[32]

---

१. आकाश, चक्र २. लगा हुआ ३. निर्माण ४. ब्रह्माण्ड ५. कारण, आधार ६. वफ़ा का संकल्प ७. सुदृढ़ ८. निराशा ९. पारा १०. प्रतिद्वंद्वी, शत्रु ११. माया जाल १२. प्रार्थना, इच्छा, भेंट १३. लम्बी आयु के फ़रिश्ते की उम्र १४. लम्बी १५. बेहूदगी १६. बियाबान, उजाड़ १७. सफ़र तय करने वाला १८. अस्तित्व १९. अभी तक २०. ध्यान, कल्पना २१. ऊँच-नीच २२. गीत-सुमन २३. पराजय २४. घुंघराले केशों का श्रृंगार २५. भविष्य की आशंकाएँ २६. दावा २७. सहन-शक्ति २८. सरल हृदयता का धोखा २९. रहस्य ३०. भग्न हृदय ३१. शिकारी के प्रेम में बंदी ३२. उड़ने की शक्ति।

असदुल्ला खाँ तमाम[1] हुआ
ऐ दिरेग़ा[2] वह रिन्दे-शाहिदबाज़[3]

फ़रेबे-सनअते-इजाद[4] का तमाशा देख
निगाह् अक्सफ़रोश[5] व ख़याल आईन:साज़[6]

हनोज़ ऐ असरे-दीद:[7], नंगे-रुस्वाई[8]
निगाह् फ़ित्न:ख़िराम[9] व दरे-दो आलम[10] बाज़[11]

हुजूमे-फ़िक्र[12] से दिल मिस्ले-मौज[13] लरजे है
कि शीश:[14] नाज़ुक व सह्बा[15]-ए-अब्गीन:[16] गुदाज़[17]

'असद' से तर्के-वफ़ा[18] का गुमाँ[19] वो माना[20] हैं
कि खेंचिए परे-ताइर[21] से सूरते-परवाज़[22]

आह को चाहिए इक उम्र असर होने तक
कौन जीता है, तेरी ज़ुल्फ़ के सर[23] होने तक

दामे-हर मौज[24] में है, हल्क:-ए-सद कामे-नहंग[25]
देखें, क्या गुज़रे हैं क़तरे[26] पै गुहर[27] होने तक

आशिक़ी सब्र-तलब औ तमन्ना बेताब
दिल का क्या रंग करूँ, खूने-जिगर होने तक

---

१. समाप्त ख़त्म २. हाय, अफ़सोस ३. सौन्दर्य की शराब पीने वाला शराबी ४. आविष्कार-कला का धोखा ५. प्रतिबिम्ब बेचने वाला (वाली) ६. दर्पण बनाने वाला ७. दृष्टि, आँख ८. बदनामी ९. छोटे-छोटे क़दमों से चलने वाली १०. दोनों लोकों का दरवाज़ा ११. एक प्रसिद्ध पक्षी, बाज १२. चिन्ताओं की भीड़ १३. तरंग या लहर की तरह १४. दर्पण, काँच १५. शराब १६. शराब की सुराही १७. माँसल, पिघलने वाला १८. प्रेम-विच्छेद १९. भ्रम २०. अर्थ २१. पक्षी २२. उड़ने की शक्ति २३. विजित २४. प्रत्येक तरंग का जाल २५. सौ जबड़ों वाले मगरमच्छ का घेरा २६. बूंद २७. मोती।

हमने माना कि तग़ाफ़ुल[१] न करोगे, लेकिन
ख़ाक हो जाएँगे हम, तुमको ख़बर होने तक

परतवे-ख़ुर[२] से है शबनम को फ़ना[३] की तालीम[४]
मैं भी हूँ एक इनायत की नज़र[५] होने तक

यक नज़र बेश[६] नहीं, फ़ुरसते-हस्ती[७] ग़ाफ़िल[८]
गर्मी-ए-बज़्म[९] है, रक़्से-शरर[१०] होने तक

ग़मे-हस्ती[११] का 'असद' किससे हो जुज़[१२] मर्ग[१३] इलाज
शम्मः हर रंग में जलती है सहर[१४] होने तक

गर तुझ को है यक़ीने-इजाबत[१५], दुआ न माँग
यानी वग़ैरे-यक दिले-बेमुद्दआ[१६] न माँग

आता है, दाग़े-हसरते-दिल[१७] का शुमार याद
मुझसे मेरे गुनह[१८] का हिसाब, ऐ ख़ुदा न माँग

मैं दौरगर्दे[१९]-अर्ज़े-रसूमे[२०]-नियाज़[२१] हूँ
दुश्मन समझ, वले[२२] निगहे-आश्ना[२३] न माँग

ग़म नहीं होता है आज़ादो[२४] को बेश-अज़-यक[२५] नफ़स[२६]
बर्क़[२७] से करते हैं रौशन[२८] शम्मः-ए-मातमख़ानः[२९] हम

---

१. उपेक्षा २. सूरज का प्रकाश ३. समाप्त हो जाना, मर जाना ४. शिक्षा ५. कृपा-दृष्टि ६. अधिक ७. जीने की अवधि ८. बेसुध, असावधान ९. महफ़िल की गर्मी १०. चिंगारी का नृत्य ११. जीवन का दुःख १२. सिवाय १३. मृत्यु १४. सुबह, सवेरा १५. क़यामत के दिन क्षमा कर दिए जाने का विश्वास १६. कामना-रहित दिल के अतिरिक्त १७. दिल की हसरतों के दाग़ १८. अपराध १९. चक्कर में फँसा हुआ २०. समर्पण के संस्कार २१. पूरा करने का इच्छुक २२. लेकिन २३. मैत्रीपूर्ण दृष्टि २४. फ़क़ीरों, स्वतंत्र व्यक्तियों २५. एक से अधिक २६. साँस २७. बिजली २८. प्रकाशित २९. शोक-भवन की शमा।

असर कमंदी[१]-ए-फ़रयादे-ना रसा[२], मालूम
गुबारे[३]-नालः[४], कमींगाहे[५]-मुद्दआ[६], मालूम

बक़द्रे[७]-हौसलः-ए-इश्क[८] जल्वरेज़ी[९] है
वगरनः ख़ानः-ऐ-आईना[१०] की फ़ज़ा[११] मालूम

बहार, दरगिरवे[१२]-गुंचा[१३], शहर जौलाँ[१४] है
तिलिस्मे-नाज़[१५], बजुज़[१६]तंगी-ए-क़बा[१७] मालूम

तिलिस्मे-ख़ाके-कमींगाह[१८] यक जहाँ सौदा[१९]
बमर्गे[२०], तकियः[२१]-ए-आशाइशे[२२]-फ़ना[२३] मालूम

तकल्लुफ़[२४], आईनः-ए-दो जहाँ[२५] मदारा[२६] है
सुराग़े[२७]-यक निगहें-क़हर-आशना[२८] मालूम

'असद' फ़रेफ़्तः[२९]-ए-इन्तख़ाबे[३०]-तर्जे[३१]-जफ़ा
वगरना दिलबरी[३२]-ए-वादः-ए-वफ़ा[३३] मालूम

ब-नालः[३४] हासिले-दिलबस्तगी[३५] फ़राहम[३६] कर
मता[३७]-ए-ख़ानः-ज़ंजीरे[३८],जुज़ सदा[३९], मालूम

---

१. ऊँची दीवार या मुँडेर पर चढ़ने के लिए इस्तेमाल की जाने वाली रस्सी २. न पहुँचने वाली ३. धूल ४. आह ५. घात-स्थल ६. उद्देश्य ७. के मान से प्रेम का साहस ९. निष्पत्ति १० दर्पण घर ११. शोभा १२. गिरवी १३. कली १४. बेड़ी १५. नाज़-नख़रों का जादू १६. सिवाय १७. लिबास की तंगी १८. घातस्थल की धूल का जादू १९. उन्माद २०. मृत्यु २१. सहारा २२. ऐश्वर्य २३. अन्त, मृत्यु, मिट जाना २४. बनावट, दिखावा, औपचारिकता २५. दो दुनिताओं का दर्पण २६. विनम्रता २७. रहस्य २८. प्रकोप वाली दृष्टि २९. आसक्त ३०. चयन ३१. शैली, ढब ३२. आकर्षण ३३. वफ़ा का वचन ३४. आर्त्तनाद ३५. प्रेम की उपलब्धि ३६. एकत्र ३७. पूँजी, माल-अस्बाब ३८. ज़ंजीर की कड़ी या घेरा ३९. आवाज़, फ़क़ीर की आवाज़ ।

अज़[1] आनजा[2] कि हसरत कशे-यार[3] हैं हम
रक़ीबे[4] - तमन्ना - ए - दीदार[5] हैं हम

रसीदन[6], गुले - बाग़े - वामाँदगी[7] हैं
अबस[8] महफ़िल आरा-ए-रफ़्तार[9] हैं हम

नफ़स[10] हो न माज़ूले[11]-शोला दरूदन
कि ज़ब्ते-तपिश[12] से शरकरार[13] हैं हम

तमाशा-ए-गुलशन, तमन्ना-ए-चीदन[14]
बहार आफ़रीना[15], गुनहगार हैं हम

न ज़ौक़े-गरीबाँ[16], न परवा-ए-दामाँ[17]
निगह: आश्ना-ए-गुलो-ख़ार[18] हैं हम

'असद', शिकय: कुफ़्रो-दुआ[19] नासपासी[20]
हुजूमे-तमन्ना[21] से नाचार[22] हैं हम

गुंच:-ए-ना शगुफ़्त:[23] को दूर से मत दिखा कि यूँ
बोस को पूछता हूँ मैं, मुँह से मुझे बता कि यूँ

पुरसिशे-तर्ज़े-दिलबरी[24] कीजिए क्या कि बिना कहे
उसके हर एक इशारे से निकले हैं यह अदा कि यूँ

---

१. से २. अन्यत्र ३. प्रेमी या प्रेमिका की इच्छा रखने वाले ४. प्रतिद्वन्द्वी ५. दर्शन की अभिलाषा ६. पहुँचना ७. थकावट, निस्सहायता ८. व्यर्थ ९. गति को सँवारने वाले १०. श्वास ११. अपदस्थ १२. जलन को प्रकट न होने देना १३. आग का काम-धन्धा करने वाले १४. चुनना १५. धन्यवाद १६. दामन का शौक़ १७. आँचल की चिन्ता १८. फूल और काटों के मित्र १९. कुफ़्र और दुआ २०. कृतघ्नता २१. अभिलाषाओं की भीड़ २२. विवश २३. अविकशित कली २४. दिल छीनने का ढँग पूछना।

बज़्म में उसके रू - ब - रू, क्यों न ख़ामोश बैठिए
उसकी तो ख़ामोशी में भी, है यही मुद्दआ[1] कि यूँ

मैंने कहा कि "बज़्मे-नाज़[2] चाहिए ग़ैर से तिही"[3]
सुनके सितमज़रीफ़[4] ने मुझको उठा दिया कि यूँ

मुझसे कहा जो यार ने, "जाते हैं होश किस तरह?"
देख के मेरी बेख़ुदी, चलने लगी हवा कि यूँ

कब मुझे कूए-ग़ैर[5] में रहने की वज़अ[6] याद थी ?
आईनःदार बन गई हैरते[7] - नक़्शे - पा[8] कि यूँ

जो यह कहे कि रेख़्तः[9] क्योंकर हो रश्के फ़ारसी?[10]
गुफ़्तः-ए-'ग़ालिब'[11] एक बार पढ़ के उसे सुना कि यूँ

इस सादगी पे कौन न मर जाए, ऐ ख़ुदा
लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं

हम से खुल जाओ ब-वक़्ते-मयपरस्ती[12] एक दिन
वरना हम छेड़ेंगे, रखकर उज़्रे-मस्ती[13] एक दिन

ग़र्रः - ए - औजे - बिना - ए - आलमे - इम्काँ न हो
इस बुलंदी[14] के नसीबों में है पस्ती[15], एक दिन

क़र्ज़ की पीते थे मय, लेकिन समझते थे कि हाँ
रंग लावेगी हमारी फ़ाक़ःमस्ती[16] एक दिन

---

१. उद्देश्य २. नाज़ की महफ़िल ३. ख़ाली ४. हँसी-हँसी में ही अत्याचार करने वाला ५. पराए व्यक्ति (रक़ीब) की गली ६. प्रणाली, ढँग ७. आश्चर्य ८. पद-चिह्न ९. उर्दू १०. फ़ारसी के बराबर ११. ग़ालिब का कलाम १२. शराब पीते वक़्त १३. मस्ती का बहाना करके १४. दुनिया को अपने महान् होने का गर्व १५. उत्थान (ऊँचाई) १६. पतन।

नग़म:हाए-ग़म[1] को भी, ऐ ग़नीमत जानिए
बे सदा[2] हो जाएगा, यह साज़े-हस्ती[3] एक दिन

तमाशा कि ऐ महवे - आईन:दारी[4]
तुझे किस तमन्ना से हम देखते हैं

बनाकर फ़क़ीरों का, हम भेस, 'ग़ालिब'
तमाशा - ए - अहले - करम[5] देखते हैं

ज़माना सख़्त कम आज़ार[6] है ब-जाने-'असद'[7]
वगरना हम तो तवक़्क़ो[8] ज़ियाद:[9] रखते हैं

जब करम[10] रुख़्सते[11]-बेबाकी-ओ-गुस्ताखी[12] दे
कोई तक़सीर[13] बजुज़[14] ख़िज्लते-तक़सीर[15] नहीं

थी वो इक शख़्स के तसव्वुर[16] से
अब वो रानाई - ए - ख़याल[17] कहाँ?

हुआ हूँ इश्क़ की ग़ारतगरी[18] से शर्मिन्दा
सिवाए हसरते-तामीर[19], घर में ख़ाक नहीं

रौनक़े-हस्ती है, इश्क़े-खान: वीराँसाज़[20] से
अंजुमन बे शम्म: है,गर बर्क़[21],ख़िरमन[22] में नहीं

---

१. ग़म के गीत २. मौन ३. शरीर ४. आईना देखने में मस्त ५. दानियों का तमाशा ६. तकलीफ़ पहुँचाने वाला ७. असद की जान की क़सम ८. अपेक्षा ९. अधिक १०. कृपा (की मूर्ति), प्रेयसी ११. विदाई १२. उन्मुक्तता और उद्दंडता १३. अपराध १४. सिवाय १५. अपराध पर लज्जित होना १६. कल्पना, विचार १७. कल्पना-सौन्दर्य, विचार-सौन्दर्य १८. बरबादी १९. निर्माण की लालसा २०. प्रेम के उजड़े हुए घर २१. बिजली २२. भूसा निकला हुआ अनाज।

कम नहीं वो भी ख़राबी में, पै वुसअत[1] मालूम
दश्त[2] में है मुझे वो ऐश कि घर याद नहीं

करते किस मुँह से हो ग़ुरबत[3] की शिकायत 'ग़ालिब'
तुम को बे-महरी-ए-याराने-वतन[4] याद नहीं

आज हम अपनी परेशानी-ए-ख़ातिर[5] उनसे
कहने जाते तो हैं, पर देखिए, क्या कहते हैं

अगले वक़्तों के हैं ये लोग, इन्हें कुछ न कहो
जो मयो-नग़मः[6] को अंदोहे-रुबा[7] कहते हैं

है परे सरहदे-इदराक[8] से, अपना मस्जूद[9]
क़िब्ले[10] को अहले-नज़र[11], क़िब्लःनुमा[12] कहते हैं

किस मुँह से शुक्र कीजिए इस लुत्फ़े-ख़ास[13] का ?
पुरसिश[14] है, और पा-ए-सुखन[15] दरमियाँ नहीं

मिलती है ख़ू-ए-यार[16] से नार[17] इल्तिहाब[18] में
काफ़िर हूँ, गर न मिलती हो राहत अज़ाब[19] में

कब से हूँ, क्या बताऊँ, जहाने-ख़राब में
शबहाए-हिज्र[20] को भी रखूँ, गर हिसाब में

ता फिर न इंतजार में, नींद आए उम्र भर
आने का अहद[21] कर गए, आए जो ख़्वाब में

---

१. विस्तार २. जंगल ३. प्रवासी होने की ४. देशवासियों की निष्ठुरता ५. दिल की परेशानी ६. शराब और गीत (संगीत) ७. दुःख-दर्द को चुराने वाला ८. बुद्धि की सीमा ९. ईश्वर, जिसे सिज्दा किया जाए १०. क़ाबा ११. बुद्धिमान् लोग १२. कुतुबनुमा १३. विशेष आनन्द १४. आदर-सत्कार, पूछताछ १५. साहित्य का हस्तक्षेप १६. प्रेयसी का स्वभाव १७. आग (नरक) १८. लपट १९. दुःख २०. वियोग की रातें २१. वायदा।

लाखों लगाव, एक चुराना निगाह का
लाखों बनाव, एक बिगड़ना इताब[1] में

'ग़ालिब' छूटी शराब, पर अब भी कभी-कभी
पीता हूँ रोज़े-अब्रो[2]-सबे-माह्ताब[3] में

कल के लिए कर आज न ख़िस्सत[4] शराब में
यह सू-ए-ज़न[5] है, साक़ी-ए-कौसर[6] के बाब[7] में

हैं आज क्यों ज़लील[8] कि कल न थी पसंद
गुस्ताख़ी-ए-फ़रिश्तः, हमारी जनाब में[9]

रौ[10] में है रख़्शे-उम्र[11] कहाँ देखिए थमे
नै[12] हाथ बाग पर है, न पा[13] है रकाब में

अस्ले[14]-शहूदो[15]-शाहिदो[16]-मशहूद[17] एक हैं
हैराँ हूँ, फिर मुशाहिदः[18] है किस हिसाब में[19]

है मुश्तमिल[20] नमूदे-सुवर[21] पर वुजूदे-बहर[22]
याँ क्या धरा है क़तरः-ओ-मौजो-हुबाब[23] में

---

१. क्रोध २. जिस दिन बादल छाया हो ३. चाँदनी रात ४. कंजूसी ५. अविश्वास ६. कौसर स्रोत का साक़ी (ख़ुदा) ७. प्रकरण, संदर्भ, अध्याय ८. तुच्छ, अपमानित ९. ख़ुदा ने इंसान बनाया और बाकी लोगों ने उसे सिज्दा (प्रणाम) करने को कहा। एक फ़रिश्ते ने यह आदेश मानने से इन्कार किया तो ख़ुदा ने उसे स्वर्ग से निकाल दिया और वह शैतान बना। उसी ओर संकेत करते हुए कहा है कि कभी वह समय था जब हमारे अर्थात् मनुष्य के हुज़ूर में फ़रिश्ते की उद्दंडता भी गवारा नहीं थी, पर आज वही मनुष्य इतना अपमानित क्यों हो रहा है। १०. गति ११. आयु का घोड़ा १२. न १३ पैर १४. वास्तविकता, सचाई १५. उपस्थित, प्रकट १६. दर्शक १७. दृश्य, जिसे देखा जाए १८. अवलोकन १९. का क्या महत्त्व है २०. निर्भर २१. रूप का प्रकट होना २२. समुद्र का अस्तित्व २३. बूंद, लहर और बुलबुला।

शर्म इक अदा-ए-नाज़ है अपने ही से सही
हैं कितने बेहिजाब[1] कि यूँ हैं हिजाब[2] में

है ग़ैबे-ग़ैब[3] जिसको समझते हैं हम शहूद[4]
हैं ख़्वाब में हनोज़[5], जो जागे हैं ख़्वाब में

चलता हूँ थोड़ी दूर हर एक तेज़रौ[6] के साथ
पहचानता नहीं हूँ अभी राहबर[7] को मैं

क्यों गरदिशे-मुदाम[8] से घबरा न जाए दिल ?
इंसान हूँ, पियालः-ओ-साग़र नहीं हूँ मैं

या रब ज़माना मुझको मिटाता है किस लिए ?
लौहे-जहाँ[9] पै हर्फ़े-मुकर्रर[10] नहीं हूँ मैं

दोनों जहान दे के वो समझे कि ख़ुश रहा
याँ आ पड़ी यह शर्म कि तकरार[11] क्या करें

थक थक के हर मुक़ाम पै दो चार रह गए
तेरा पता न पाएँ तो नाचार[12] क्या करें

क्या शम्मः के नहीं हैं हवा-ख़्वाह[13], अहले-बज़्म[14]
हो ग़म ही जाँ-गुदाज़[15], तो ग़मख़्वार[16] क्या करें

---

१. बेपर्दा २. पर्दा ३. छुपा हुआ ४. प्रकट ५. अभी तक ६. तेज़ चलने वाला, तीव्रगामी ७. पथ-प्रदर्शक ८. हमेशा का चक्कर ९. संसार रूपी तख़्ती १०. दुबारा लिखा गया अक्षर ११. झगड़ा १२. असहाय, बेबस १३. शुभचिंतक १४. महफ़िल वाले १५. जान घुलाने वाला १६. शुभचिंतक, सहानुभूति रखने वाला।

सब कहाँ, कुछ लालः-ओ-गुल में नुमायाँ[१] हो गईं
ख़ाक़ में क्या सूरतें होंगी कि पिनहाँ[२] हो गईं

याद थीं हम को भी रंगारंग बज़्म-आराइयाँ[३]
लेकिन अब नक़्शो-निगारे[४]-ताक़े[५]-निसियाँ[६] हो गईं

नींद उसकी है, दिमाग़ उसका है, रातें उसकी हैं
तेरी ज़ुल्फ़ें जिसके बाज़ू पर परीशाँ हो गईं

जाँ-फ़िज़ाँ[७] है बादः[८], जिसके हाथ में जाम आ गया
सब लकीरें हाथ की गोया रगे-जाँ हो गईं

हम मुवह्हिद[९] हैं, हमारा केश[१०] है तर्के-रुसूम[११]
मिल्लतें[१२] जब मिट गईं, अज्ज़ा-ए-ईमाँ[१३] हो गईं

रंज से ख़ूगर[१४] हुआ इंसाँ तो मिट जाता है रंज
मुश्किलें मुझ पर पड़ीं इतनी कि आसाँ हो गईं

दैर[१५] नहीं, हरम[१६] नहीं, दर[१७] नहीं, आस्ताँ[१८] नहीं
बैठे हैं रहगुज़र[१९] पै हम, कोई हमें उठाए क्यों

जब वो जमाले[२०]-दिलफ़रोज़[२१], सूरते[२२]-मेहरे[२३]-नीमरोज़[२४]
आप ही हो नज़्ज़ारः-सोज़[२५], परदे में मुँह छुपाए क्यों

क़ैदे-हयातो[२६] बन्दे-ग़म[२७] अस्ल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी ग़म से निजात[२८] पाए क्यों

---

१. प्रकट २. गुप्त, छिप गईं ३. महफ़िल सजाना ४. बेल-बूटे ५. ताक़, आला ६. विस्मृत ७. प्राणवर्धक ८. शराब ९. एकेश्वरवादी १० धर्म ११. प्रथा-त्याग १२. सम्प्रदाय १३. धर्म के अंग १४. अभ्यस्त १५. मंदिर १६. क़ाबा १७. दरवाज़ा १८. चौखट १९. रास्ता २०. सौन्दर्य २१. मनमोहक २२. सदृश्य, की तरह २३. सूरज २४. दोपहर २५. जलाने वाला २६. जीवन का बंधन २७. दुःख का बंधन २८. मुक्ति।

हाँ वो नहीं ख़ुदा-परस्त, जाओ वो बेवफ़ा सही
जिसको हो दीनो-दिल[1] अज़ीज़[2] उसकी गली में जाए क्यों

'ग़ालिब'-ए-ख़स्ता[3] के बग़ैर कौन से काम बंद हैं
रोइये ज़ार-ज़ार क्या, कीजिए हाय-हाय क्यों

गुल, ग़ुंचगी[4] में ग़र्क़े-दरिया-ए-रंग[5] है
ऐ आगही[6], फ़रेबे-तमाशा[7] कहाँ नहीं

दैरो[8]-हरम[9], आईनः-ए-तकरारे-तमन्ना
बामाँदगी[10]-ए-शौक तराशे है पनाहे[11]

मैं चश्मे-वा कुशादः[12] व गुलशन नज़र-फ़रेब[13]
लेकिन अबस[14] किशबनमे-ख़ुरशींद[15] दीदः[16] हूँ

हूँ गर्मी-ए-निशाते[17]-तसव्वुर[18] से नग़्म-संज[19]
मैं अदलीबे[20]-गुलशने-ना-आफ़रीदः[21] हूँ

पानी से सग-गुज़ीदः[22] डरे जिस तरह 'असद'
डरता हूँ आदमी से कि मरदुम-गुज़ीदः[23] हूँ

फ़ुतादगी[24] में क़दम उस्तुवार[25] रखते हैं
बरंगे-जादः[26] सरे-कू-ए-यार[27] रखते हैं

---

१. धर्म और दिल २. प्रिय ३. बुरे हाल वाला ४. कली रूप में ५. रंग की नदी में डूबा हुआ ६. ज्ञान ७. तमाशे (प्रदर्शन) का धोखा ८. मंदिर, बुतखाना ९. क़ाबा, अंतःपुर १०. थकावट ११. आश्रय १२. आँखें फैलाए १३. आँखों को धोखा देने वाला १४. व्यर्थ १५. सूरज १६. आँख १७. आनंद १८. कल्पना १९. सुमधुर स्वर में गाने वाला २०. बुलबुल २१. ऐसा बाग़ जिसका अस्तित्त्व ही न हो २२. कुत्ते का काटा हुआ २३. आदमी का काटा हुआ (सताया हुआ) २४. गिरा हुआ होना २५. दृढ़ २६. पगडंडी २७. यार की गली की ओर।

तिलिस्मे[१] मस्ती-ए-दिल आँ सू-ए-हुजूमे-सिरिश्क[२]
हम एक मयकदः[३] दरिया के पार रखते हैं

निगाहे - दीदः - ए-नक़्शे-क़दम है, जादः-ए-राह[४]
गुज़श्तगाँ[५], असरे - इंतज़ार रखते हैं

'असद' हैरत कशे[६]-यक दाग़े-मुश्क-अंदूद[७] है, यारब
लिबासे शम्मः पर इत्रे - सबे-दैजूर[८] मलते हैं

हुई हैं आब[९], शर्मे-कोशिशे-बेजा[१०] से, तदबीरें[११]
अक़्रेज़े[१२]-तपिश हैं, मौज[१३] की मानिन्द, ज़ंजीरें

बे दिमाग़ी, होलः जू-ए-तर्के तनहाई नहीं
वरना क्या मौज़े-नफ़स[१४], ज़ंजीरे-रुसवाई[१५] नहीं

किस को दूँ, यारब, हिसाबे-सोज़नाकीहा-ए-दिल[१६]?
आमदो-रफ़्ते-नफ़स[१७], जुज़[१८] शोलः पैमाई[१९] नहीं

है आदमी, ब जाए-ख़ुद[२०], इक महशरे-ख़याल[२१]
हम अंजुमन[२२] समझते हैं, ख़लवत[२३] ही क्यों न हो

रहिए अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई न हो
हमसुख़न[२४] कोई न हो, और हमज़बाँ[२५] कोई न हो

बे-दरो-दीवार-सा इक घर बनाया चाहिए
कोई हमसाया[२६] न हो, और पासबाँ[२७] कोई न हो

---

१. जादू २. आँसू ३. मदिरालय ४. पगडंडी ५. पूर्वज ६. आश्चर्यचकित ७. लेपना ८. अमावस्या ९. पानी १०. अनुचित ११. उपाय १२. सेवक, लज्जित करने वाला १३. तरंग १४. श्वास १५. बदनामी की ज़ंजीर १६. दिल की जलन का हिसाब १७. साँस का आना-जाना १८. सिवाय १९. आग खाना २०. अपने-आप में २१. विचारों की प्रलय २२. महफ़िल २३. एकांत २४. साथ बोलने वाला २५. वही भाषा बोलने वाला २६. पड़ौसी २७. पहरेदार, रक्षक।

पड़िये गर बीमार तो कोई न हो तीमारदार
और अगर मर जाइये तो नौहा-ख़्वाँ[1] कोई न हो

जब मयक़दः[2] छुटा तो फिर अब क्या जगह की क़ैद
मस्जिद हो, मदरिसा[3] हो, कोई ख़ानक़ाह[4] हो

सुनते हैं जो बहिश्त[5] की तारीफ़, सब दुरुस्त
लेकिन ख़ुदा करे वो तेरी जल्वः-गाह[6] हो

गई वो बात कि हो गुफ़्तगू, तो क्योंकर हो
कहे से कुछ न हुआ, फिर कहो, तो क्योंकर हो

अदब है और यही कशमकश[7], तो क्या कीजे
हया[8] है और यही गो-मगो[9], तो क्योंकर हो

तुम्हीं कहो कि गुज़ारा सनम-परस्तों[10] का
बुतों[11] की हो अगर ऐसी ही ख़ू[12], तो क्योंकर हो

उलझते हो तुम, अगर देखते हो आईनः
जो तुम से शहर में हों एक-दो, तो क्योंकर हो

वफ़ादारी बशर्ते-उस्तुवारी[13] अस्ले-ईमाँ है
मरे बुतख़ाने[14] में तो काबे में गाड़ो बिरहमन को

न लुटता दिन को, यो कब रात को यूँ बेख़बर सोता
रहा खटका न चोरी का, दुआ देता हूँ रहज़न[15] को

---

१. रोने वाला २. शराबघर ३. स्कूल ४. मुसलमान फ़कीरों (साधुओं) के रहने का स्थान, मठ ५. स्वर्ग ६. दर्शन-स्थान ७. खींचतान ८. लज्जा ९. असमंजस १०. मूर्तिपूजक (प्रेमी) ११. मूर्ति (प्रेमिका) १२. आदत, प्रकृति, रंग-ढग १३. स्थायित्व की शर्त के साथ १४. मंदिर १५. लुटेरा, बटमार।

किसी को दे के दिल कोई नवा-संजे फ़ुग़ाँ[१] क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में, तो फिर मुँह में ज़बाँ क्यों हो

वो अपनी ख़ू[२] न छोड़ेंगे, हम अपनी वज़अ[३] क्यों छोड़ें
सुबुक सर[४] बन के क्या पूछें कि "हमसे सरगिराँ[५] क्यों हो?"

किया ग़मख़्वार[६] ने रुस्वा[७] लगे आग इस मुहब्बत को
न लाए ताब[८] जो ग़म की, वो मेरा राज़दाँ[९] क्यों हो

वफ़ा कैसी? कहाँ का इश्क़? जब सर फोड़ना ठहरा
तो फिर ऐ संग दिल[१०]! तेरा ही संगे आस्ताँ[११] क्यों हो

यह फ़ित्नः आदमी की ख़ानः-वीरानी[१२] को क्या कम है
हुए तुम दोस्त जिसके, दुश्मन उसका आसमाँ क्यों हो

निकाला चाहता है काम क्या तानों से तू 'ग़ालिब'
तेरे बे-महर[१३] कहने से, वो मुझ पर मेहरबाँ क्यों हो

जुज़[१४] दिल सुराग़े-दर्द[१५] ब-दिले-ख़ुफ़्तगाँ[१६] न पूछ
आईनः अर्ज़ कर, ख़तो-ख़ाले-बयाँ[१७] न पूछ

हिन्दोस्तान सायः-ए-गुल[१८]-पा-पा-ए-तख़्त[१९] था
जाहो[२०]-जलाले[२१] अहदे[२२]-विसाले[२३]-बुताँ[२४] न पूछ

---

१. आर्त्तनाद करने वाला २. आदत ३. रीति ४. दीन-हीन ५. नाराज़ ६. सहानुभूति रखने वाला ७. बदनाम ८. सहनशक्ति ९. भेद जानने वाला, मित्र १०. कठोर हृदय ११. चौखट का पत्थर १२. घर की बरबादी १३. निष्ठुर १४. सिवाय १५. दर्द का पता १६. सोया हुआ १७. बोलने का ढंग १८. फूल की छाया १९. शासन-केन्द्र, राजधानी २०. प्रतिष्ठा २१. प्रताप २२. प्रतिज्ञा २३. मिलन २४. प्रेमिका।

परवाज़[1], यक तब[2]-ए-ग़मे-तसख़ीरे-नालः[4] है
गर्मी-ए-नब्ज़े-ख़ारो[5]-ख़से-आशियाँ[6] न पूछ

तू मश्के-नाज़[7] कर, दिले परवानः है बहार
बेताबी-ए-तजल्ली[8]-ए-आतिश-बजाँ[9] न पूछ

ग़फ़लत मता[10]-ए-किफ़्फ़[11]-ए-मीज़ाने[12]-अदल[13] है
यारब, हिसाबे-सख़्ती-ए-ख़्वाबे-गराँ[14] न पूछ

हर दाग़े-ताज़ा यक दिले-दाग़ इंतज़ार है
अर्ज़े-फ़िज़ा[15]-ए-सीनः-ए-दर्द इम्तहाँ न पूछ

कहता था कल वो मरहमे-राज़[16] अपने से कि आह
दर्दे-जुदाई-ए-असद अल्लाह ख़ाँ न पूछ

है सब्ज़ः-ज़ार[17] हर दरो-दीवारे-ग़मक़दः[18]
जिसकी बहार[19] ये हो फिर उसकी ख़िज़ाँ[20] न पूछ

नाचार[21] बेकसी[22] की भी हसरत[23] उठाइये
दुश्वारिये-रहो[24]-सितमे-हमरहाँ[25] न पूछ

जोशे-दिल है, मुझ से हुस्ने, फ़ितरते[26]-'बेदिल' न पूछ
क़तरे[27] से मयख़ानः-ए-दरिया-ए-बेसाहिल[28] न पूछ

---

१. उड़ान २. गर्मी ३. वशीभूत करना, वशीभूत ४. आर्त्तनाद ५. काँटा ६. नीड़ ७. हाव-भाव ८. प्रकाश, आभा ९. प्रेमी जिसके अंदर आग ही आग हो १०. पूँजी, सरमाया ११. बंधुत्व १२. तराजू १३. न्याय (१२-१३) वह तराजू जिसमें क़यामत के दिन अच्छे-बुरे कर्म तौले जाएँगे १४. बहुमूल्य १५. वातावरण १६. भेद जानने वाला १७. जहाँ हरियाली ही हरियाली हो १८. ग़म का घर १९. बसंत २० पतझड़ २१. असहाय २२. दुःख, कष्ट २३. निराशा, इच्छा, अभिलाषा २४. मार्ग की कठिनाइयाँ २५. सहायात्री के अत्याचार, जुल्म २६. प्रकृति, स्वभाव २७. बूँद २८. अनुपलब्ध।

पहन गश्तनहा[१]-ए-दिल, बज़्मे - निशाते[२] - गर्दबाद[३]
लज़्ज़ते - अर्ज़े- कुशादे[४] - उक़्दः - ए - मुश्किल न पूछ

आबला[६], पैमानः - ए - अंदाज़े - तशवीश[७] था
ऐ दिमाग़े - नारसा[८], ख़ुमख़ानः[९]-ए-मंज़िल न पूछ

नै[१०] सबा[११] बाले - परी[१२], नै शोलः[१३] - सामाने-जुनूँ
शम्मः से जुज़[१४] अर्ज़े-अफ़सूने[१५]-गुदाज़े[१६]-दिल न पूछ

यकमिज़ः[१७] बरहम[१८]-ज़दन, हश्-दोआलम[१९] फ़ित्नः[२०]-है
याँ सुराग़े-आफ़ियत[२१], जुज़ दीदः-ए-बिस्मल[२२] न पूछ

बज़्म है यक पन्बः - ए - मीना[२३], गुदाज़े - रब्त[२४] से
ऐश कर, गाफ़िल, हिजाबे[२५]-नश्शः-ए-महफ़िल न पूछ

ता[२६] तख़ल्लुस[२७] जामः-ए-शंगरनी अरज़ानी[२८], 'असद'
शाइरी जुज़ साज़े-दरवेशी[२९] नहीं, हासिल[३०] न पूछ

शिकवः-ओ-शुक्र को समर[३१] बीमो-उमीद[३२] का समझ
ख़ानः-ए-आगही[३३] ख़राब, दिल न समझ बला समझ

---

१. गर्दिशें २. राग-रंग और खुशी की महफ़िल ३. चक्रवात ४. विस्तृत ५. जटिलता ६. फफोला ७. चिन्ता, डर, व्याकुलता ८. जो पहुँच न सके ९. मदिरालय, शराबघर १०. न, नै, ११. शीतल, मंद और सुगंधित हवा १२. बाल और पंख १३. अंगारा १४. के अलावा १५. इंद्रजाल १६. पिघलाने वाला १७. पलक १८. अस्त-व्यस्त, क्रुद्ध १९. दोनों लोकों का परिणाम २०. उपद्रव, विद्रोह २१. सुख-चैन, शांति २२. आहत, घायल २३. शराब की सुराही २४. लगाव, मैत्री २५. संकोच, शर्म, ओट, पर्दा २६. तक, तलक २७. उपनाम २८. सस्तापन २९. फ़क़ीरी, संन्यास ३०. उपलब्धि ३१. फल, परिणाम ३२. आशा-निराशा ३३. ज्ञान, सूचना, परिचय, पहचान।

शौक़े-इनाँ[1] ग़सल अगर दर्से-जुनूँ[2] हवस[3] करे
जादः[4]-ए-सैरे दो जहाँ, यक मिज़ः ख़्वाबे-पा[5] समझ

ऐ ब-सराबे-हुस्ने-ख़ल्क़[6] तश्नः-ए-सई[7]-ए-इम्तहाँ
शौक़ को मुनफ़इल[8] न कर, नाज़[9] को इल्तिजा[10] समझ

शोख़ी-ए-हुस्नो-इश्क़ है आईनः-दारे[11] हमदिगर[12]
ख़ार[13] को बेनियाम[14] जान, हम को बरहनः-पा[15] समझ

कुल्फ़ते[16]-रब्ते[17]-ईनो-आँ[18], ग़फ़लते-मुद्दआ[19] समझ
शौक़ करे जो सर-गराँ[20], महमले[21]-ख़्वाबे-पा-समझ

नश्मः है, महवे-साज़[22] रह, नश्शः है, बेनियाज़[23] रह
रिन्दे[24]-तमामे-नाज़[25] रह, ख़ल्क़[26] को पारसा[27] समझ

नै[28] सरो-बर्गे-आरज़ू[29], नै रस्मे-गुफ़्तगू[30]
ऐ दिलो-जाने-ख़ल्क़ तू, हमको भी आशना[31] समझ

क्या पूछे है बरख़ुदग़लतीहा[32]-ए-अज़ीज़ाँ[33]?
ख़्वारी को भी इक आर[34] है, आली-नसबों[35] से

---

१. बागडोर, लगाम २. उन्माद का उपदेश ३. लालसा, उत्कंठा ४. पगडंडी ५. पाँव का स्वप्न या अभिलाषा ६. सृष्टि का सौन्दर्य मृगतृष्णा की तरह है ७. प्रयत्न, पराक्रम ८. लज्जित ९. घमंड, हाव-भाव १०. प्रार्थना, निवेदन ११. शीशाघर १२. परस्पर १३. काँटा १४. आपे से बाहर, नंगी तलवार १५. नंगे पाँव १६. दुःख, कष्ट १७. लगाव १८. इस-उस, यह-वह १९. उद्देश्य २०. अप्रसन्न २१. ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं २२. साज में तल्लीन २३. निश्चिन्त, निस्पृह २४. शराबी २५. सम्पूर्ण सौन्दर्य २६. सृष्टि २७. इंद्रिय-निग्रही, जाहिद २८. न, नै २९. ध्यान की अभिलाषा ३०. वार्तालाप ३१. परिचित, मित्र ३२. कम होते हुए भी अपने को बहुत अधिक समझने वालों की ग़लतियाँ ३३. प्रियजन ३४. घृणा, लज्जा ३५. कुलीन।

ताक़त फ़सान-ए-बाद, अंदेशः शोलः ईज़ाद[१]
ऐ ग़म हनोज़[२] आतिश[३] ! ऐ दिल हनोज़ ख़ामी[४] !

हर चंद उम्र गुज़री आज़ुदगी[५] में, लेकिन
है शहरे-शौक़ को भी, जूँ शिकवः नातमामी[६]

है यास[७] में 'असद' को साक़ी से भी फ़राग़त[८]
दरिया से ख़ुश्क गुज़री मस्तों की तिश्नःकामी[९]

है पेचताबे[१०] - रिश्तः - ए - शम्मः - ए - सहरगही[११]
ख़जलत[१२] गुदाज़ी[१३] - ए - नफ़से[१४] - नारसा[१५] मुझे

ता चंद पस्त - फ़ितरती[१६] - ए-तब्बः - ए - आरज़ू[१७]
यारब, मिले बुलन्दी[१८] - ए-दस्ते - दुआ[१९] मुझे

यक बार इम्तहाने - हवस[२०] भी ज़रूर है
ए जोशे-इश्क़, बादः - ए - मर्द[२१] आज़मा मुझे

'असद', जमीयते-दिल[२२] दरकनारे-बेख़ुदी ख़ुशतर[२३]
दो आलम आगही[२४], सामने-यक ख़्वाबे-परीशाँ है

आतिश अफ़रोज़ी[२५] - ए - शोलः - ए - ईमाँ तुझ से
चश्मक आराई[२६]-ए-सद शहरे-चराग़ाँ[२७] मुझ से

---

१. आविष्कार २. अभी तक ३. आग ४. अपरिपक्वता, अनुभवहीनता ५. दुःख, पीड़ा, उदासी ६. अपूर्णता ७. निराशा ८. छुटकारा, मुक्ति ९. प्यास १०. गुत्थी, उलझन ११. सुबह की १२. लज्जा १३. पिघलाने वाला, पिघलने की प्रक्रिया १४. प्राणवायु, आत्मा १५. न पहुँच सकने वाला १६. तुच्छ प्रकृति वाला, कमीना १७. अभिलाषा करने की आदत १८. ऊँचाई १९. दुआ के लिए उठे हाथ २०. इच्छा, अभिलाषा २१. शराबी, ख़ूब शराब पीने वाला २२. आत्म-संतोष २३. उत्तम २४. ज्ञान २५. अग्नि प्रज्वलित करने वाला २६. संकेत २७. प्रकाशमान, रौशन।

निगह, मैमारे-हसरतहा[1] चे आवादी? चे वीरानी?
कि मिज़गाँ[2] जिस तरफ़ वा[3] हो, कफ़े-दामाने-सहरा[4] है

बसख़्तीहा[5] - ए-क़ैदे - ज़िन्दगी मालूमे - आज़ादी
शरर[6] दर बंदे-दामे-रिश्तः - ए - रगहा-ए-ख़ारा[7] है

'असद' बहारे - तमाशा - गुल्सिताने - हयात[8]
विसाले - लालः[9] - एज़ाराने[10] - सरो - कामत[11] है

शोख़ी - ए-मिज़रावे - जौलाँ[12], आबयारे - नग्मः[13] है
बर[14] गुरेज़े[15] - नाख़ुने - मुतरिब[16], बहारे - नग़मः है

किस से, ऐ ग़फ़लत, तुझे ताबीरे - आगाही[17] मिले
गोशहा[18] सीमाबी[19] - ओ - दिल बेक़रारे - नग़मः है

साज़े - ऐशे - बेदिली है, ख़ानः - वीरानी[20] मुझे
सैल[21], याँ कूके[22] - सदाए - आबशारे[23] - नग़मः है

ख़ुद - फ़रोशीहा-ए-हस्ती[24] बस कि जा-ए-खन्दः[25] है
हर शिकस्ते - क़ीमते - दिल[26] में सदा - ए - खन्दः[27] है

नक़्शे-इबरत[28] दर नज़ रहा[29], नक़्दे-इशरतः[30] दर बिसात[31]
दो जहाँ वुसअत[32], बकद्रे - यक फ़िज़ा-ए-ख़न्दः[33] है

---

१. निराशा का निर्माण करने वाली २. पलक ३. खुलना ४. रेगिस्तान का खुला विस्तार ५. कठिनाइयों से ६. अग्निकण ७. एक बहुत ही कठोर पत्थर ८. जीवन-उपवन ९. एक लाल फूल, पोस्त का फूल १०. एज़ारे ११. तन-मन १२. इधर-उधर घूमना १३. गीत १४. पर, ऊपर १५. बचाव, उपेक्षा १६. गायक १७. परिचय या ज्ञान का फल १८. कान १९. पारे का, पारे से संबंधित २०. भाग्यहीनता, घर-बार और धन-दौलत का नाश २१. सैलाब, प्लावन २२. कूक, आवाज़ २३. झरना, निर्झर २४. अस्तित्व की ग़द्दारी २५. अट्टहास, मुस्कान के प्राण २६. परास्त मन २७. मुस्कान की पुकार २८. मानसिक खेद २९. नज़रों में ३०. आनंद रूपी धन ३१. सामर्थ्य ३२. विस्तार ३३. मुस्कान का माहौल।

जा-ए-इस्तेहज़ा[१] है, इशरतकोशी[२]-ए-हस्ती, 'असद'
सुब्हो-शबनम, फ़ुरसते-नश्वो-नुमा-ए-ख़न्द:[३] है

तम्साले-जल्व:[४] अर्ज़ कर, ऐ हुस्न, कब तलक
आईन: - ए - ख़याल[५] को देखा करे कोई ?

अर्ज़े - सिरिश्क[६] पर है, फ़िज़ा-ए-ज़माना[७] तंग
सहराँ[८] कहाँ कि दावते - दरिया[९] करे कोई

ज़ंजीर याद पड़ती है जादे[१०] को देख कर
इस चश्म[११] से हनोज़[१२] निगह यादगार है

निगाहे-इबरत-अफ़सूँ[१३], गाह[१४] बर्क़[१५] व गाह मश्अल है[१६]
हुआ हर खल्वतो[१७]-जलवत[१८] से हासिल[१९] ज़ौक़े-तनहाई[२०]

नै हसरते - तसल्ली, नै ज़ौक़े - बेक़रारी
यक दर्द औ सद दवा है, यक दस्त[२१] और सद[२२] दुआ है

रुख़्सारे-यार[२३] की जो खुली जल्व: - गस्तरी[२४]
ज़ुल्फ़े - सियाह[२५] भी शबे - महताब[२६] हो गई

ख़बर निगह को निगह चश्म को अदू[२७] जाने
वो जल्व: कर कि न मैं जानूँ और न तू जाने

---

१. हँसी उड़ाना २. आनंद-प्राप्ति का प्रयत्न ३. मुस्कान का विकसित होना ४. बनाव-सिंगार की उपमाओं से ५. कल्पनाओं का दर्पण ६. आँसू ७. ज़माने का माहौल ८. रेगिस्तान ९. नदी की दावत १०. पगडंडी ११. आँख १२. अभी तक १३. इन्द्रजाल १४. कभी १५. बिजली १६. मशाल १७. एकांत १८. भीड़ १९. प्राप्त, उपलब्ध २०. एकांत का आनंद २१. हाथ २२. सौ २३. प्रेमिका के कपोल २४. सौंदर्य, बनाव-सिंगार २५. काले केश २६. चाँदनी रात २७. शत्रु ।

ज़बाँ से अर्ज़े - तमन्ना - ख़ामशी मालूम
मगर वो ख़ान - बरअंदाज़ गुफ़्तगू[1] जाने

बादशाही का जहाँ ये हाल हो, 'ग़ालिब' तो फिर
क्यों न दिल्ली में हर इक नाचीज़ नव्वाबी करे

यक दरे-बर रू-ए-रहमत[2] बस्तः[3] दौरे शशजिहत[4]
नाउमीदी है, ख़याले - ख़ानः - वीराँ[5] क्या करे

तोड़ बैठे जब कि हम जामो-सुबू[6], फिर हमको क्या
आसमाँ से बादः-ए-गुलफ़ाम[7] गर बरसा करे

हैरत हिजाबे[8]-जल्वः-ओ-वहशत[9] ग़ुबारे-चश्म[10]
पा - ए - नज़र ब - दामाने - सहरा न खींचिए

वामाँदगी[11] बहानः औ दिलबस्तगी[12] फ़रेब[13]
दर्दे - तलब[14] ब-आब्लः - ए - पा[15] न खींचिए

है बेख़ुमार नश्शः - ए - ख़ूने - जिगर, 'असद'
दस्ते - हवस[16] ब - गर्दने - मीना[17] न खींचिए

वामाँदः[18] ए-ज़ौक़े-[19] तरबे[20] - वस्ल[21] नहीं हूँ
ऐ हसरते[22] - बिस्यार[23], तमन्ना[24] की कमी है

---

१. वार्तालाप २. दया, कृपा, करुणा ३. बँधा हुआ ४. छहों दिशाएँ (चार दिशाएँ और ऊपर व नीचे) ५. अभागे की कल्पना ६. शराब का प्याला व सुराही ७. पुष्पांगी, सुगंधित शराब ८. पर्दा, ओट, लज्जा ९. भय, आदमियों से भड़कना, सबसे अलग रहना १०. आँख का ग़ुबार ११. थकावट, लाचारी १२. प्रेम १३. धोखा १४. इच्छा, अभिलाषा, याचना १५. पाँव के फफोले १६. लालसा का हाथ १७. शराब की सुराही की गर्दन की ओर १८. पस्त, थका हुआ १९. आनंद २०. हर्ष, आह्लाद २१. प्रेमी-प्रेमिका का मिलन, संयोग २२. कामना, लालसा २३. अत्यधिक २४. आकांक्षा, अभिलाषा।

मिज़:[१] पहलू-ए-चश्मे-जल्वः-ए-इद्राक[२] बाकी है
हुआ वो शोलः[३] दाग़ और शोख़ी-ए-ख़ाशाक़[४] बाकी है

गुदाजः[५] सई[६]-ए-बीनस[७] शुस्तो-शू[८] से नक्शे-ख़ुदकामी[९]
सरापा[१०] शबनम आई[११], यक निगाहे-पाक[१२] बाकी है

चमनज़ारे-तमन्ना[१३] हो गया सर्फ़े-ख़िज़ाँ[१४] लेकिन
बहारे-नीम रंग-आहे-हसरतनाक[१५] बाकी है

न हैरत चश्मे-साक़ी की न सुहबत[१६] दौरे-सागर की
मेरी महफ़िल में, 'ग़ालिब', गर्दिशे-अफ़लाक[१७] बाक़ी है

लालः-ओ-गुल[१८] बहम आईनः-ए-अफ़लाक़े बहार[१९]
हूँ मैं वो दाग़ कि फूलों में बसाया है मुझे

दर्दे-इज़हारे-तपिश[२०] किसवती-ए-गुल[२१] मालूम
हूँ मैं वो चाक[२२] कि काँटों में सुलाया है मुझे

बेदिमाग़े-तपिश[२३] औ अज़-दो आलम[२४] फ़रयाद
हूँ मैं वो ख़ाक़ कि मातम में उड़ाया है मुझे

जामे हर-ज़र्रः है सरशारे[२५]-तमाशा मुझ से
किस का दिल हूँ कि दो आलम[२६] में लगाया है मुझे

---

१. पलक २. अगोचर वस्तुओं का अनुभव, ज्ञान ३. अंगारा ४. राख, ख़ाक ५. माँसलपन, पिघलने वाला ६. प्रयत्न, पराक्रम ७. दृष्टि ८. सफ़ाई-धुलाई ९. स्वच्छंदता १०. आपाद-मस्तक ११. ओस १२. पवित्र दृष्टि १३. आकांक्षा का उपवन १४. पतझड़ की भेंट १५. लालसामय १६. साथ १७. सुबह के उजालों की गर्दिश १८. फूल १९. बसंत २०. हार्दिक व्यथा की अभिव्यक्ति का दर्द २१. फूल का लिबास २२. दरार, विदीर्ण २३. जलन की अप्रसन्नता २४. दोनों जगत् २५. परिपूर्ण, लबरेज़ २६. दोनों जगत्।

जोशे - फ़रयाद[१] से लूँगा दीत ख़्वाब, 'असद'
शोख़ी - ए-नग़मः[२] - ए - 'बेदिल' ने जगाया है मुझे

जुनूँ[३] रुसवाई[४] - ए - वारस्तगी[५] ज़ंजीर बेहतर है
बक़द्रे-मसलहत[६], दिल - तंगी - ए - तदबीर[७] बेहतर है

ख़ुशा[८]! ख़ुदबीनी[९]-ओ-तदबीरो-ग़फ़लत[१०] नक़्दे अंदेशः[११]
बदीने[१२]-इज़्ज़[१३] अगर, बदनामी-ए-तक़दीर[१४] बेहतर है

दिले-आगाह[१५] तस्कीं - खेज[१६] बेदर्दी न हो, यारब
नफ़स[१७], आईनःदारे - आहे - बेतासीर बेहतर है

ख़ुदाया[१८] चश्म - ता - दिल[१९] दर्द है, अफ़सूने - आगाही[२०]
निगह, हैरत सवादे - ख़्वाबे - बेताबीर[२१] बेहतर है

दरूने[२२] - जौहरे - आईनः[२३], जूँ[२४] बर्गे हिना[२५], ख़ूँ है
बुताँ[२६], नक़्शे - ख़ुदआराई[२७], हया[२८] तहरीर[२९] बेहतर है

दरयूज़ः[३०] - ए - सामानहा - ए - बे - सरो सामानी[३१]
ईजादे - गिरीबाँहा[३२], दर पर्दः[३३] - ए - उरयानी[३४]

---

१. प्रार्थना का जोश २. गीत के सौन्दर्य ३. पागलपन, उन्मत्तता ४. बदनामी ५. स्वच्छन्दता ६. परामर्श ७. उपाय, तरकीब ८. अहो, क्या ख़ूब, वाह-वाह ९. अहंकार, अपने को सब-कुछ समझना १०. निश्चेष्टता ११. आशंका रूपी धन १२. धर्मपूर्वक १३. सम्मान १४. भाग्य की बदनामी १५. परिचित, ज्ञात १६. संतोषदायक, सांत्वनाप्रद १७. श्वास १८. हे ईश्वर! १९. आँख से दिल तक २०. ज्ञान का इन्द्रजाल २१. वह स्वप्न जिसका फल बता पाना संभव न हो २२. हृदय, आत्मा २३. दर्पण पर पड़ी हुई धारियाँ २४. ज्यों २५. मेंहदी का पत्ता २६. प्रतिमा, प्रेमिका २७. अपने-आपको बनाने-सँवारने की क्रिया २८. लज्जा २९. लिखना, लेखन ३०. भीख माँगना, भिक्षाटन ३१. निर्धनता ३२. कुर्ते व कमीज़ का गला ३३. पर्दे में ३४. नग्नता।

तम्साले[1] - तमाशाहा[2], इक़बाले तमन्नाहा[3]
इज्जे[4] - अर्क़े - शर्मे, ऐ आईनः - हैरानी

दावा-ए-जुनूँ[5] बातिल[6], तस्लीम[7] अबस[8] हासिल[9]
परवाज़े - फ़ना[10] मुश्किल, मैं इज्ज़े-तनआसानी[11]

बेगानगी - ए - ख़ूहा[12], मौजे - रमे - आहूहा[13]
दामे - गिलः - ए - उल्फ़त[14] - ज़ंजीरे - पशेमानी[15]

परवाज़[16] तपिश[17] रंगे, गुलज़ार[18] हमः[19] तंगे
ख़ूँ हो क़फ़से-दिल[20] में, ऐ ज़ौके-पुरअफ़्शानी[21]

संग[22] आमदो-सख़्त[23] आमद[24], दर्दे-सरे खुद्दारी[25]
माज़ूरे[26] - सुबुकसारी[27], मजबूरे - गराँजानी[28]

गुलजारे - तमन्ना हूँ, गुलचीने - तमाशा हूँ
सद[29] नलः[30], 'असद', बुलबुल दरबंदे[31]-जबाँदानी[32]

ख़्वाबे - ग़फ़लत[33] ब-कमींगाहे[34]-नज़र पिनहाँ[35] है
शाम, साए से बतराजे - सहर[36] पिनहाँ है

---

१. आकृति २. दर्शन ३. अभिलाषा का सौभाग्य ४. सम्मान ५. पागलपन का दावा ६. व्यर्थ, झूठ ७. स्वीकार करना ८. निरर्थक ९. उपलब्धि १०. मृत्यु की उड़ान ११. आलस, निकम्मापन १२. स्वभाव, प्रकृति १३. हरिणों के दौड़ने की तरंग १४. प्रेम, स्नेह १५. लज्जा, पश्चात्ताप, शर्मिन्दगी १६. उड़ान १७. जलन, मनस्ताप १८. उपवन, उद्यान १९. समस्त, समूचा २०. दिलरूपी पिंजड़ा २१. स्वयं को पूर्णतः प्रकट करने का शौक २२. पत्थर २३. कठिन २४. आगमन २५. स्वाभिमान २६. विवश, लाचार २७. सांसारिक बंधनों से मुक्ति २८. आलस्य, काहिली २९. सौ ३०. आर्त्तनाद ३१. चारदीवारी ३२. भाषा-ज्ञान ३३. असतर्कता ३४. शिकार की ताक में बैठने का स्थान ३५. गुप्त, छिपा हुआ ३६. सुबह की तरह।

दो जहाँ[1], गर्दिशे यक सुब्हे[2] इसरारे[3] नियाज़[4]
नक्दे[5]-सद दिल ब-गरेबाने सहर[6] पिनहाँ है

ख़लवते[7]-दिल में न कर दख़ल[8] बजुज़[9], सज्दः-ए-शौक़[10]
आस्ताँ[11] में सिफ़्ते[12] आईनः दर पिनहाँ है

होश ऐ हर्ज़ःदिरा[13], तुहमते[14] बेदर्दी-चंद[15]
नालः[16] दर गिर्दे-तमन्ना-ए-असर पिनहाँ है

वहमे[17]-ग़फ़लत मगर एहरामे[18]-फ़सुर्दन[19] बाँधे
वरना हर संग के बातिन[20] में शरर[21] पिनहाँ है

है अर्जे-जौहरे ख़तो-ख़ाले-हज़ार अक्स[22]
लेकिन अनोज[23] दामने[24] आईनः पाक[25] है

हूँ ख़लवते[26] फ़सुर्दगी[27]-ए-इन्तज़ार में
वो बेदिमाग़ जिसको हवस[28] भी तपाक[29] है

मस्ती-ब-जौक़े-ग़फ़लते-साक़ी, हलाक़[30] है
मौजे शराब[31], यक मिज़ः[32]-ए-ख्वाबनाक[33] है

जोशे-जुनूँ से कुछ नज़र आता नहीं, 'असद'
सहरा हमारी आँख में एक मुश्ते[34] ख़ाक है

---

१. दोनों लोक २. सुमरनी, माला ३. आग्रह ४. भेंट, मुलाक़ात ५. पूँजी ६. सुबह ७. एकांत ८. प्रवेश, हस्तक्षेप ९. सिवाय १०. शौक़ का सिज्दा (सिज्दः) ११. दहलीज़, चौखट १२. विशेषता १३. निःसार बातें करने वाला १४. लांछन, आरोप १५. कुछ १६. आर्त्तनाद १७. भ्रम १८. हाजियों का अंग-वस्त्र १९. खिन्नता, उदासी २०. हृदय २१. अग्निकण, चिनगारी २२. प्रतिबिम्ब २३. अभी तक २४. आँचल २५. पवित्र २६. एकांत २७. खिन्नता, उदासी २८. कामना, लालसा २९. प्रेम, प्यार, आवभगत ३०. हत, वधित ३१. शराब की तरंग ३२. पलक ३३. स्वप्न देखने वाली ३४. एक मुट्ठी ।

नज़र - परस्ती[1] - ओ - बेकारी - ओ - खुद आराई[2]
रक़ीबे[3] आईनः है, हैरते तमाशाई[4]

ज़े खुद गुज़श्तने[5]-दिल कारवाने-हैरत है
निगह, ग़ुबारे - अदबगाहे[6] - जल्वः - फ़रमाई[7]

खराबे[8]-नालः-ए-बुलबुल, शहीदे-खन्दः-ए-गुल[9]
हनोज़[10] दावा-ए-तमकीनो[11] बीमे[12]-रुस्वाई[13]

हज़ार काफ़िलः-ए-आरज़ू, बयाबाँ मर्ग[14]
हनोज़ महमले[15]-हसरत[16] बदोशे[17]-खुदराई[18]

वहमे[19] - तरबे[20] - हस्ती, ईजादे - सियः मस्ती[21]
तिस्की[22]-दहे[23]-सद[24] महफ़िल, यक साग़रे-ख़ाली[25] है

सद जल्वः[26] रू-ब-रू[27] है, जो मिज़गाँ[28] उठाइये
ताक़त कहाँ कि दीद[29] का अहसाँ[30] उठाइये

या मेरे ज़ख़्मे - रश्क[31] को रुस्वा[32] न कीजिए
या पर्दः - ए - तबस्सुमे[33] - पिनहाँ[34] उठाइये

---

१. अपनी दृष्टि में स्वयं को बहुत कुछ समझने वाला २. दम्भी ३. प्रतिद्वन्द्वी ४. तमाशा देखने वाले (दर्शक) का आश्चर्य ५. गुज़रने योग्य ६. साहित्य केन्द्र ७. बनाव-सिंगार के साथ उपस्थिति, किसी श्रेष्ठ व्यक्ति की उपस्थिति ८. विकृत, उन्मत्त ९. फूल की मुस्कान १०. अभी तक ११. प्रतिष्ठा, सम्मान, स्थिरता १२. भय, निराशा १३. बदनामी १४. मृत्यु १५. ऊँट पर बाँधने का कजावा जिसमें स्त्रियाँ बैठती हैं १६. अभिलाषा, कामना १७. कंधों पर १८. स्वेच्छाचार १९. भ्रम २०. आनंद, उल्लास २१. अत्यधिक मस्ती २२. सांत्वना, संतोष २३. दस २४. सौ (दहे-सद = एक हज़ार) २५. शराब की एक खाली सुराही २६. दर्शन, प्रदर्शन, बना-सँवरा सौन्दर्य २७. सामने २८. पलकें २९. दृष्टि, आँख ३०. अहसान ३१. ईर्ष्या ३२. बदनाम ३३. मुस्कान ३४. छिपी हुई।

बिसाते[1]-इज्ज़[2] में था एक दिल, यक क़तरः-ए-ख़ूँ[3] वो भी
सो रहता है ब - अंदाज़े - चकीदन[4] सरनिगूँ[5] वो भी

रहे उस शोख़ से आज़ुर्दः[6], हम चंदे-तकल्लुफ़[7] से
तकल्लुफ़ बर - तरफ़, था एक अंदाज़े - जुनूँ वो भी

न करता काश नालः, मुझको क्या मालूम था हमदम
कि होगा बाइसे[8] - अफ़ज़ाइशे[9] - दर्दे - दरूँ[10] वो भी

न इतना बुर्रिशे - तेग़े - जफ़ा[11] पर नाज़ फ़रमाओ
मेरे दरिया - ए - बेताबी[12] में है इक मौजे-ख़ूँ[13] वो भी

मये - इशरत[14] की ख़्वाहिश साक़ी - ए - गर्दूं[15] से क्या कीजे
लिए बैठा है इक दो-चार जामे - वाज़गूँ[16] वो भी

मेरे दिल में है, 'ग़ालिब', शौक़े-वस्लो[17]-शिकवः-ए-हिजराँ[18]
ख़ुदा वो दिन करे जो उससे मैं यह भी कहूँ वो भी

दर्द से मेरे है तुझको बेक़रारी, हाय हाय
क्या हुई ज़ालिम, तेरी ग़फ़लत-शिआरी[19], हाय हाय

तेरे दिल में गर न था आशोबे-ग़म[20] का हौसलः
तू ने फिर क्यों की थी मेरी ग़मगुसारी[21], हाय-हाय

---

१. पूँजी, सरमाया, सामर्थ्य, फ़र्श २. शक्तिहीनता, असमर्थता ३. लहू की एक बूँद ४. टपकने की स्थिति में ५. अधोमुख ६. अप्रसन्न, रूठे हुए ७. कुछ औपचारिकता से ८. कारण ९. वृद्धि १०. भीतरी दर्द ११. अत्याचार रूपी तलवार की धार १२. बेताबी की नदी १३. लहू की लहर १४. सुख-सुरा १५. आकाश का साक़ी, ख़ुदा १६. औंधे प्याले (आकाश को औंधा प्याला कहा जाता है और इस्लाम के अनुसार आकाश सात हैं) १७. मिलन की लालसा १८. वियोग की शिकायत १९. उदासीनता का व्यवहार २०. ग़म सहना २१. सहानुभूति।

क्यों मेरी ग़मख़्वारी का तुझको आया था ख़याल
दुश्मनी अपनी थी दोस्तदारी[1], हाय हाय

उम्र भर का तूने पैमाने-वफ़ा[2] बाँधा तो क्या
उम्र को भी तो नहीं है पायदारी[3], हाय हाय

ज़हर लगती है मुझे आबो -हवा - ए - ज़िन्दगी[4]
यानी तुझ से थी इसे नासाज़गारी[5], हाय हाय

गुलफ़िशानीहा-ए - नाज़े-जल्वः[6] को क्या हो गया
ख़ाक पर होती है तेरी लालःकारी[7], हाय हाय

शर्मे - रुस्वाई[8] से जा छुपना नकाबे - ख़ाक[9] में
ख़त्म है उल्फ़त की तुझ पर पर्दःदारी, हाय हाय

ख़ाक में नामूसे - पैमाने - मुहब्बत मिल गई
उठ गई दुनिया से राहो - रस्मे - यारी, हाय हाय

हाथ ही तेग़ आज़मा[10] का काम से जाता रहा[11]
दिल पै इक लगने न पाया ज़ख़्मे-कारी[12], हाय हाय

किस तरह काटे कोई शबहा - ए - तारे - बर्शगाल[13]
है नज़र ख़ूकर्दः[14] - ए - अख़्तरशुमारी[15], हाय हाय

---

१. मित्रता २. प्रेम निभाने का प्रण ३. स्थिरता ४. जीवन की जलवायु ५. विरोध रास न आने की स्थिति ६. गर्वोन्मत्त सौन्दर्य की अठखेलियों की पुष्प-वर्षा ७. फूल-पत्तियों का शृंगार ८. बदनामी की शर्म ९. मिट्टी में धरती का आँचल (क़ब्र) १०. तलवार का ज़ोर आज़माने वाला ११. शक्ति-हीन (बेकार) हो जाना १२. घातक (गहरा) घाव १३. बरसात की अँधेरी रातें १४. अभ्यस्त, आदी १५. तारे गिनना ।

गोश[1] महजूरे[2] - पयामो[3] - चश्म महरूमे-जमाल[4]
एक दिल, तिस पर यह नाउम्मीदवारी[5], हाय हाय

इश्क़ ने पकड़ा न था, 'ग़ालिब' अभी वहशत[6] का रंग[7]
रह गया था दिल में जो कुछ ज़ौक़े-ख़्वारी[8], हाय हाय

हर यक मकान को है मकीं से शरफ़[9], 'असद'
मजनूँ जो मर गया है तो जंगल उदास है

किस पर्दे में है आईनः परदाज़[10], ऐ ख़ुदा!
रहमत[11] कि उज़्रख़्वाह[12] - लबे - बेसवाल[13] है

हस्ती[14] के मत फ़रेब में आजाइयो, 'असद'
आलम[15] तमाम हल्क़ः[16] -ए- दामे - ख़याल[17] है

तुम अपने शिकवे की बातें न खोद खोद के पूछो
हज़र करो[18] मेरे दिल से की इसमें आग दबी है

दिल, यह दर्दो-आलमभी[19] तो मुग़तनिम[20] है, कि आख़िर
न गिरयः - ए - सहरी[21] है, न आहे-नीमशबी[22] है

ढूँढ़े है उस मुग़न्नी[23] - ए - आतिश-नफ़स[24] को जी
जिसकी सदा[25] हो जल्वः[26] - ए - बर्क़े - फ़ना[27] मुझे

---

१. कान २. वंचित, तरसता हुआ ३. संवाद ४. दिव्य दर्शनों से वंचित ५. निराशा ६. उन्माद ७. रूप ८. मिटने की इच्छा ९. सम्मान, प्रतिष्ठा १०. प्रकाश देने वाला ११. कृपा, दया, क्षमा १२. क्षमाप्रार्थी १३. मौन अधर १४. अस्तित्व, जीवन १५. संसार, दुनिया १६. कड़ी, घेरा १७. कल्पना-जाल १८. बचो, भय खाओ १९. दुःख-दर्द २०. ग़नीमत २१. प्रातःकालीन रुदन २२. आधी रात की आहें २३. गायक २४. आग बरसाने वाला २५. आवाज़ २६. चमक, सौन्दर्य २७. मृत्यु लाने वाली बिजली।

मस्तानः तै करूँ हूँ रहे-वादी-ए-ख़याल[१]
ता[२] बाज़गश्त[३] से न रहे मुद्दआ[४] मुझे

खुलता किसी पै क्यों मेरे दिल का मुआमला[५]
शेरों के इंतख़ाब[६] ने रुस्वा[७] किया मुझे

एक हंगामे पै मौक़ूफ़[८] है घर की रौनक़
नौहः ए-ग़म[९] ही सही, नग़मः-ए-शादी[१०] न सही

न सताइश[११] की तमन्ना, न-सिले[१२] की परवा[१३]
गर[१४] नहीं हैं मेरे अशआर[१५] में मानी[१६], न सही

रहा आबाद आलम, अहले-हिम्मत[१७] के न होने से
भरे हैं जिस क़दर जामो-सुबू[१८] मयख़ाना ख़ाली है

आग़ोशे[१९] - गुल - कुशदः[२०] बराए - विदाअ[२१] है
ऐ अन्दलीब[२२] ! चल कि चले दिन बहार के

हर क़दम दूरी - ए - मंज़िल है नुमायाँ[२३] मुझ से
मेरी रफ़्तार से भागे है बयाबाँ[२४] मुझ से

गर्दिशे - साग़से - सद जल्वः - ए-रंगी[२५] तुझ से
आईनःदारी -ए-यक दीद-ए हैराँ[२६] मुझ से

---

१. कल्पना-लोक का मार्ग २. तक, तलक ३. वापसी, लौटना ४. मतलब, ग़रज़ ५. रहस्य ६. चयन ७. बदनाम ८. निर्भर ९. दुःखों का विलाप १०. खुशी (शादी) का संगीत ११. प्रशंसा १२. बदनामी, प्रतिशोध १३. चिन्ता १४. अगर, यदि १५. शेर का बहुवचन १६. अर्थ १७. साहसी १८. प्याला और सुराही १९. गोद, पहलू २०. खिला हुआ फूल २१. विदा के लिए २२. बुलबुल २३. प्रकट २४. वीरान, बियाबान २५. अदभुत सौन्दर्य २६. आश्चर्यचकित दृष्टि।

निगहे-गर्म से इक आग टपकती है, 'असद'
है चराग़ाँ[1] ख़सो-ख़ाशाके-गुलिस्ताँ[2] मुझ से

है वो ही बदमस्ती-ए-हर-ज़र्रः[3] का ख़ुद उज़्रख़्वाह[4]
जिसके जल्वे[5] से ज़मीं-ता-असमाँ[6] सरशार[7] है

आलम ग़ुबारे-वहशते-मनजूँ[8] है सर-बसर[9]
कब तक ख़याले-तुर्रः-ए-लैला[10] करे कोई

अफ़सुर्दगी[11] नहीं तरब अन्शा-ए इल्तिफ़ात[12]
हाँ दर्द बन के दिल मे मगर जा[13] करे कोई

रोने से, ऐ नदीम[14], मलामत[15] न कर मुझे
आखिर कभी तो उक़्दः-ए-दिल[16] वा[17] करे कोई

लख़्ते-जिगर[18] से है रगे-हर ख़ार[19], शाख़े-गुल[20]
ता चंद[21] बाग़बानी-ए-सहरा[22] करे कोई

नाकामी-ए-निगाह है बर्क़े-नाराज़ः सोज़[23]
तू वो नहीं कि तुझको तमाशा करे कोई

बेकारी-ए-जुनूँ[24] को है सर पीटने का शग़ल[25]
जब हाथ टूट जाएँ तो फिर क्या करे कोई

---

१. प्रकाशित २. बाग़ का कूड़ा-करकट ३. प्रत्येक कण की मस्ती ४. क्षमा-प्रार्थी ५. सौन्दर्य ६. धरती से आसमान तक ७. परिपूर्ण, मस्त ८. मजनूं के उन्माद की धूल ९. आदि से अन्त तक १०. लैला की जुल्फों की कल्पना ११. उदासी, खिन्नता १२. कृपा का आनंद पाने वाली १३. जगह १४. मित्र १५. भर्त्सना, निन्दा १६. दिल की गाँठ १७. खोले १८. कलेजे का टुकड़ा १९. हर काँटे की नस २०. गुलाब की डाली २१. कब तक २२. रेगिस्तान की बाग़बानी २३. दृष्टि की अवलोकन-शक्ति को भस्म कर देने वाली २४. उन्माद की बेकारी २५. जी बहलाने का काम-धंधा।

है ज़र्र: ज़र्र: तंगी-ए-जा[1] से ग़ुबारे-शौक़[2]
गर दाम[3] ये है, वुसअते-सहरा[4] शिकार है

बेपर्द: सू-ए-वादी-ए-मनजूँ[5] गुज़र न कर
हर ज़र्रे के नक़ाब में दिल बेक़रार है

ऐ अंदलीब[6], यक कफ़े-ख़स[7] बहरे-आशियाँ[8]
तूफ़ाने-आमद[9], आमदे-फ़स्ले-बहार[10] है

क़ुमरी[11], कफ़े-ख़ाकस्तरो-बुलबुल[12]-क़फ़से - रंग[13]
ऐ नाल:[14], निशाने-ज़िगरे-सोख़्त:[15] क्या है

मँजबूरी - ओ - दावा - ए - गिरफ़्तारीं-ए-उल्फ़त[16]
दस्ते-तहे-संग[17] आमद:[18], पैमाने-वफ़ा[19] है

नाकरद:[20] गुनाहों की भी हसरत[21] की मिले दाद
यारब, अगर इन करद:[22] गुनाहों की सज़ा है

मय से ग़रज़ निशात[23] है किस रूसियाह[24] को
इक गून:[25] बेख़ुदी मुझे दिन रात चाहिए

ख़िज़ाँ[26] क्या ? फ़स्ले-गुल[27] कहते हैं किसको ? कोई मौसम हो
वही हम हैं, क़फ़स[28] है और मातम बालो-पर[29] का है

---

१. स्थान की कमी २. शौक़ का ग़ुबार ३. फंदा, बंधन ४. रेगिस्तान का विस्तार ५. मजनूँ की घाटी की ओर ६. बुलबुल ७. ख़स का दाग़ ८. विशाल घोंसला ९. तूफ़ान का आगमन १०. बसंत का आगमन ११. एक प्रसिद्ध सफ़ेद पक्षी १२. जले हुए घोंसले और बुलबुल की राख के दाग़ १३. घोंसले का रंग १४. आर्त्तनाद, चीत्कार १५. जला हुआ १६. प्रेम में गिरफ़्तार होने की विवशता और दावा १७. पत्थर के नीचे दबा हाथ १८. आगमन १९. वफ़ा का वादा २०. जो किए नहीं गए २१. लालसा २२. किए हुए २३. आनंद, हर्ष, ख़ुशी २४. पापी २५. थोड़ी-सी २६. पतझड़ २७. बसंत २८. पिंजरा २९. परों का शोक।

न लाई शोख़ी - ए - अंदेशः[1], ताबे[2] - रंजे-नौमीदी[3]
कफ़े अफ़सोस मलना[4] अहदे - तजदीदे- तमन्ना[5] है

अपनी हस्ती ही से हो, जो कुछ हो
आगाही[6] गर नहीं, ग़फ़लत[7] ही सही

देखना क़िस्मत कि आप अपने पै रश्क[8] आ जाए है
मैं उसे देखूं, भला कब मुझसे देखा जाए है

हाथ धो[9] दिल से यही गर्मी गर अंदेशे[10] में है
आबगोनः[11] तुंदी ए- सहबा[12] से पिघला जाए है

शौक़ को यह लत कि हरदम नालः खींचे जाइये[13]
दिल की वो हालत कि दम लेने से घबरा जाए है

दूर चश्मे-बद[14] ! तेरी बज़्मे - तरब[15] से वाह वाह
नग़्मः[16] बन जाता है वाँ[17] गर नालः[18] मेरा जाए है

गरचे है तर्ज़े - तग़ाफ़ुल[19], पर्दःदारे राज़े - इश्क़[20]
पर हम ऐसे खोये जाते हैं कि वो पा जाए है

हो के आशिक़ वो परी-रुख़[21] और नाज़ुक बन गया
रंग खिलता जाए है, जितना कि उड़ता जाए है

---

१. आशका २. सामर्थ्य, सहन-शक्ति ३. नई आशा ४. अफ़सोस में हाथ मलना ५. नई अभिलाषा का वचन ६. चेतना ७. संज्ञाहीनता ८. ईर्ष्या ६. खो बैठना १०. चिंतन ११. शीशे का पात्र (दिल) १२. शराब की गर्मी १३. आर्त्तनाद करते रहिए १४. बुरी दृष्टि १५. आनन्द की महफ़िल १६. गीत १७. वहाँ १८. रुदन, विलाप १६. उपेक्षा का ढंग २०. प्रेम के रहस्य का आवरण २१. परी-जैसी सुंदर।

साया मेरा मुझ से मिस्ले - दूद[1] भागे है 'असद'
पास मुझ आतिश - बजाँ[2] के किस से ठहरा जाए है

नसयः- ओ-नक़्दे-दो आलम[3] की हक़ीक़त[4] मालूम
ले लिया मुझ से मेरी हिम्मते-आली[5] ने मुझे

कसरत आराई-ए-वहतद[6] है परस्तारी-ए-वहम[7]
कर दिया काफ़िर इन असनामे-ख़याली[8] ने मुझे

हवसे - गुल[9] का तसव्वुर[10] में भी खटका न रहा
अजब आराम दिया बे - परो - बाली[11] ने मुझे

चाक मत कर जैब[12] बे-अय्यामे-गुल[13]
कुछ उधर का भी इशारा चाहिए

मुनहसिर[14] मरने पै हो जिसकी उमीद
नाउमीदी उसकी देखा चाहिए

फिर कुछ उस उस दिल को बेक़रारी है
सीनः जोया - ए- ज़ख़्मे - कारी[15] है

चश्म[16] दल्लाले - जिन्से - रुस्वाई[17]
दिल ख़रीदारे - ज़ौके - ख़्वारी[18] है

---

१. धुएँ की तरह २. जिसके दिल में आग लगी हो ३. परलोक और इहलोक ४. वास्तविकता, सचाई ५. अत्यधिक साहसिकता ६. एकत्व की अनेकरूपता ७. भ्रम की पूजा ८. काल्पनिक प्रतिमाएँ ९. फूल की लालसा १०. कल्पना ११. पंखों के न होने १२. गिरेबान १३. बसंत के दिनों के बिना १४. निर्भर १५. गहरे घाव का ढूँढ़ने वाला १६. आँख १७. बदनामी के सामान का दलाल १८. अपमान के उन्माद का ख़रीदार।

दिल हवा-ए-ख़िरामे-नाज़[1] से फिर
महशरिस्ताने[2] - बेक़रारी है

सँभलने दे मुझे, ए नाउमीदी, क्या क़यामत है
कि दामाने-ख़याले-यार छूटा जाए है मुझ से

मुद्दत हुई है यार को महमाँ किए हुए
जोशे-क़दह[3] से बज़्म चराग़ाँ[4] किए हुए

फिर बज़अ्-ए-एह्तियात[5] से रुकने लगा है दम
बरसों हुए हैं चाक-गरेबाँ किए हुए

फिर गर्म नालाहा-ए-शररबार[6] है रफ़स[7]
मुद्दत हुई है सैरे-चराग़ाँ[8] किए हुए

फिर पुरसिशे[9]-जराहते[10] -दिल को चला है इश्क़
सामाने-सद हज़ार नमकदाँ[11] किए हुए

बाहमदिगर[12] हुए हैं दिलो-दीदः[13] फिर रक़ीब
नज़्ज़ारः-ओ-ख़याल का सामाँ किए हुए

दिल फिर तवाफ़े[14]-कू-ए-सलामत[15] को जाए है
पिन्दार[16] का सनमकदः[17] वीराँ किए हुए

---

१. प्रेमिका के चलने से प्रकंपित हवा २. क़यामत का मैदान ३. प्यालों की भरमार से ४. प्रकाशित ५. सावधानी की रीति ६. आग बरसाने वाले आर्त्तनाद में लीन ७. साँस ८. दीपोत्सव की सैर ९. हाल-चाल पूछना १०. घाव ११. लाखों नमकदान लिये हुए १२. आपस में १३. दिल और नज़र १४. परिक्रमा १५. वह गली जहाँ भर्त्सना मिलती है (प्रेमिका की गली) १६. अहम् १७. देवालय।

फिर शौक़ कर रहा है ख़रीदार की तलब[1]
अर्ज़े - मत: -ए -अक्लो - दिलो - जाँ[2] किए हुए

दौड़े हैं फिर हर एक गुलो - लाल: पर ख़याल
सद - गुल्सिताँ निगाह का सामाँ किए हुए

माँगे है फिर किसी को लबे-बाम[3] पर हवस[4]
ज़ुल्फ़े - सियाह रुख पै परेशाँ[5] किए हुए

चाहे है फिर किसी को मुक़ाबिल[6] में आरज़ू[7]
सुरमे से तेज़ दश्न: - ए-मिज़गाँ[8] किए हुए

इक नौबहारे - नाज़[9] को ताके है फिर निगाह
चेहरा फ़रोग़े - मय से गुलिस्ताँ[10] किए हुए

फिर जी में है कि दर पै किसी के पड़े रहें
सर ज़ेरे - बारे - मिन्नते - दरबाँ[11] किए हुए

जी ढूंढ़ता है फिर वही फ़ुरसत, कि रात दिन
बैठे रहें तसव्वुर - जानाँ[12] किए हुए

'ग़ालिब' हमें न छेड़ कि फिर जोशे-अश्क[13] से
बैठे हैं हम तहय्या - ए तूफ़ाँ[14] किए हुए

---

१. माँग २. बुद्धि, हृदय और प्राणों की सम्पत्ति का समर्पण ३. छत की मुंडेर पर ४. तीव्र लालसा ५. काली अलकों को चेहरे पर बिखेरे हुए ६. सामने ७. कामना ८. पलकों की कटारी ९. नवयौवन की बहार (माशूक़) १०. जिसका चेहरा शराब पीने से फूल की तरह हो गया है ११. दरबान के आभार के बोझ से झुका हुआ १२. प्रेयसी की कल्पना १३. आँसुओं का उबाल १४. तूफ़ान बरपा कर देने का दृढ़ निश्चय।

फ़रियाद की कोई लै[1] नहीं है
नालः पाबंदे - नै[2] नहीं है

हाँ, खाइयो मत फ़रेबे - हस्ती[3]
हर चंद[4] कहें कि है, नहीं है

हस्ती है न कुछ अदम[5] है 'ग़ालिब'
आख़िर तू क्या है, ऐ, नहीं है

बहुत दिनों में तग़ाफ़ुल[6] ने तेरे पैदा की
वो इक निगह कि बज़ाहिर[7] निगाह से कम है

देखना तक़रीर की लज़्ज़त[8] कि जो उसने कहा
मैंने यह जाना कि गोया[9] यह भी मेरे दिल में है

बस, हुजूमे-नाउमीदी[10] ख़ाक में मिल जाएगी
यह जो इक लज़्ज़त हमारी सइ-ए-बेहासिल[11] में है

घर में था क्या कि तेरा ग़म उसे ग़ारत[12] करता
वो जो रखते थे हम इक हसरते-तामीर[13] सो है

उग रहा है दरो-दीवार[14] पै सब्ज़ः[15] 'ग़ालिब'
हम बयाबाँ में हैं और घर में बहार आई है

---

१. स्वर विशेष, लय २. बाँसुरी का पाबंद ३. अस्तित्व का धोखा ४. यद्यपि, कितना ही ५. परलोक, अभाव, अनस्तित्व ६. उपेक्षा ७. प्रकटतः ८. आनंद ९. मानो १०. निराशाओं की भीड़ ११. व्यर्थ प्रयास १२. डुबोना, नष्ट करना १३. निर्माणेच्छा १४. दरवाज़ा और दीवार १५. घास, झाड़ी।

वो बादः - ए - शबानः[1] की सरमस्तियाँ कहाँ
उठिए बस अब कि लज़्ज़ते-ख़्वाबे-सहर[2] गई

देखो तो दिलफ़रेबी - ए - अंदाज़े - नक़्शे - पा
मौजे - ख़िरामे - यार भी क्या गुल कतर गई

हर बुल्हवस[3] ने हुस्न-परस्ती[4] शआर[5] की
अब आबरू - शेवः-ए - अहले - नज़र[6] गई

ज़िन्दगी अपनी जब इस शक्ल से गुज़री 'ग़ालिब'
हम भी क्या याद करेंगे कि ख़ुदा रखते थे

मिसाल यह मेरी कोशिश की है कि मुर्ग़े-असीर[7]
करे क़फ़स[8] में फ़राहम[9] ख़स आशियाँ[10] के लिए

बक़द्रे - शौक़[11] नहीं, ज़र्फ़े - तंगना - ए - ग़ज़ल[12]
कुछ और चाहिए वुसअत[13] मेरे बयाँ के लिए

कोई उम्मीद बर[14] नहीं आती
कोई सूरत नज़र नहीं आती

मौत का एक दिन मुअय्यन[15] है
नींद क्यों रात भर नहीं आती

आगे आती थी हाले-दिल[16] पै हँसी
अब किसी बात पर नहीं आती

---

१. रात की शराब २. सुबह के सपने का आनंद ३. व्यसनी ४. सौन्दर्य की पूजा ५. आदत बना ली ६. सौन्दर्य की परख करने वालों की इज़्ज़त ७. बंदी-पक्षी ८. पिंजरा ९. उपलब्ध १०. घोंसला, नीड़ ११. मात्र शौक़ १२. ग़ज़ल का पात्र छोटा है १३. विस्तार १४. प्रकट होना, दिखाई देना १५. निश्चित १६. दिल की स्थिति।

जानता हूँ सवाबे-ताअ़तो-ज़ुहद[1]
पर तबीअ़त इधर नहीं आती

है कुछ ऐसी ही बात, जो चुप हूँ
वर्ना क्या - बात - कर नहीं आती

हम वहाँ हैं जहाँ से हमको भी
कुछ हमारी ख़बर नहीं आती

न शोले में यह करिश्मा[2], न बर्क़[3] में यह अदा
कोई बताओ कि वो शोख़े-तुंद-ख़ूँ[4] क्या है ?

रंगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं क़ायल
जब आँख से ही न टपका, तो फिर लहू क्या है ?

वाइज़[5] न तुम पियो, न किसी को पिला सको
क्या बात है तुम्हारी शराबे-तहूर[6] की !

गो वाँ[7] नहीं पै वाँ के निकाले हुए तो हैं
काबे से इन बुतों को भी निस्बत[8] है दूर की

क्या फ़र्ज़[9] है कि सबको मिले एक-सा जवाब
आओ न हम भी सैर करें कोहे-तूर[10] की

नुक्तः-चीं[11] है, ग़मे-दिल[12] उसको सुनाए न बने
क्या बने बात जहाँ बात बनाए न बने

---

१. ईश्वर-पूजा और धार्मिक कर्म-कांड का पुण्य २. चमत्कार ३. बिजली ४. गुस्सैल ५. धर्मोपदेशक ६. वह पवित्र शराब जो स्वर्ग में मिलेगी ७. वहाँ ८. लगाव ९. ज़रूरी १०. वह पहाड़ जिस पर हज़रत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखा था ११. हर बात में दोष निकालने वाला, अर्थात् माशूक़ १२. दिल का ग़म, दुःख ।

कह सके कौन कि यह जल्वःगरी[१] किसकी है?
पर्दा छोड़ा है वो उसने कि उठाए न बने

नहीं निगार[२] को उल्फ़त, न हो, निगार तो है
रवानी-ए- रविशो - मस्ती-ए - अदा[३] कहिए

नहीं बहार को फ़ुरसत, न हो, बहार तो है
तरावते[४] - चमनो - ख़ूबी - ए- हवा कहिए

सफ़ीना[५] जब कि किनारे पै आ लगा 'ग़ालिब'
ख़ुदा से क्या सितमो-जौरे-नाख़ुदा[६] कहिए

हज़ारों ख़्वाहिशें[७] ऐसी कि हर ख़्वाहिश पै दम निकले
बहुत निकले मेरे अरमान[८], लेकिन फिर भी कम निकले

भरम खुल जाए ज़ालिम तेरे क़ामत[९] की दराज़ी[१०] का
अगर इस तुर्रः-ए-पुर पेचो-ख़म का पेचो-ख़म[११] निकले

हुई जिनसे तवक़्क़ो[१२] ख़स्तगी[१३] की दाद[१४] पाने की
वो हम से भी ज़ियादा ख़स्त-ए-तेग़े-सितम[१५] निकले

है हवा में शराब की तासीर
बादः नोशी[१६] है बाद-पैमाई[१७]

दहर[१८] जुज़[१९] जब्वः-ए-यकताई-ए-माशूक़[२०] नहीं
हम कहाँ होते, अगर हुस्न[२१] न होता ख़ुद-बीं[२२]

---

१. सौन्दर्य, सुन्दरता २. सुन्दरी ३. मंथर गति का सौन्दर्य एवं अदा की मस्ती ४. ठंडक ५. नाव ६. नाविक के ज़ोर-ज़ुल्म ७. अभिलाषा ८. इच्छा, लालसा। ९. क़द १०. ऊँचाई ११. बल खाए हुए बालों का बल १२. अपेक्षा १३. घायल अवस्था १४. प्रशंसा १५. अत्याचार की तलवार से घायल १६. शराब पीना १७. हवा खाना १८. काल, युग, समय १९. अलावा, सिवाय २०. प्रेमिका का अद्वितीय सौन्दर्य २१. सौन्दर्य २२. आत्मदर्शी, अहंकारी।

बेदिलीहा - ए-तमाशा, कि न इबरत[1] है, न ज़ौक[2]
बेकसीहा[3] - ए - तमन्ना, कि न दुनिया है, न दीं[4]

हर्ज़ः[5] है, नग़मः - ए - ज़ेरो - बमे[6] - हस्ती-ओ-अदम[7]
लग़बः[8] है, आईनः - ए - फ़र्क़े - जुनूनो - तमकीं[9]

नक्शः-ए-मानी[10] हमः[11] ख़मयाज़ः[12]-ए-अर्ज़े-सूरत[13]
सुख़ने - हक़[14] हमः पैमानः - ए ज़ौक़े तहसीं[15]

लाफ़े[16]-दानिश[17] ग़लत व नफ़्फ़ः-ए-इबादत[18] मालूम
दुर्दे[19] - यक साग़रे-ग़फ़लत[20] है, चे[21] दुनिया व चे दीं

• •

---

१. मानसिक दुःख २. आनंद ३. दुःख, कष्ट (बहुवचन) ४. धर्म ५. व्यर्थ ६. तलो-ऊपर, उथल-पुथल ७. अस्तित्व और अनस्तित्व ८. झूठ ९. गंभीरता १०. अर्थ ११. समस्त १२. परिणाम, अँगड़ाई १३. रूपानंद १४. अधिकार की बात १५. प्रशंसा १६. डींगें, शेख़ी १७. बुद्धिमत्ता १८. आराधना का लाभ १९. तलछट २०. असतर्कता की सुराही २१. चाहे।

ग़ालिब (जन्म 1797-निधन 1869) उर्दू कवियों में सर्वाधिक प्रमुख कवि के रूप में उभरकर सामने आते हैं। इसलिए यह उचित ही है कि भारत तथा अन्य देशों के ग़ैर-उर्दूभाषी पाठकों और प्रशंसकों को उनके जीवन और कृतित्व से अवगत कराया जाए।

ग़ालिब ने स्थापित काव्य-परंपरा का ही अनुसरण किया है तथा अपनी कल्पना-शक्ति, सूझ-बूझ और अनुभवों से उस परंपरा की अभिवृद्धि की। प्रारंभिक दौर में उनकी अभिव्यक्ति शक्तिशाली तो थी किंतु उसमें उर्दू और फ़ारसी के मुहावरे को नज़रअंदाज़ किया गया था। फिर ग़ालिब ने फ़ारसी में लिखना प्रारंभ किया और अंत में उर्दू पर उतर आए। उनके अन्तिम दौर की रचनाओं ने काफ़ी लोकप्रियता अर्जित की और आगे आनेवाली पीढ़ियों ने भी यह पाया कि ग़ालिब ने अपने अंतरतम विचारों को अत्यधिक प्रभावशाली अंदाज़ में अभिव्यक्त किया है।

प्रोफ़ेसर मुहम्मद मुजीब विशिष्ट साहित्य अध्येता के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण इतिहासज्ञ भी हैं। इसलिए वे इस विनिबंध में ग़ालिब के युग और ग़ालिब द्वारा प्रयुक्त काव्य-परंपरा का विशद चित्रण सफलतापूर्वक कर पाए हैं।

ISBN 81-260-1407-5

पच्चीस रुपये